भयानक
दुनिया
इमरान सीरीज

भयानक दुनिया की चालिसवीं भेंट

आकाश का बेटा

अनुवादक :

अशोक

सम्पादक :

देवी दयाल गम्भीर

इस अंक का मूल्य १।।)

दिसम्बर १९६१

विदेशों में मूल्य २)

प्रकाशन :

भयानक दुनिया, अशोक पब्लिकेशन

शोराब गेट, मेरठ।

श्री ... नावल स्टोर
... बाजार रोहतक

सम्पादकीय

प्रस्तुत अंक 'आकाश का बेटा' एक नए रूप में आपके सामने है—सबसे पहला नया रूप।

इस कहानी का अछूता प्लाट—बड़े ही रहस्यपूर्ण ढंग से कहानी शुरू होती है—साथ में रंगीनियां भी होती है और सनसनी भी—पाठक के मस्तिष्क में प्रथम पृष्ठ पढ़ते ही अपराधी सामने आ जाता है—परन्तु ज्यूं ज्यूं कहानी आगे बढ़ती है—इमरान के दिमाग की तरह पाठकों का दिमाग भी उलझता जाता है—उलझता रहता है—और एक समय ऐसा आता कि हम सभी को अपराधी समझने लगते है—मगर यह हमारी भूल होती है—अपराधी हमारी आंखों के सामने होता है—परन्तु हम उसे पहचान नही पाते—और यदि सबसे पहले पहचानता है तो वह है 'इमरान ···ऊंघती आंखों वाला इमरान···जो सदा ही एक नए रूप में आता है···यह ही नहीं—इमरान, सफदर, तनवीर और जूलिया के साथी भी किसी से कम नही रहे—'

खैर आप कहानी स्वयं ही पढ लीजिए—और हमें लिखिए—

आपका—

देवी दयाल गम्भीर

आज की ताज़ा खबर

शकूर बस्ती में आज भारत केसरी का स्वागत

नई दिल्ली आर्य समाज दयानन्द मार्ग (रेलवे रोड) शकूरबस्ती के छठे वार्षिक उत्सव पर कल अपरान्ह ३ बजे भारत केसरी मास्टर चन्दगीराम आर्यवीर व्यायाम पाठशाला का उद्घाटन करेंगे। इससे पूर्व मास्टर जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया जाएगा।

हस्तिनापुर व मखदूमपुर कार्तिक मेले।

मवाना। यहां से ७ मील दूर हस्तिनापुर तीर्थ क्षेत्र पर कार्तिक सुदी ११ से पूर्णिमा तक दिगम्बर श्वेताम्बरी जैन पंथियों के तीर्थ क्षेत्रीय वार्षिक मेले की चहल प्रारंभ हो चली है।

दूसरी ओर इसी अवसर पर मवाना से ७ मील की दूरी पर स्थित गंगा घाट मखदूमपुर पर किसान मेले की चहल पहल शुरू हो चुकी है।

शोरा न निकालने का मजदूरों द्वारा फैसला

रिवाड़ी। अखिल भारतीय शोरा मजदूर एसोसिएशन की ओर से कुम्हार धर्मशाला हिसार में एक सभा हुई जिसमें यह निर्णय किया गया। आगामी साल में कोई शोरा मजदूर शोरा नहीं निकालेगा।

गुड़ व खंडसारी मंडी कानून में।

बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश सरकार ने एक अध्यादेश निकालकर नियम २ मन्डी अधिनियम सन ६४ में संशोधन करके ४ नवम्बर ६१ के नियमों में गुड़, राव, शक्कर और खंडसारी को भी शामिल कर लिया है।

भयानक दुनिया
की

इनामी योजना

पाठकों के लिऐ नया आकर्षण

जनवरी १९७० से प्रारम्भ होने वाली हमारी
इनामी योजना के अन्तर्गत पाठकों को बिल्कुल
मुफ्त हर माह एक

कैमरा

उपहार स्वरूप भेंट किया जायेगा।

उपहार प्राप्त करने के लिए :—

आपको हमारे प्रकाशन द्वारा प्रकाशित "भयानक दुनिया" में रखे गये कूपन पर अपना नाम और पूरा पता लिखकर हमें भेजना होगा।

फिर हम सभी प्राप्त कूपनों को लाटरी द्वारा चुनाव करेंगे—पुरस्कृत कूपन पर लिखे पते के अनुसार हम आपको एक कैमरा उपहार स्वरूप रजिस्ट्री से भेज देंगे।

पुरुस्कार प्राप्त करने वाले का नाम पूरे पते सहित अगले माह के अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

कूपन भेजने का पता :—

भयानक दुनिया, अशोक पब्लिकेशन

शोराब गेट, मेरठ।

इज़हार असर द्वारा लिखित जासूस उपन्यासी

'पत्थर की लाश'

(लायब्रेरी संस्करण)

एक ऐसा उपन्यास जिसे शुरु करने के बाद समाप्त किये बगैर चैन नहीं मिलेगा !

एक ऐसी कृति जो बरसों तक न भुलाई जा सकेगी।

जासूसी और रोमाँस से भरपूर कहानी

'पत्थर की लाश'

शीघ्र ही मंगवाईये

मूल्य सजिल्द केवल छः रुपये

सफेद कागज — — बढ़िया छपाई

आंखों को चकाचौंध कर देने वाला टाईटिल।

पता :—

संसार पब्लिकेशन
शोराब गेट, मेरठ।

हिन्दी
उर्दू
भाषा में

कानूनी पंजा,

मेरठ

प्रति मास कर्नल विनोद, कैप्टिन हमीद केसनसनी पूर्ण

उपन्यास प्रकाशित करता है।

स्थाई लेखक :—एन० सफी

पृष्ठ——१४४

मूल्य——१·५०

प्रकाशक :

'कानूनी पंजा' संसार पब्लिकेशन

सोराब गेट मेरठ।

हमारे यहां उपलब्ध पाकेट बुक्स

१	सिलवटें	इब्ने कैफी	......प्रतियां
२	चिराग और रोशनी	कमल शुक्ल	......प्रतियां
३	जानवर	दत्त भारती	...... ”
४	पराई आंखें	आदिल रशीद	...... ”
५	बस अड्डा	प्रेम बाजपेयी	...... ”
६	दो किनारे	दत्त भारती	...... ”
७	पांव और फिसलन	प्रेम बाजपेयी	...... ”
८	सुलगती चिता	साधना प्रतापी	...... ”
९	आग और अमृत	”	...... ”
१०	गुनाह की तस्वीरें	सोमनाथ अकेला	...... ”
११	यादें	नरेन्द्र शर्मा	...... ”
१२	पतवार	जमील अन्जुम	...... ”
१३	कल्पना	दत्त भारती	...... ”
१४	चरित्र के न्यायी	”	...... ”
१५	सफेद मूर्ति (जासूसी)	जमील अन्जुम	...... ”
१६	पथरीली लाशें	”	...... ”
१७	मैडम सोसी	”	...... ”
१८	लाशों का शहर	”	...... ”
१९	अपालू की बेटी	इब्ने कैफी	...... ”
२०	लाशों के खन्डर	”	...... ”

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये।

प्रकाशन :

संगम पाकेट बुक्स

शोराब गेट मेरठ।

पाठकों के लिये इब्ने कैफी की अनमोल भेंट।

स्पेशल सीरीज, के अन्तर्गत

प्रकाशित किया जा रहा है।

धरती के देवता

पृष्ठ संख्या—३००

मूल्य——तीन रुपये

सिंगही और अलफांसे की कर्नल विनोद से

जबरदस्त टक्कर

प्रकाशन तिथी की प्रतीक्षा कीजिये।

प्रकाशक :

स्पेशल सीरीज, अशोक पब्लिकेशन

शोराब गेट, मेरठ।

इमरान का सनसनी पूर्ण कारनामा

आकाश का बेटा

लेखक

हमीद इकबाल

प्रकाशन :

भयानक, दुनिया अशोक पब्लिकेशन

सोराब गेट, मेरठ।

सर्वाधिकार :— प्रकाशकाधीन

मूल्य—एक रुपया पचास पैसे

१/५०

प्रकाशन स्थान :

भयानक दुनिया, अशोक पब्लिकेशन

शोराब गेट, मेरठ।

उपन्यास :— आकाश का बेटा

लेखक :— हमीद इकबाल

प्रकाशक :— देवी दयाल गम्भीर

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक देवी दयाल गम्भीर ने भयानक दुनिया (हिन्दी) के लिए दयाल प्रेस मेरठ में छपवाकर अशोक पब्लिकेशन, शोराब गेट, मेरठ से प्रकाशित किया।

इस उपन्यास के पात्र तथा स्थान आदि कल्पित हैं, किसी संयोग के लिए प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा लेखक पर कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

... बाजार, रोहतक

इमरान का सनसनी पूर्ण कारनामा

आकाश का बेटा

अनुवादक : अशोक

★ ★ ★

वह एक बहुत बड़ा हाल था।

लम्बाई पच्चीस गज के लगभग थी, किन्तु उसकी चौड़ाई कुछ कम थी, फिर भी अट्ठारह उन्नीस गज से कम तो किसी तरह नहीं रही होगी।

हाल के आखिरी कोने में एक बड़ा सा चबूतरा बना हुआ था—और उस चबूतरे पर बिल्कुल बीच में एक व्यक्ति बैठा हुआ था—लम्बी घनी और काली दाढ़ी वाला !

उसकी आयु लगभग चालीस वर्ष थी। शरीर लम्बा तकड़ा—वह

काफी हृष्ट पुष्ठ और स्वस्थ व्यक्ति था। छाती का फैलाव पैन्तिस इन्च से किसी तरह कम नहीं रहा होगा। शरीर की तरह उसका चेहरा भी खूब भरा भरा था। देखने में चेहरा काफी भयानक रखता था। उसकी आंखे बहुत बड़ी बड़ी और लाल थीं—किसी खूनी व्यक्ति की आंखों की तरह ल ल—और भयानक।

उसके सर पर बड़े बड़े बाल थे। साधुओं की तरह। ललाट बहुत अधिक खुला हुआ था। भवें घनी और आपस में मिली हुई थीं। और नाक आगे से फूली हुई थी।

शरीर पर गहरे रंग का एक लम्बा सा ढीला ढाला कपड़ा पहने वह आलती पालती मारे बैठा था। उसके पीछे दो अत्यत सुन्दर और युवा लड़कियां खड़ी थीं।

उनके शरीर पर गेरवें रंग के लहंगे और ढीले ढाले कुरते थे—और हाथो में मोर के परों से बने हुए पंखे—जिनसे वह चबूतरे पर बैठे हुए व्यक्ति को हवा झल रही थीं।

लम्बी लम्बी जटाओं वाले गम्भीर साधु के चारों ओर सुगंधित धुएं के चकराते हुए दायरे ऊंचे होते हुए छत की ओर जा रहे थे। पूरा हाल इस समय सुगन्ध से महक रहा था।

चबूतरे के सामने दो पंक्तियां लगी हुई थीं। एक पंक्ति में पुरूष नजर आ रहे थे और दूसरी में स्त्रियां।

उनके शरीर पर ढीले ढाले कुरते थे, परन्तु उन कुरतों की रंगत सफेद थी और वे बहुत ही महीन और पतले थे।

'और उन्हीं सफेद और बारीक मलमल के कुरतों से अपने नग्न शरीर को छिपाये वे सब आदर भाव से सर झुकाए बैठे थे। एक विचित्र बात और थी—और वह यह कि पंक्तियों में बैठे हुए पुरुषों और स्त्रियों में से किसी एक का चेहरा भी ऐसा नहीं था जो नजर आजाता। सब के चेहरे नकाबों से ढके हुए थे—काले और लाल नकाबों से—और यह

नकाबें पहचान कर रही थी कि कौन स्त्रियां हैं और कौन पुरुष !

अचानक चबूतरे पर बैठा हुआ साधु खड़ा हो गया—उसके साथ ही हाल में मौजूद स्त्रियां और पुरुष भी खड़े हो गए।

साधु की निगाहें उनकी ओर उठी हुई थीं।

और वह सब फर्श पर नजरे गाड़े खड़े थे।

साधु के होंठो पर मुस्कान नृत्य करने लगी। फिर उसने एक विचित्र सा गीत अपनी भारी और भौंडी आवाज में शुरु कर दिया—यह कोई धार्मिक गान था—जिसमें पवित्र आत्मा का शब्द बार २ प्रयोग हो रहा था—गीत की कुछ पंक्तियां उसने अकेले गाई—फिर उसके सीधे हाथ में एक विशेष प्रकार की हरकत पैदा हुई—और उसकी पुश्त पर दाये बाये खड़ी लड़कियां भी उसके गीत में सम्मिलित हो गई—फिर—तीसरी हरकत के साथ ही हाल में मौजूद सभी स्त्रियां और पुरुष भी गाने लगे।

कुछ देर तक गीत धीमी आवाजों में गाया जाता रहा—फिर आवाजे ऊचीं होती चली गई—एक विचित्र सा आवेश था गाने के अन्दाज में।

कुछ मिनटों बाद गाना अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। अब वह गाने के साथ साथ अपने हाथ भी चला रहे थे। आहिस्ता आहिस्ता उनके शरीर भी हरकत करने लगे—और फिर—वह हरकत बढ़ते बढ़ते एक नृत्य में परिवर्तित हो गई !

चबूतरे पर खड़ा साधु और उसके पीछे खड़ी हुई लड़कियां खामोश हो गई थीं—केवल नीचे खड़े जन उत्साहित स्वरों में गा रहे थे। नाच रहे थे। ऊचे स्वरों में जोर जोर से चीख रहे थे—और उछल कूद रहे थे।

उनकी पंक्तियां कभी की टूट चुकी थी। तेजी से चकराते समय उनके बारीक सफेद कपड़े बार बार ऊपर उठ जाते थे—किन्तु इस

समय उन की नजरों में इसका कोई भी महत्व नहीं रह गया था। वह तो मानों हर बात से दूर बस अपनी ही धुन में व्यस्त थे।

लम्बी लम्बी जटाओं और काली घनी दाढ़ी वाला हृष्ट पुष्ट व्यक्ति उनकी इस हालत को बड़े ध्यान पूर्वक अपनी लाल लाल आंखों से देख रहा था। उसके मोटे और मूछों से ढके होठों पर शैतानी मुस्कान नृत्य कर रही थी। और चेहरे पर एक विचित्र प्रकार की रहस्यमय रेखाए फैली हुई थीं।

फिर वह नृशसंता पूर्ण नृत्य अपने क्लाईमैक्स पर पहुचं गया। गीत के बोल चीख व पुकार की आवाजों में बदल गए—लगता था मानों इस बड़े हाल में मौजुद स्त्रियों और पुरूषों में कोई भी अपने होश में नहीं था। सभी पागल और नृशंस नजर आ रहे थे।

कई मिनट गुजर गए।

नृत्य में तुफानी अन्दाज बराबर मौजूद था।

और फिर अचानक—चबूतरे पर खड़े हुए साधू ने अपना सीधा हाथ ऊंचा किया।

हाल में जगमगाती रोशनियाँ बुझाकर साधारण रोशनियों के बल्ब रोशन का दिए गए। नृत्य समाप्त हो गया—चीख व पुकार की आवाजे रुक गई—और काले लाल रंग की नकाबे बड़ी तेजी से एक दूसरे पर झपट पड़ी।

केवल कुछ ही क्षण—और फिर रोशनियाँ—बिल्कुल ही खत्म हो गई। हाल में अब गहन अन्धकार का राज्य था और काली लाल नकाबे बिना किसी भेद भाव के एक दूसरे को अपने अन्दर समा लेना चाह रही थी।

कौन जाने इस हगांमे में कितनी बेटिया बापों की और कितनी बहने भाईयों की बाहों में पड़ी गुनाहो और शैतानियत की इस दलदल में धंसी चली जा रही थी।

नकाब के पीछे किसका चेहरा था, यह कोई नहीं जानता था—और शायद जानना चाहता भी नहीं था ।

★ ★ ★

कुछ देर तक हाल इसी गहन अन्धकार में डूबा रहा फिर रोशनियाँ वापिस आगई ।

एक दूसरे में उलझी हुई नकाबे अलग अलग होती जा रही थी।

और अब वे सब बड़े ही शांत नजर आ रहे थे ।

कुछ क्षणों तक हाल में गहरा सन्नाटा रहा फिर साधु की भारी आवाज सुनाई दी । वह उस दिन अर्थात आज की सभा समाप्त करने का आदेश दे रहा था ।

आदेश सुनते ही वे सब उस चबूतरे की ओर झपट पड़े जिसपर वह शैतान साधू खड़ा था । उसके दोनों हाथ आगे की ओर फैले हुए थे और वे सब के सब उसे बड़े ही आदर और श्रद्धा भाव से चूम रहे थे ।

कई मिनट तक हाथ चूमने का सिलसिला चलता रहा फिर वे लोग वहां से विदा होने लगे एक एक करके उस दरवाजे से गुजरने लगे जो किसी दूसरे कमरे में खुलता था कुछ क्षणों परान्त कमरा खाली हो गया।

केवल चार जन वहां रह गए थे—।

शैतानी सूरत वाला रहस्यमय साधू उसकी पुश्त पर खड़ी हुई दोनों लड़कियां और एक व्यक्ति और था जिसके चेहरे पर काले रंग की नकाब चढ़ी हुई थी ।

सहसा खामोशी में साधू की भारी और गूंजदार आवाज गूंजी ।

'कौन हो तुम—? अब तक यहां किस लिए मौजूद हो ?'

'आकाश के बेटे पर जय हो ।'

काले नकाब वाले ने घुटनों के बल झुकते हुए कहा ।

'मैं आपके हुजूर में एक फरयाद पेश करना चाहता हूं ।'

'हुम !'

साधु ने उसे तेज नजरों से देखते हुए हुंकारा भरा—कुछ क्षणों तक उसे देखता रहा—फिर बोला ।

'क्या कहना चाहते हो ?'

'फरयाद है आकाश के बेटे । अब तेरे भक्तों में भी गलत प्रकार के लोग सम्मिलित होने लगे हैं जो तेरे पुजारियों को तरह तरह से धमका कर अपनी वासना का निशाना बनाने पर तुले हुए है ।'

'क्या मतलब ?'

साधु के कंठ से गुर्राता स्वर निकला

'क्या तुम साफ साफ अपनी शिकायत ब्यान नहीं कर सकते ?'

'आकाश के पवित्र बेटे की सेवा में यह भक्त इसी लिए मौजुद है ।'

काले नकाब वाला झुकता हुआ बोला ।

'कि अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विषय में बता सके ।'

फिर जरा रुक कर उसने कहा ।

'तेरा यह भक्त हाई कोर्ट का प्रसिद्ध वकील इकबाल फारुकी है । तेरे भक्तों में सम्मिलित हुए अभी बहुत थोड़ा समय गुजरा है । इसलिये

'बेकार बातें नहीं—'

साधु हाथ उठाकर बोला ।

'हमारे पास समय बहुत कम है ।'

'मुझे मालूम है आकाश के पवित्र बेटे—'उसने कहा ।

'और अब सुन कि परसों शाम को तेरे इस सेवक को टेलीफोन पर बड़ी सख्त धमकी दी गई है ।'

'धमकी—किसने दी है ?'

'तेरे ही किसी भक्त ने दी है आकाश के महान पुत्र !'

वह कहता रहा ।

'उसने कहा है कि यदि एक सप्ताह के अन्दर अन्दर मैंने उसे बीस हजार की रकम नहीं दी तो वह पुलिस को सूचित करदेगा कि मेरा सम्बन्ध इस संस्था से है।'

'परन्तु—क्या यह कोई अपराध है ?'

'नहीं आकाश के पवित्र बेटे ! किन्तु हमारी सभाएं, हमारे उद्देश्य, और हमारे नियम,—संसार इन्हे अच्छा नहीं मानता पुलिस को यदि जरा भी हवा लग गई कि तेरे सम्मुख प्रस्तुत हो कर यहां जमा होकर हम क्या कुछ करते हैं—तो विश्वास करो—तो हम सब के सब ही लोहे की छड़ों के पीछे नजर आंएगे !'

'हां— जब तक आकाश के बेटे का लाया हुआ धर्म मजबूत और उस की शिक्षाएं फैल नहीं जाती यह खतरा बराबर मौजूद रहेगा ।'

'बिल्कुल ठीक है अब स्वयं सोचो यदि वह अपनी धमकी का प्रयोग भी कर बैठा तो हमारा·· और हम सबके साथ स्वयं तेरा क्या परिणाम होगा तू जो आकाश का महान पुत्र है जो केवल इस लिए धरती पर आया है ताकि संसार में एक नए धर्म को फैलाए क्या तू ऐसे तुच्छ जनों को सहन कर सकता है !'

'कभी नहीं—मुझे बताओ वह कौन है जो मेरे सारे परिश्रम को नष्ट करदेना चाहता है ?'

साधु ने फारुकी को घूरते हुए कहा ।

उसकी लाल लाल आंखे इस समय अंगारो की तरह दहक रही थी और क्रोध ने उसके काले चेहरे को पहले से कहीं अधिक भयानक बना दिया था ।

'राजेश वह कमीना तेरे परिश्रम को नष्ट करने पर तुला है ।'

'तुम्हें पूर्ण विश्वास है ?'

'हां' आकाश के बेटे—यदि ऐसा न होता तो उसने मुझसे यह कहा होता कि उसकी इस हरकत का जिक्र मैं तुझसे या तेरी संस्था के किसी जन से न करु—'

'अच्छा मैं उसे देखूंगा यदि वह पापी है तो उसे अपने पापों का दंड हर हालत में भुगतना पड़ेगा—'

'जिन्दा बाद आकाश के महान बेटे—'फारुकी दोबारा झुका ।

'ईश्वर सदैव ही तेरा सहायक रहे ।'

'फिर आकाश के उस महान पुत्र के चरणों पर गिर कर फारुकी ने उसके पैरों को चूमा हाथों को चूमा और उसका इशारा पाकर द्वार की ओर बढ़ गया ।

उसके निकल जाने के बाद साधु ने तख्त की निचली सतह पर लगे हुए किसी बटन पर उगंली रखी और द्वार आप ही आप बंद हो गया ।'

फारुकी ने दूसरे कमरे में जाकर सफेद मलमल का ढीला ढाला कुरता उतारा और हैंगर पर लटका कर अपना अंग्रेजी सूट पहनने लगा । इस काम में उसे कुछ मिनटों से अधिक नहीं लगे थे ।

फिर वह बराबर वाले कमरे में प्रविष्ट हो गया उस कमरे में दीवारों पर लगे शीशों में फारुकी ने अपने बाल ठीक किये और सिग्रेट सुलगाकर कमरे से बाहर निकल गया ।

फिर कुछ मिन्ट बाद ही वह उस इमारत से बाहर निकल रहा था ।

बाहर पहुंचकर वह पैदल ही एक ओर चलने लगा—।

पन्द्रह मिन्ट बाद वह चौराहे पर पहुंच गया । टैक्सी स्टैन्ड वहां से अधिक दूर नहीं था । वहां जाकर उसने किराये की एक गाड़ी पकड़ी और अपने निवास स्थान की ओर चल पड़ा ।

★★★

ड्राईंग रूम के सजे हुए कमरे में इस समय चार जन मौजूद थे।

तीन पुरुष थे और एक स्त्री काफी शानदार स्त्री थी जवान और सुन्दर विशेषकर उसके शरीर की सुन्दरता का ज़बाब नहीं था उस पर एक नजर डालने के बाद यह असम्भव था कि नजरे उसपर दोबारा न उठे मानों भगवान ने उसका शरीर किसी खास साचे में ढाल कर तैयार किया था।

कमरे में मौजूद तीनो व्यक्ति विदेशी थे। तीनों जवान थे जिनकी आंखों में उनके बुद्धिमान होने की एक खास चमक थी और जिनके चेहरे उनके दृढ विश्वास होने की घोषणा कर रहे थे।

अपने स्थानों पर बैठे वह बार बार पहलू बदल रहे थे। दुधिया रंग की सलवाना भी कुछ व्याकुल नजर आ रही थी परन्तु उन तीनों की अपेक्षा उसका चेहरा काफी शांत था।

सहसा ही उन में से एक ने कहा।

'बास अभी तक नहीं आया!'

'हां!'

दूसरा बोला।

'मैं भी यही सोच रहा हूं।'

'उसे अब तक हर हालत में पहुंच जाना चाहिये था।'

तीसरे ने घड़ी देखते हुए कहा।

'साढ़े बारह बजने वाले है।'

'कहीं ऐसा तो नहीं कि—'

दूसरे ने अपना सन्देह प्रकट किया।

'वह सिरे से गोल ही होजाए!'

'शायद!'

तीसरे ने मद्धम स्वर में कहा।

फिर वह सलवाना की ओर देखने लगा।

उसके दोनों साथियों की निगाहें भी उसकी ओर उठ गईं।

'वह आएगा।'

सलवाना के होठों से खनकता हुआ स्वर निकला।

'आज तक ऐसा नहीं हुआ कि उसने आने का वायदा किया हो और न आया हो।'

'तुम्हे विश्वास है?'

पहले ने पूछा।

'हां वह झूठ नहीं बोलता तुम उसे मुझसे ज्यादा नहीं जानते!'

'यह ठीक है।'

तीसरा शरारती मुस्कान के साथ बोला।

'मिस सलवाना से अधिक बास के निकट कोई नहीं है – इसलिए उनसे अधिक उन्हें कोई नही समझ सकता—'

उसका स्वर अर्थपूर्ण था।

उसके साथियों के होठों पर मुस्कराहटें फैल गईं—और सलवाना ने उसे घूरते हुऐ कहा

'क्या मतलब—मैं समझी नहीं'

'तुम्हें बास को समझने से ही कब समय मिलता है जो कुछ और समझोगी—'

तीसरे ने कहा फिर एक ठंडी आह भरकर उसने कहा

'काश कि तुम हमें भी समझने को कोशिश कर सकती!'

'शट—अप—'

सलवाना किसी बिफरी हुई शेरनी की तरह गुर्राई। उसका दूधिया चेहरा क्रोध के कारण लाल हो रहा था—और उसकी मदभरी आंखें मानो शोले बरसा रही थीं।

वह उन्हें क्रोधित दृष्टि से घूरती हुई बोली

'मैं बास से इस बदतमीजी की शिकायत करूंगी—तुम्हें इस छिछोरापन के लिए बुरी तरह पछताना पड़ेगा'

और यह सुनकर उन सबके चेहरे उतर गए। उनके रंग फीके पड़ गए। उन्हें तो मानो सांप सूंघ गया हो—ऐसा ही लगा था—मानों सलवाना ने उन्हे मौत की धमकी दे दी थी!

कुछ क्षण कमरे में खामोशी रही

फिर तीसरे आदमी ने कहा

'मम ''मैं क्षमा चाहता हूं मिस सलवाना—प्लीज—मैं तुम्हारी आभारी हूगां यदि तुम बौस से कुछ भी नहीं कहोगी!'

'हम भी क्षमा चाहते हैं!'

पहले और दूसरे ने एक साथ कहा

'हमारा ध्यय तुम्हारा अपमान करना बिल्कुल नहीं था—बात केवल मजाक की थी—!'

नहीं—मैं पहले भी इस प्रकार की बातें सुन चुकी हूं!'

सलवाना निचला होंठ दांतो में दबाकर बोली।

'हम क्षमा चाहते हैं!'

तीसरे ने कहा

हमारा विचार था तुम इन बातों को अधिक महत्व नहीं दोगी!'

ठीक उसी क्षण द्वार के बाहर से भारी कदमों की आवाज सुनाई दी!

उनकी आंखो से भय और घबराहट झांकने लगा

पहले ने मद्धम स्वरों में किसी भिखारी की तरह कहा

'प्लीज मिस सलवाना ! ईश्वर के लिए बौस से मत कहना !'

पूर्व इसके कि सलवाना कुछ कहती—कमरे का दरवाजा खुला—और गहरा सुरमई सूट पहने एक घुटे हुए शरीर का मालिक जवान आदमी अन्दर प्रविष्ट हुआ ।

वे चारों उसे देखते ही खड़े हो गए थे ।

'बैठो !' उसने स्वयं बैठते हुए कहा ।

वह बैठ गए । गर्दने झुका कर—आदर भाव से— !'

कुछ क्षण बाद वह बोला

'मुझे दुख है कि तुम लोगों को कुछ अधिक प्रतीक्षा करना पड़ी । दरअसल रास्ते में कार खराब हो गई थी !'

'कोई बात नहीं बौस !'

सलवाना ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा ।

'हम इससे अधिक प्रतीक्षा कर सकते है ।'

फिर उनमें वह वार्तालाप होने लगी जिसके लिए वह सब वहाँ इकट्ठा थे ।

कुछ देर बाद बौस ने सलवाना से पूछा ।

'तुम्हारे पास क्या खबर है ?'

'साधारण खबर नहीं है बौस—!'

उसने मुस्कारते हुए कहा—

'अब तक की सारी खबरों पर भारी पड़ेगी' उसके तीनों साथियों और बौस की निगाहें उसकी ओर उठ गई—सलवाना ने कहा ।

'विदेश मन्त्री परसों अपनी यात्रा पर जा रहे हैं ।'

'ओह—'

बौस के होंठ सीटी बजाने अन्दाज में सुकड़ गए ।

कुछ क्षणों बाद वह बोला—

'बहुत ही महत्वपूर्ण खबर है। साथ ही चिन्ता जनक भी।'

'अवश्य बौस।'

सलवाना बड़े ही चिन्तित स्वर में बोली।

'यदि विदेश मन्त्री बिगड़े हुए सम्बन्ध ठीक करने में सफल हो गए तो उसमें हमें हानि पहुंचेगी।'

'मैं भी यह ही सोच रहा हूँ—क्या ऐसा नहीं हो सकता कि विदेश मन्त्री का प्रोग्राम बदल दिया जाए।'

'किस तरह सम्भव है बौस—उन्हे सरकार भेज रही है—सारे काम पूरे हो चुके हैं।'

'हुम—'

बौस हुकांरा भरकर सोचने लगा।

'क्या यह सम्भव नहीं सर—कि विदेश मन्त्री का किस्सा तमाम कर दिया जाए।'

उसके आधीनों में से एक ने परामर्श दिया।

'इससे क्या होगा—।'

बौस ने उसे घूरते हुए कहा—

'क्या विदेश मन्त्री के साथ ही यह खतरा भी सदा के लिए खत्म हो जाएगा।'

'कम से कम कुछ दिन के लिए मामला अवश्य टल जाएगा—।'

सलवाना ने कहा—

'उसके बाद हो सकता है कोई ऐसा व्यक्ति विदेश मन्त्री नियुक्त कर दिया जाए जो हमारे लिए लाभदायक सिध्द हो।'

'मैं समझा नहीं।'

'यह आवश्यक नहीं कि मौजूदा विदेश मन्त्री के बाद जिस व्यक्ति का चुनाव हो वह भी इतना खुर्रान्ट और बंजर हो जितना यह है।'

उसका स्वर अर्थपूर्ण था।

हो सकता है तुम्हारा यह विचार गलत ही निकले।

'हो सकता है मेरा विचार ठीक ही निकले—वह बड़े विश्वास के साथ बोली।

'ऐसी सूरत में यह मेरी जिम्मेदारी है कि उसे अपनी मन मानी नहीं करने दूंगी ''

'मुश्किल है ! सरकार इस मामले में बहुत गम्भीर है !'

'चिन्ता मत कीजिए —!'

'हुम—!'

बोस खामोश होकर कुछ सोचने लगा।

कुछ क्षणों पश्चात वह बोला।

'अच्छी बात है। मैं माने लेता हूं परन्तु विदेश मन्त्री को कत्ल करने की जिम्मेदारी कौन अपने सर लेगा !'

वह उन तीनों को घूरने लगा—जो बड़ी खामोशी से यह वार्तालाप सुन रहे थे। कुछ देर बाद वह बोला ?

'मेरा विचार है-- आर्थर तुम यह काम भली भांति कर सकोगे !'

'यस बौस !।

'बस तो यह तुम्हारी जिम्मेदारी ठहरी तुम्हें क्या करना है —कैसे करना है–यह सोचना तुम्हारा काम हैं। बस इस बात का विशेष ध्यान रखना कि तुम लोगों की नजरों में न आने पाये।

'मैं समझता हूं बौस आप सन्तुष्ट रहिए।'

'ठीक हैं—!'

बौस ने सन्तोष का सांस लिया।

कुछ क्षणो पश्चात वह दोबारा बोला।

'आज एक और बात भी जाहिर हुई है।'

'वह क्या ?' सलताना ने पूछा।

'बताता हूं !'

बौस ने जेब टटोलते हुए कहा। फिर सिग्रेट का पैकिट निकालकर उसने एक सिग्रेट चुनी और फिर उसे सुलगाकर एक लम्बा कश लगाया तीनो पुरुषों और सलवाना की निगाहें उस पर केंद्रित थी।

● ● ●

यह घटना उससे अगली रात्रि की थी।

देश के प्रसिद्ध फिल्मी सितारे होटल इम्पीरियल के सुन्दर लान में एक शानदार वैराईटी प्रोग्राम करने वाले थे। यह प्रोग्राम रेड क्रास की ओर से अैरन्ज (orrange) किया जा रहा था और विदेश मन्त्री इस में चीफ गैस्ट के रुप से निमन्त्रित थे।

कल उन्हें अपने दौर पर रवाना होना था। वह बहुत अधिक व्यस्त थे किन्तु फिर भी उन्हें लोगों की इच्छा और प्रार्थना पर यहाँ आने के लिए समय निकालना ही पड़ा था।

और अब केवल यहां पर उन्ही की प्रतीक्षा थी प्रोग्राम का समय हो चुका था।

अचानक किसी ओर से एक आवाज सुनाई दी।

विदेश मन्त्री पधार रहें हैं।'

रेड क्रास का सैक्रेट्री और प्रोग्राम का प्रबंधक डाक्टर अहमर तेजी से होटल के प्रवेश द्वारा की ओर दौड़ा। उसके साथ कुछ और लोग भी थे। जो विदेश मन्त्री का स्वागत करने जा रहे थे।

अपने अपने स्थानों पर बैठे तमाशाई गर्दने मोड़ मोड़ कर अपने पीछे नजरें दौड़ा रहे थे।

फिर उन्होने विदेश मन्त्री को देखा। वह लोगो की भीड़ में चलते

हुए इसी ओर आ रहे थे।

जनता को अपने विदेश मन्त्री से बड़ा ही प्रेम था। उनके दिलों में इनके लिए बड़ा सम्मान था।

उन्हें देखते ही लोगों ने जिन्दा बाद के नारे लगाने शुरू कर दिए।

विदेश मन्त्री के होठों पर बड़ी ही मीठी मुस्कान फैली हुई थी !

सीधा हाथ हिलाते हुए, लोगों के नारों का उत्तर देते हुए वह स्टेज की ओर बढ़ रहे थे। जिसके निकट दाएं ओर महमानों के बैठने का स्थान था।

अचानक वहां एक घटना हुई।

लान पर पिस्तोल से होने वाले धमाके की भयानक आवाज सुनाई दी—और विदेश मन्त्री के बराबर चलने वाला डाक्टर अहमर एक तेज चीख मारकर लान पर ढेर होगया—उसके तुरन्त बाद ही एक दूसरा धमाका हुआ था—विदेश मन्त्री का भाग्य ही सीधा था—अन्यथा गोली उनके बराबर से गुजरने के बजाए उनकी खोपड़ी भी तोड़ सकती थी !

फिर इससे पहले कि तीसरा धमाका होता—किसी ने विदेश मन्त्री की टागं पकड़ कर उन्हें फुरती से घसीट लिया।

वह सभंलने की कोशिश करते हुए लान पर गिर पड़े—और फिर—एक हगांमा खड़ा हो गया—लोग बोखलाए हुए अन्दाज में भाग पड़े विदेश— मन्त्री और वैराईटी शो की चिन्ता किये बिना।

★ ★ ★

इस घटना के ठीक आधे घन्टे बाद इमरान ने सर मुलतान का फोन रिसीव किया !

विदेश मन्त्री पर होने वाले घातक प्रहार के विषय में बताने के बाद उन्होंने कहा था।

यह संयोग ही था कि फैयाज वहां मोजूद था—और उस समय विदेश मन्त्री के पीछे चल रहा था—और यदि सच पूछो तो उसके मस्तिष्क ने ही उनकी जान बचाली–यदि अचानक उसने टागं पकड़ कर न घसीट ली होती—तो तीसरी गोली ने उनका अन्त ही कर दिया होता !

'अवश्य यही हुआ होता !' इमरान ने कहा

'हां ! इस हमले के पीछे किसी गहरे षडयन्त्र का हाथ मालूम होता है'

'मैं आपसे सहमत हूं सर—!'

'कुछ करो—कल विदेश मन्त्री अपने दौरे पर जा रहें हैं। आवश्यक नहीं कि कल तक उनपर दोबारा हमला न किया जाए !'

'मैं देखूगां !'

इमरान बोला।

'मगर क्या हमला करने वाला गिरफ्तार नहीं हो सका !'

'नहीं—दरअसल उस समय पुलिस का खास प्रबंध नहीं था। फैयाज का विचार है कि होटल के दरवाजे बंद होने से पहले ही वह निकल गया होगा !'

'हो सकता है !'

इमरान ने माउथ पीस में कहा

'जाहिर है विदेश मन्त्री पर हमला करने वाला कोई कम फुर्तीला आदमी नहीं रहा होगा !'

'हां—वह कोई बहुत चालाक और फुर्तीला आदमी था !'

सर सुलतान की आवाज आई।

फिर उन्होंने सम्बन्ध बिच्छेद कर दिया !

इमरान ने भी रिसीवर क्रेडल पर डाल दिया !

कुछ क्षणों तक कुछ सोचता रहा फिर एक्सटू के विशेष फोन का रिसीवर उठाकर जूलिया के नम्बर डायल करने लगा !

दूसरी ओर से घन्टी बजने की आवाज सुनाई दी ।

फिर हल्के से खटके की—और फिर इमरान के कान में जूलिया की आवाज आई ।

'एक्सटू ?'

इमरान ने भर्राई हुई आवाज में कहा

'ओह—गुड नाईट सर !'

'गुड नाईट—!'

इमरान बोला

'सफदर और चौहान से कहो कि वह एक मिन्ट की देर किए बिना विदेश मन्त्री की कोठी पर पहुंच जाए !'

'मैं समझ गई सर—!'

दूसरी ओर से जूलिया ने कहा

'इसका मतलब है कि विदेश मन्त्री पर सच मुच हमला किया गया है !'

'हां—! इस समय वह सख्त खतरे में हैं। दूसरी बार किसी समय भी हमला किया जा सकता है !'

'अवश्य सर—!'

जूलिया ने कहा

'परन्तु क्या सफदर और चौहान उनकी रक्षा करेंगे ?'

'रक्षा के लिए पुलिस और खुफिया के आदमी मौजूद हैं—सफदर और चौहान इमारत से कुछ दूर रह कर इस बात का ख्याल रखेंगे कि कोई गलत आदमी पुलिस की आंखों में धूल झोंकने के बाद अन्दर प्रविष्ट होने में सफल न हो जाए !'

'ठीक है सर—'

जूलिया का स्वर सुनाई दिया

'मैं समझा दूंगी !'

'अपराधियों के अतिरिक्त उन्हें स्वयं को पुलिस के जासूसों की नजरों से भी बचाना होगा।'

इमरान ने माउथ पीस में आदेश दिया !

'मैं समझ गई सर—!'

'विदेश मन्त्री को किसी तरह की हानि उठाना पड़ी तो बुरी तरह पेश आऊगां—उनकी निगरानी उस समय तक करनी-होगी जब तक वह यहां से चल न पड़ें !'

'राईट सर ! और कोई आज्ञा !'

जूलिया की आवाज उभरी

'बस !'

इमरान ने माउथ पीस में कहा—फिर रिसीवर क्रेडल पर डालकर उसने मुहं में च्युगंम का पीस डाला—और जबड़े चलाता हुआ द्वार की ओर बढ़ गया !

फिर कुछ ही देर बाद वह दर्पण के सामने बैठा चेहरे पर मेक अप की तह जमा रहा था।

इस काम में उसे कोई बीस मिन्ट लग गए।

फिर वह कमरे से बाहर निकल गया !

विदेश मन्त्री की कोठी पर सशस्त्र पुलिस का पहरा था !

सादा वस्त्र वाले चारों ओर फैले हुए थे। उनमें फैयाज मौजूद था।

इमरान के होठों पर हल्की सी मुस्कान उभर आई !

फिर उसकी निगाहें अपने आधीनों को खोजने लगी। हर बात से लापरवाह चलता हुआ वह उस सड़क पर घूम गया—जो विदेश मन्त्री

की कोठी की पुश्त से होकर गुजरती थी !

और वहां इमारत से कुछ दूर उसे सफदर नजर आगया !

सड़क के किनारे बिछी एक पत्थर की बैंच पर बैठा वह सिग्रेट का धुआं होठों से उगल रहा था।

उससे अगली बैंच पर एक आदमी और बैठा था। वह स्ट्रीट लाईट की रोशनी में सांझ का अखबार देख रहा था—परन्तु वास्तव में उसकी नजरें उस इमारत पर थीं जिसमें विदेश मन्त्री का निवास था—। इमरान सीटी में कोई फिल्मी गाने की धुन बजाता हुआ आगे बढ़ता चला गया !

फिर वह भी एक खाली बैंच पर बैठ गया।

कई मिन्ट गुजर गए।

फिर उसने अखबार पढ़ने वाले को उठकर कोठी की ओर बढ़ते देखा उसके आगे बढ़ जाने के बाद सफदर ने भी बैंच छोड़ दी थी।

फिर इमरान भी खड़ा हो गया !

सड़क पर कुछ लोग और भी चल रहे थे।

वे तीनों आगे पीछे चलते हुए कोठी के सामने पहुंच गए।

इमरान चौहान के बारे में सोच रहा था।

फिर वह उसे नजर भी आ गया !

कुछ दूर खड़ा वह सड़क पर गुजरती हुई कारों को देख रहा था।

अखबार पढ़ने वाला व्यक्ति कुछ देर इस तरह चकराता रहा मानों रात का खाना खाकर टहलने के लिए आया हो—फिर उस सड़क की ओर हो लिया जो होटल ब्रांडवे की ओर जाती थी।

इमरान तेज तेज कदम उठाता हुआ सफदर के निकट पहुंच गया फिर मद्धम स्वरों में उसने कहा।

'वापिस जाओ। मैं देख लूंगा !'

'जाहिर है इस आदेश को सुनकर वह चौंके बिना नहीं रह सका होगा

'आप !' स्वर विस्मित था ?

'जाओ—अच्छे बच्चे समय नष्ट नहीं किया करते !'

इमरान ने आहिस्ता से कहा फिर सफदर को चकित छोड़कर वह तेजी से आगे बढ़ गया था !

फिर वह अपने शिकार का पीछा करता हुआ होटल ग्रांडवे तक पहुंच गया।

फिर इमरान ने उसे होटल के उस भाग की ओर जाते देखा था—जहां एक दीवार में टेलीफोन सैट था !

अखबार पढ़ने वाले ने मशीन में पैसे डाले—और तेजी के साथ किसी के नम्बर डायल करने लगा। कुछ दूरी पर खड़ा हुआ इमरान च्युगंम का पीस चबाते हुए उन अंकों को मस्तिष्क में सुरक्षित करता जा रहा था।

कुछ सैकिन्ड बाद उसने सुना।

'रोजर सर—कुछ नहीं सर—मैं मजबूर हूं—वहां पक्षी तक नहीं पहुंच सकता—जी हां—कड़ी निगरानी है—'

सहसा ही फोन करने वाले ने चौंक कर अपने चारों ओर देखा—और वहां अपने अतिरिक्त कुछ और लोगों को भी पाकर उसकी आंखों में भय की परछाईयां थरकने लगीं।

फिर इमरान कुछ नहीं सुन सका। उसका स्वर बहुत ही धीमा हो गया था।

वह उस जगह से हटकर लापरवाही से चलता हुआ उस ओर बढ़ गया जिधर बाहर निकलने का रास्ता था।

कुछ देर बाद वे दोनों फिर एक दूसरे के पीछे चल रहे थे !

और फिर जिस समय इमरान घर पहुंचा। रात के साढ़े ग्यारह बज रहे थे।

टेलीफोन वाले कमरे में पहुँचकर उसने डायरैक्ट्री उठाई—और उसके पृष्ठ उलटने पुलटने लगा। फिर उसे एक नम्बर तलाश करने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी।

श्रौर फिर वह चौंक पड़ा !

टेलीफोन के नम्बर के सामने जिस व्यक्ति का नाम व पता लिखा था, वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं था—राजधानी का प्रसिद्ध पूंजी पति श्रौर व्यापारी श्रारथर्ड था !

इमरान की पुतलियां बड़ी तेजी से घूमने लगी थीं।

कुछ क्षणों वह सोचता रहा।

फिर किसी फैसले पर पहुचंकर उसने एक्स टू के फोन का रिसीवर उठाया—श्रौर जूलिया के नम्बर डायल करने लगा !

दूसरी श्रोर फोन जल्दी ही नहीं उठाया गया था !

जाहिर है जूलिया इस समय तक जागती नहीं रही होगी।

फिर उसकी नींद में डूबी हुई श्रावाज सुनकर इमरान ने कहा

'एक्स टू—मुझे नगर के प्रसिद्ध करोड़ पति सर श्रारथर्ड के विषय में जानकारी चाहिए—'

किस प्रकार की जानकारी सर !'

दूसरी श्रोर से जूलिया ने पूछा

'हर तरह की !'

'राईट सर !' जूलिया ने कहा

श्रौर इमरान ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया !

फिर वह श्रपने शयन गृह में पहुचं गया था !

परन्तु श्रांखे बंद कर लेने के बाद भी वह सोने में सफल न हो सका। मस्तिष्क श्रभी तक रोजर श्रौर श्रारथर्ड में उलझा हुश्रा था !

★ ★ ★

काले वस्त्र पहने व्यक्ति ने एक बार तेज नजरों से श्रपने श्रास पास

का परीक्षण किया—

पुलिस वाले अब भी मौजूद थे। उनका ध्यान विदेश मन्त्री की कोठी की ओर ही था !

वह बाऊन्ड्री वाल पर चढ़कर दूसरी ओर कूद गया !

कम्पाऊन्ड बिल्कुल सुनसान पड़ा था।

उसने जेब में हाथ डालकर साईलैन्सर लगा पिस्तौल निकाला और दूसरे हाथ में चमड़े का बैग पकड़े असल इमारत की ओर बढ़ने लगा। फिर कुछ देर बाद ही वह गन्दे पानी के पाईप के सहारे तेजी के साथ ऊपर की ओर चढ़ रहा था।

बैग इस समय उसके कन्धे पर लटक रहा था !

ऊपर पहुंचकर छाती के बल रेंगता हुआ वह छत के अंतिम कोने तक पहुंच गया !

यहाँ एक रोशनदान नजर आ रहा था। उसने लेटे ही लेटे रोशन दान के अन्दर झांक कर देखा—बैग खोलकर रस्सी निकाली और उसे रोशनदान के साथ मजबूती से बांध कर अन्दर कमरे में लटका दिया।

कुछ ही क्षणों के बाद वह बैग कन्धे से लटकाये बड़ी तेजी के साथ उतर रहा था !

कमरे में पहुंचकर उसने सन्तोष का सांस लिया और चारों ओर निगाहें दौड़ाने लगा !

फिर बैग उठाकर वह उस ओर बढ़ गया जहां एक कोने में एक लिखने की मेज और दो कुर्सियां पड़ी हुई थीं !

ठीक उसी समय बैड पर सोते हुए आदमी ने कुलबुलाकर करवट बदली। काले वस्त्रों वाला जल्दी से फर्श से चिपक गया—साथ ही उसने जेब में हाथ डालकर दोबारा काली नाल वाला खतरनाक पिस्तौल निकाल लिया था।

कुछ क्षण इसी तरह गुजर गए !

सोने वाले की ओर से सन्तुष्ट होकर उसने दूसरी बार बैग खोला। उसमें से एक बहुत ही भयानक वस्तु निकाली और उसे मेज के नीचे छुपाने लगा!

फिर कुछ ही क्षणोपरांत वह कमरे में लटकी हुई रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ रहा था। ऊपर पहुचंकर उसने रोशनदान में बधां हुआ रस्सी का सिरा खोला—और उसे लपेट कर दोबारा बैग में रख लिया!

और फिर उसे पाईप के सहारे नीचे उतरने में किसी प्रकार की भी कठिनाई नहीं हुई थी।

कम्पाऊन्ड के अंतिम छोर पर पहुचंकर उसने दीवार पार की और दूसरी ओर पहुचंकर तेजी से उस ओर चलने लगा जहाँ आधी रात के बाद भी टैक्सी मिलने की सम्भावनाएं हो सकती थीं।

आधा घन्टा गुजर गया?

और फिर अचानक एक कान फाड़ देने वाला धमाका हुआ—भयानक धमाका—और धरती कांप उठी!

दूसरे ही क्षण क्वीन्स स्ट्रीट की तीन सुन्दर और भव्य इमारतें मलबे के ढेरों में परिवर्तित हो चुकी थी।

विदेश मन्त्री की कोठी इन्हीं में से एक थी।

* * *

उस से अगली रात्रि को आरथर्ड सोने की तैयारी कर रहा था—कि टेलीफोन की घन्टी की आवाज सुनकर चौंक पड़ा—फिर वह रिसीवर उठाकर माउथ पीस में बोला

'यस आरथर्ड स्पीकिंग ?'

'क्या कर रहे हो!'

दूसरी ओर से एक भारी मर्दाना स्वर सुनाई दिया—और आरथर्ड बड़े जोर से चौंक पड़ा !

अपने बौस की आवाज उसने साफ पहचान ली थी।

'गुड नाईट बौस !'

उसने जल्दी से कहा

सोने की तैयारी कर रहा था !'

'मुझे दुख है—कि मैंने तुम्हें परेशान किया—वैसे क्या तुम इस समय हैडक्वार्टर पहुंच सकते हो !'

दूसरी ओर से पूंछा गया।

'अवश्य सर—आरथर्ड हर समय सेवा के लिए तैयार हैं !'

'मुझे ऐसे ही परिश्रमी और तेज लोग पसंद हैं—।'

बौस की आवाज आई।

खैर तो मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं।'

'मैं आधे घन्टे से पहले ही हाजिर हो जाऊगा बौस किन्तु क्या कोई खास मामला है मेरा मतलब है—'

'हगांमी मामला समझलों—।'

बौस ने उसकी बात काटी।

'ब्योरा यहाँ आकर मालूम हो जाएगा।'

'ठीक है सर—'

आरथर्ड ने कहा और फिर सम्बन्ध विच्छेद होने की आवाज सुनकर उसने रिसीवर क्रेडल पर डाल दिया।

अब वह तेजी से कपड़े बदल रहा था।

कपड़े बदल कर आर्थर ने घड़ी पर नजर डाली। ग्यारह बज रहे थे। वह बालों में कन्धा फेर कर तेजी से बाहर निकलता चला गया।

फिर गैरेज में पहुंचकर उसने अपनी काली चमकदार कार निकाली और उसे स्टार्ट करके कोठी के बड़े फाटक की ओर लेता चला गया।

हार्न की तेज आवाज सुनकर उंघता हुआ चौकीदार उठ बैठा। अपने क्वार्टर से निकलकर उसने आश्चर्य से अपने मालिक की ओर देखा फिर आगे बढ़कर फाटक खोल दिया।

कार चलाते समय आर्थर के चेहरे पर उलझने नृत्य कर रही थी—वह बराबर सोचे जा रहा था इस हगांमे के विषय में जिस से प्रभावित होकर बौस ने उसे इस तरह अचानक हैडक्वार्टर पहुंचने का आदेश दिया था।

वह सोचता रहा और कार तेजी से तारकोल की चिकनी और काली सड़क की छाती पर फिसलती रही !

रात अन्धेरी थी और सड़क सुनसान।

और आरथर्ड किसी दुर्घटना का विचार दिल में लाए बिना कार को साठ सत्तर मील की स्पीड से दौड़ा रहा था।

फिर उस इमारत के निकट पहुंचकर ही उसने स्पीड कम की थी जो उन लोगों के हैडक्वार्टर के लिए प्रयोग होती थी।

फाटक खुला हुआ था—।

वह कार को अन्दर कम्पाऊन्ड में लेता चला गया।

★ ★ ★

तनवीर काफी फासले से आरथर्ड का पीछा कर रहा था उसने अपनी मोटर साईकल की हैड लाईट भी बुझा रखी थी इसलिए आरथर्ड को उस के बारे में बिल्कुल भी पता नहीं चल सका था।

वैसे यह बात उसकी समझ में नहीं आ सकी थी कि एक्सटू ने आरथर्ड की निगरानी की आवश्यकता क्यों समझी थी। और उसे क्यों ऐसे बोर काम पर नियुक्त किया था।

खैर मोटर साईकल सुनसान सड़क पर फर्राटे भर रही थी कि अचानक उसने अनुभव किया कि पीछे आती हुई कार की रफ्तार तेज हो रही है शायद वह उससे आगे निकलना चाहती है। तनवीर ने मोटर साईकल सड़क के बीच से हटाकर किनारे पर कर ली कार बड़ी तेजी से निकट आ रही थी।

उसने सोचा कार का ड्राईवर नशे में है या फिर आत्म हत्या का इरादा रखता है साठ सत्तर मील प्रति घन्टा की रफ्तार से तो उसकी मोटर साईकल ही भाग रही थी जाहिर है कार की स्पीड उससे भी तेज रही होगी !

सहसा ही तनवीर के मस्तिष्क में एक नए विचार ने सर उभारा उसकी भंवे सुकड़ गई और ललाट पर अंगणित सिलवटे उभर आई।

कुछ सोचकर एक हाथ हैन्डिल से हटाकर उसने जेब में पिस्तौल टटोली और ठीक उसी समय मोटर साईकल लहरा गई उसका अगला पहिया सड़क में पड़े गड्ढ़े में उतर गया—और वह उछलकर सड़क पर जा पड़ा।

वैसे यह अच्छा ही हुआ था अन्यथा दूसरी सूरत में यह भी सम्भव था कि कार से चलाई गई गोलियां मोटर साईकल से टकराने की बजाए उसकी खोपड़ी में घुस जाती—।

तीसरी गोली ने उसे ताक ही लिया।

तनवीर के कंठ से एक तेज चीख निकली और वह लुढ़कता हुआ सड़क के किनारे बने एक गढ़े में जा पड़ा।

यह तीसरी चोट थी।

गडढ़ा काफी गहरा और खतरनाक था।

तनवीर का सर पूरी शक्ति के साथ किसी नोकीली और सख्त चीज से टकराया। और उसकी आंखों के सामने अन्धकार फैलता चला गया।

पीछे से आने वाली कार कुछ आगे जाकर खड़ी हो गई थी। फिर उसमें मौजूद दोनों व्यक्तियों ने दरवाजों की ओर हाथ बढ़ाए ही थे कि

सड़क एक दम रोशनी में नहा गई।

'रहने दो—!'

उनमें से एक ने कहा।

'वह गाड़ी इसी ओर आ रही है।'

उसका इशारा उस कार की ओर था जिस की हैडलाईटस् कोई दो फर्लांग की दूरी पर से नजर आ रही थी।

'यह कौन आ पहुंचा। दूसरा बोला।

'होगा कोई तुम कार आगे बढ़ाओ।'

उसके साथी ने परामर्श दिया।

'वरना हम किसी मुसीबत में भी फंस सकते है।'

'परन्तु वह...—'

'वह खत्म हो चुका होगा। जल्दी करो।'

ड्राईवर ने कार आगे बढ़ादी।

विपरीत दिशा में नजर आने वाली रोशनियां अब काफी निकट आ गई थी और वह गियर बदल कर एक्सीलेटर पर पांव का दबाव बढ़ाता ही चला गया।

कुछ देर बाद उसने कहा।

'तुमने अच्छा नहीं किया हमें सन्तुष्ट हुए बिना आगे नहीं बढ़ना चाहिए था—'

'ओह क्या तुमने अपने कानों से उसकी चीख नहीं सुनी थी!'

'सुनी थी किन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह खत्म ही हो गया हो!'

'वह खत्म हो चुका होगा।'

उसके साथी ने कहा।

'वैसे भी बुद्धि यही कहती थी कि हमें यहां एक मिन्ट भी नहीं ठहरना चाहिए था। यदि मैंने गलत नहीं कहा तो इस कार में चार आदमी थे बेकार में झंझट खड़ा हो जाता।'

'किन्तु यदि—।'

'कुछ नहीं—'

उसने बड़े विश्वास के साथ कहा।

'मुझे विश्वास है कि वह जिन्दा नहीं रहा होगा।'

फिर कुछ क्षणोपरात बोला।

'बौस को यही बताया जाएगा कि वह खत्म हो चुकी है।

'यह गलत होगा—यदि वह बच गया—तो इस झूट पर बौस जीवित नही छोड़ेगा!'

'वह मर चुका होगा!'

ड्राईवर ने विन्ड स्क्रीन के दूसरी ओर देखते हुए कहा।

'ईश्वर करे तुम्हारा विचार ठीक ही हो।'

फिर कुछ क्षणों के लिए कार में खामोशी छा गई।

वह दोनों ही अपनी अपनी जगह कुछ सोच रहे थे।

अचानक ड्राईवर के साथी ने शांति तोड़ते हुए कहा।

'पता नहीं यह क्या चक्कर है। बौस क्या चाहता है।'

भगवान जाने वैसे उचित यही होगा कि तुम इस समस्या पर सोचना ही छोड़दो हमारा काम तो केवल उसके आदेशों का पालन करना है—।'

'ठीक है—किन्तु—!'

किन्तु यह कि बौस स्वयं ही सब कुछ बतादेगा वैसे मेरा विचार गलत नहीं है तो ये सब हगामे परसों वाली रात के लिए हो रहे है।'

'मै समझा नहीं।'

'मैं भी कुछ ठीक से नहीं समझ सका हूं मेरा विचार है कि विदेश मन्त्री के कत्ल के चक्कर में पड़कर बौस शायद सरकारी गुप्तचरों को अपने पीछे लगा बैठा है।'

'तो—तुम्हारा मतलब हैं मोटर साईकल पर कोई जासूस था—।'

'इसके अतिरिक्त और क्या सोचा जा सकता है।

'हुम'—'

उसने हुँकारा भरा।

कुछ क्षणों कुछ सोचता रहा फिर बोला।

'क्या इसका यह मतलब नहीं कि किसी समय हम लोग भी पुलिस की नजरों में आ सकते है।

'क्यों नहीं—'

'ओह आखिर तुम कहना क्या चाहते हो!'

'यही कि हम सब मौत से खेल रहे हैं।'

तुम गधे हो यह सब बाते बहुत पहले सोचने वाली थी यह बाते तुम ने पहले क्यों नहीं सोची।'

'अब भी सोचा जा सकता है—।'

'क्या मतलब क्या तुम संघ से गद्दारी के विषय में सोच रहे हो।'

ड्राईवर ने उसे घूरते हुए पूछा।

'नहीं मैं केवल वह सोच रहा हूं कि किसी समय यदि किसी सरकारी जासूस की नजरो में आगए तो क्या होगा।'

'दिमाग को मत थकाओ यह सोचना हमारा काम नहीं बौस का काम है—!'

फिर कुछ क्षणोपरांत उसने कहा।

'क्या तुमने नही देख लिया कि वह कितना चौकन्ना रहता है अपनी ओर बढ़ते हुए खतरे को उसने कितनी जल्दी अनुभव कर लिया फिर यह ही नहीं इस खतरे को समाप्त भी तुरन्त ही कर दिया।'

'ठीक हैं—परन्तु यह भी तो हो सकता है किसी समय वह चूक जाए।'

'हाँ—और इसी लिए वह हर समय चौकन्ना रहता है ड्राईवर ने कहा।

उसका साथी खामोश हो गया था।

कुछ देर बाद उसने जेब से सिग्रेट केस निकाल कर एक सिग्रेट सुलगाया और होठों से धुआं उगलने लगा।

ड्राईवर बैक ग्लास में ध्यान पूर्वक उसके चेहरे का परीक्षण कर रहा था। कुछ क्षणोंपरांत उसने कहा।

'तुम व्यर्थ में परेशानी में उलझ रहे हो दोस्त बौस को यदि तुम्हारी इस कायरता का पता चल गया तो जीवित नहीं छोड़ेगा।'

उसका साथी चौंक पड़ा।

ड्राईवर को घूरते हुए उसने पूछा।

'क्या तुम उसे सूचित करोगे।'

'नहीं मैं तो तुम्हें यह परामर्श देना चाहता हूं कि बेकार में दिमाग को मत थकाओ।'

ड्राईवर ने शांत स्वर में कहा।

कार में एक बार फिर खामोशी छा गई।

● ● ●

कमरे में इस समय केवल एक आदमी था वही जिसे उसके आधीन बौस कह कर पुकारते थे उसके सामने मेज पर पिस्तोल रखा था और उसके होंठो पर बड़ी विचित्र सी मुस्कान फैली हुई थी।

कुर्सी की पुश्त से टिका वह सिग्रेट के कश ले रहा था—।

अचानक द्वार के दूसरी ओर किसी के कदमो की आहट सुनाई दी।

और उसकी निगाहें अनायास ही द्वार की ओर उठ गई—।

फिर खटके की आवाज सुनकर उसने कहा।

'आ जाओ दरवाजा बन्द नहीं हैं वह अन्दर आ गया।

यह आरथर्ड के अतिरिक्त कोई और नहीं था।

कमरे को शेष साथियो से खाली देखकर न जाने क्यों उसके चेहरे

का रंग उड़ गया ।

फिर वह कुछ घबराई हुई आवाज़ में बोला ।

'अभी और कोई नहीं आया बौस ।'

'और कौन—?'

'मेरा मतलब—है आपने कहा था कोई हगामी समस्या है—'

'शायद ठीक ही कहा था—।'

बौस का स्वर बहुत अर्थपूर्ण था ।

परन्तु इस समय मुझे तुम्हारी ही आवश्यकता थी—'

'मैं...मैं समझा नहीं—'

समझने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती है—'

बौस ने एक विषेली मुस्कान के साथ कहा ।

'और वह तुम्हारे पास है नहीं—'

फिर अचानक उसने मेज पर पड़े पिस्तोल को उठाकर उसका रुख आरथंड की खोपड़ी की ओर कर दिया था ।

'मम—मेरा दोष बौस—'

आरथई गड़बड़ाकर पीछे हटता हुआ हकलाया ।

उसका चेहरा किसी लाश की तरह सफेद हो रहा था । और उसकी आंखों में भय की परछाईयां थरक रही थीं ।

यह तो उसने सोचा भी नहीं था कि हैडक्वार्टर पहुंच कर इन हालात से दो चार होना पड़ेगा ।

'तुम संघ की मशीन के उन महत्वपूर्ण चार पुर्जों में से थे जो मेरे साथ मिलकर उसे चला रहे हैं—तुम्हारी मौत का मुझे दुख भी होगा—परन्तु अब यह आवश्यक भी है—'

'मम—मैं समझा नहीं बौस—'

'मुझे तुम चारों बहुत प्यारे भी हो—किन्तु मैं यह भी किसी सूरत में सहन नहीं कर सकता कि तुम में से किसी के कारण संघ खतरे में

पड़ जाए !'

'मुझसे कोई गलती हो गई है बॉस—?'

'तुम्हारा क्या विचार है—क्या मैं पागल हूं कि तुम्हारी मौत चाहता हूं—'

'मम—मेरा यह मतलब नहीं सर—पप—परन्तु—!'

'तुम अपनी गलती मालूम करना चाहते हो—'

बॉस ने उसकी भयभीत आंखों में देखते हुए कहा

'तो फिर मैं बताऊंगा !'

फिर जरा रुक कर वह बोला—

'तुम्हारे कारण पूरा संघ सकंट में पड़ गया है—तुम्हारा जीवन हम सब के लिए मौत का कारण बन सकता है—इस लिए तुम्हारी मौत आवश्यक है—'

'मम मैं अब भी नहीं समझा बॉस—'आरथर्ड हकलाता हुआ बोला।

वैसे अब उसकी आंखों में भय के साथ ही उलझनें भी लहरा रही थीं ;

'सरकारी जासूसों को तुम पर सन्देह हो गया है—'

बॉस ने बताया।

'एक आदमी बराबर तुम्हारी निगरानी करता रहता है—!'

'यह गलत है बॉस !'

'क्या मतलब ?'

वह गुर्राया

'अब तुममें इतना साहस हो गया कि मुझे झुटला सको !'

'नन—नहीं बॉस—मम—मेरा यह मतलब नहीं था—बल्कि आप को गलत सूचना भी तो मिल सकती है !'

आरथर्ड ने थूक निगलते हुए कहा।

असम्भव है—मैंने पूरी तरह सन्तुष्ट होकर तुम्हारी मौत का निर्णय किया है !'

'किक—किन्तु बौस—मम—मैंने कभी अनुभव नहीं किया कि—'

'यह तुम्हारी लापरवाही है'

'मम—मैं क्षमा चाहता हूं बौस—विश्वास कीजिए अब आपको शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा—संघ के लिए मैं अपने प्राण भी दे सकता हूं !'

'गुड ! मुझे तुमसे ऐसे ही उत्तर की आशा थी। खुश हो जाओ—कि वह समय आ गया है'

बौस ने मुस्कराते हुए कहा।

फिर इससे पहले कि आरथर्ड उत्तर में कुछ कहता—उसकी उंगली का दबाव ट्रिगर पर बढ़ गया था—। कमरे में टच की हल्की सी आवाज सुनाई दी—और आरथर्ड दूसरी ओर उलट गया !

ललाट के बिल्कुल मध्य में पड़ने वाली गोली ने उसे चीखने का समय भी नहीं दिया था !

बौस ने एक नजर उसकी लाश पर डाली—फिर पिस्तौल मेज पर रखकर सिग्रेट सुलगाने लगा।

उसका चेहरा बिल्कुल शांत था। ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी मनुष्य के प्राण लेने के बजाए उसने किसी मच्छर को मसल दिया हो !

कुर्सी की पुश्त से टिक कर वह सिग्रेट के गहरे २ कश लेने लगा !

कुछ मिन्ट इसी तरह गुजर गए।

सहसा ही मेज पर रखे टेलीफोन की घन्टी बजने लगी।

उसने हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठा लिया !

फिर माउथ पीस में बोला

'कौन बोल रहा है ?'

'जेम्स—बोस—'

दूसरी ओर से आवाज सुनाई दी।

उस व्यक्ति को ठिकाने लगा दिया है जो मोटर साईकल पर आरथर्ड का पीछा कर रहा था'

'गुड !' उसकी आंखें चमकने लगीं।' सब कुछ ठीक हुआ है वा ?'

'यस बौस। मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हूं !'

'ठीक है—इस समय कहां से फोन कर रहे हो !'

'घर से बौस !'

'हैड क्वार्टर चले जाओ—'

बौस बोला

'मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं !'

फिर दूसरी ओर से कोई उत्तर सुने बिना उसने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया !

आधे घन्टे बाद जेम्स आ पहुंचा। यह वही व्यक्ति था जो इससे पहले कार ड्राईव करता रहा था

कमरे में प्रविष्ट होते ही उसकी नजर आरथर्ड की लाश पर पड़ी। और फिर वह बड़े जोर से उछल पड़ा—

'यह··· यह—'

उसने थूक निगलते हुए कुछ कहना चाहा।

'यह आरथर्ड की लाश है ?

बौस ने शान्त स्वर में बताया !

'जी हां—किन्तु—मेरा मतलब है यह कैसे हुआ बौस !'

'मैंने कत्ल कर दिया !'

उसने उत्तर दिया !

फिर जरा रुक कर उसने गम्भीर स्वर में कहा—

'मुझे इसकी मौत का दुख है। संघ को अभी इसकी आवश्यकता

थी—संघ को अभी इससे खतरा भी पैदा हो गया था—मैं इसे खत्म न करता तो शायद हम सब ही खत्म हो जाते !'

'मैं समझा नहीं बौस !'

'इसके पीछे सरकारी जासूस लग चुके थे। यदि मैं इसे छोड़ देता तो—!'

'मैं समझ गया बोस—किन्तु उस जासूस की मौत के बाद—मेरा मतलब है—'

'जैम्स !'

बौस के स्वर में हल्की सी गुर्राहट थी।

'क्या तुम स्वयं को मुझसे अधिक समझदार समझते हो !'

'नन—नहीं बौस—मैं भूल कर भी ऐसी कोई बात नहीं सोच सकता !'

'फिर उचित यही होगा कि खामोश ही रहो !' वह शुष्क स्वर में बोला—

फिर जरा रुक कर उसने जेम्स की आंखों में देखते हुए पूछा—

'क्या तुम यह समझते हो कि इस जासूस के अतिरिक्त किसी ओर को इस पर सन्देह नहीं हुआ होगा !'

'मैं समझ गया बौस !'

'फिर वह बौस की ओर देखता हुआ बोला—

'आप वास्तव में महान हैं बौस—आप की निगाहें बड़ी तेजी से वहां तक पहुंच जाती हैं—जहां तक किसी और की नजरें नहीं पहुंच सकतीं'

'थैन्क्स ! मुझे गर्व है कि मेरे साथी मुझ पर भरोसा करते हैं !' बौस ने मुस्कराते हुए कहा।

कुछ क्षणों कमरे में खामोशी रही !

फिर जेम्स ने ही शान्ति भंग की थी।

'मैं आज्ञा का प्रतीक्षक हूं बोस ?'

'आं !'

बौस ने आहिस्ता से चौंकते हुए कहा।

'मैंने तुम्हे इस लिए यहां बुलाया था कि तुम इस लाश को ठिकाने लगा दो'

'ठीक है बौस !'

'तुम्हें किसी प्रकार की कोई आपत्ति तो नहीं बोस ने हाथ हिलाते हुए कहा।

'बिल्कुल नहीं सर—!'

'परन्तु मैं इसे कहां ले जाऊं !'

'किसी भी सुनसान जगह पर लेजाकर फैंक देना !'

'वैसे क्या यह अपनी कार में यहां पहुंचा था !'

अचानक बौस ने पूछा—

'यस सर—! कम्पाऊन्ड में इसकी कार मोजूद है !'

'ठीक है—इसे उसी की कार में डालकर ले जाओ !' बौस ने सोचते हुए कहा।

'ठीक है सर !'

'सावधान रहना—एक के बाद किसी दूसरे साथी से भी हाथ धोने पड़े तो मुझे बहुत दुख होगा !'

'ऐसा नहीं होगा बौस !'

जेम्स बोला—

'आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा !'

'ठीक है—अब जाओ—अपनी कार फिर किसी समय ले जाना !'

जेम्स लाश की ओर बढ़ गया।

फिर उसे उसने अपनी पीठ पर लादा और द्वार की ओर बढ़ता चला

गया !

कम्पाऊन्ड में आर्थर की नई और कीमती काली कार खड़ी थी—जेम्स ने कार का डिके खोलकर लाश को उसमें ठूस दिया—परन्तु इससे पहले वह उसकी जेब से चाबियां निकालना नहीं भूला था।

डिके बंद करके वह ड्राईविंग सीट पर जा बैठा—इन्जन स्टार्ट किया—और कार को फाटक की ओर लेता चला गया। फिर ठीक पैंतालिस मिन्ट बाद वह उसे शहर से दूर एक सुनसान जगह पर खड़ी कर रहा था।

स्टैरिंग व्हील—द्वार और डिके पर से हाथों के निशान साफ करके वह शहर की ओर चला पड़ा।

उसे सन्तोष था कि पुलिस के देवता भी अब उसकी उगंली का मामूली सा निशान भी पाने में सफल न हो सकेंगे।

● ● ●

हाल में आज फिर भीड़ भाड़ नजर आ रही थी।

अन्धकार के बाद जब प्रकाश हुआ—और—'आकाश के पवित्र बेटे के हाथों को चूमने का सिलसिला शुरू हो गया तो सदा की तरह इस बार भी दरवाजा खोल दिया गया !

लोग उसमें से गुजरकर दूसरे कमरे में जाने लगे। जहां उनके वस्त्र खूटियों पर लटक रहे थे।

शाईनिगं मोटर कम्पनी का बूढ़ा मालिक इरफानी भी इन्हीं लोगों में सम्मिलित था !

उसने अभी कोई पन्द्रह दिन पहले आकाश के बेटे के धर्म को

अपनाया था।

चेहरे पर चिपका हुआ काले रंग का नकाब उतार कर उसने एक खाली खूंटी पर लटकाया। और अपना कीमती सूट पहनने लगा।

फिर बराबर वाले कमरे में जाकर उसने टाई की गिरह ठीक की—बालों में कंघा फेरा और फिर स्वयं पर एक नजर डालता हुआ उसी कमरे में आ गया जिससे अनेक पुरुष और स्त्री अभी तक वस्त्र बदल रहे थे।

अचानक इरफानी चौंक पड़ा।

फिर ऐसा ही लगा मानों उसकी आंखों के सामने अन्धेरा छागया हो दीवार का सहारा लेकर उसने अपने गिरते शरीर को संभाला आंखें फाड़ कर उस युवती और सुन्दरी को देखने लगा जो दो आदमियों की ओट में खड़ी अपने सफेद वस्त्र उतार रही थी। देखते ही देखते वह ऊपरी शरीर से बिल्कुल नगीं हो गई—और यह देखकर इरफानी कीं आँखों में खून उतर आया।

बात थी भी ऐसी।

उसकी जगह कोई भी क्यों न होता अपनी पत्नी को देख उसकी यह दशा होना स्वाभाविक ही था।

निचला होंठ दांतो में दबाए इरफानो उसे घूरता रहा क्रोधित दृष्टि से मानों उसे खा ही जाएगा फिर हो सकता था कि वह उसपर टूट ही पड़ता किन्तु कुछ सोचकर उसने खून के घूट पीना ही उचित समझा।

सुन्दर स्त्री ब्लाउज पहनने के बाद शरीर को साडी में लपेट रही थी कि इरफानी ने उसकी कमर पर हाथ रख दिया जाहिर है स्त्री ने घूम कर अवश्य देखा होगा फिर ऐसा ही लगा मानों वह चकित ही रह गई।

'तत''' तुम—इरफानी —'

कुछ क्षणोपरांत उसके होंठों से कपकपाता स्वर निकला। आंखों में

आश्चर्य के साथ ही भय की परछाईयां भी लहरा रही थी।

'मेरे साथ चलो !'

इरफानी उसे घूरता हुआ सपाट स्वर में बोला।

फिर वे वहां से घर पहुँच गए थे।

स्त्री के चेहरे से अब लापरवाही का प्रदर्शन हो रहा था और बूढ़ा इरफानी उसका चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। आंखें आग उगल रही थी—।

अपने शयन गृह में पहुंचकर इरफानी ने द्वार बंद कर दिया फिर उसने मेज की दराज से रिवाल्वर निकाला और बोला—

'मेरा विचार है—मुझे तुम्हें कत्ल कर देना चाहिए—'

'किस लिए क्या केवल इसलिए तुम मुझे कत्ल कर देना चाहते हो कि मैंने आकाश के पवित्र बेटे का धर्म अपना लिया है—'

इरफानी की पत्नी शकीला ने पति की आंखों में देखते हुए पूछा—इस समय उसकी आंखों में भय के बजाए घृणा अंगड़ाईयां ले रही थी और उसके होठों पर बड़ी ही विषेली मुस्कान फैली हुई थी।

'यह मामूली बात हैं—क्या तुम नहीं जानती कि धर्म की आड़ लेकर वहां किस तरह के रंगीन खेल खेले जाते है !'

'जानती हूं—और इन खेलों में एक अच्छे खिलाड़ी के रूप में भाग भी ले चुकी हूं—'शकीला ने उत्तर दिया।

और यह सुनकर जाहिर है इरफानी की खोपड़ी बुरी तरह घूम गई होगी—पांव पटख कर कंठ के बल वह चीखा।

'शट अप—चुप रह कुतिया की बच्ची।'

इरफानी पागलों की तरह उसपर झपटा—उसने पत्नी के सुन्दर केश पकड़ कर उसके सर को दो तीन कड़े झटके दिए—और उसके भरे भरे कपोलों पर कई हाथ उड़ा दिए—

'कमीनी औरत—'

वह उसे मसहरी पर ढ़केलता हुआ गुर्राया।

'मैं तुझे जान से मार दूंगा—'

और फिर उसके घूंसे शकीला के सुन्दर सुडोल और कोमल शरीर पर बरसाने लगे!

'मेरी आंखों में खून उतर रहा है—'

और फिर वह उसे छोड़कर हांपने लगा!

शकीला किसी भूकी शेरनी की तरह तड़प कर उठ बैठी—उसकी आंखें लाल हो रही थी और वह इरफानी को बड़ी ही घृणित दृष्टि से देख रही थी—।

कुछ क्षणों वह उसे ऐसी ही नजरों से घूरती रही—फिर होठों से बहने वाले खून को पोछती हुई वह बोली—

'अब यदि तुमने कुछ कहा—तो मैं तुम्हारा सर तोड़ दूंगी—'

'क्या?'

इरफानी कंठ के बल चीखा।

'तेरा इतना साहस—मैं तुझे खत्म कर दूंगा।

उसने दोबारा रिवाल्वर उठा लिया।

लगता था मानों पूरा चैम्बर वह शकीला पर ही खाली कर देगा—परन्तु कई सैकिन्ड गुजर गए और रिवाल्वर उसके हाथ में कपकपाता रहा।

शकीला के होठों पर विषैली मुस्कान उभर आई।

'इसे जेब में रखले कायर तू स्वयं अपराधी और पापी है और किसी अपराधी और पापी में इतना साहस नहीं होता कि वह किसी पापी पर अपनी वीरता दिखा सके।'

'मैं तुझे कत्ल कर दूंगा—'

इरफानी दांत पीसता हुआ गुर्राया।

'तू स्त्री जाति के नाम पर कलक है'

'और तुम देवता हो—?'

'चुप रह कमीनी—'

इरफानी शकीला पर झपट पड़ा।

'खबर दार···जो मुझे हाथ लगाया।'

वह तड़प कर खड़ी हो गई।

'मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा आवारा औरत—'

'तुम—यदि इतने ही शर्मदार हो तो मुझसे उलझने की बजाए अब तक आत्म हत्या कर चुके होते परन्तु नहीं यह कैसे हो सकता है क्योंकि तुमने भी तो उस धर्म को अपना रखा है—'

'मैं मर्द हूं।'

'तुम इन्सान हो और मैं भी इन्सान हूं। और हर इन्सान चाहे वह मर्द हो या औरत बराबर के अधिकार रखता है—और –'

'बकवास मत कर आवारा औरत—मैं तेरा खून व ृ ूंगा।

'मैं आवारा हूं परन्तु क्या तुम अब भी स्वयं को देवता समझते हो शर्म करो इरफानी जरा स्वयं पर नज डालो—'शकीला बड़े ही व्यगांत्मक और कटु स्वर में बोली—

'शट अप अगर मैंने फिर कभी तुझे यहां देखा तो इसी जगह कत्ल कर दूंगा···'

शकीला हंसने लगी।

कुछ क्षणोपरांत बोली।

'तुममें इतना साहस नहीं है इरफानी वैसे यदि तुम इसे बुरा समझते हो कि मैं तुम्हारी पत्नी होकर गैर मर्दों के साथ आनन्द लूं तो तुम स्वयं क्यों किसी की पत्नी के शरीर से अपने बूढे शरीर के लिए गर्मी हासिल करते हो यदि यह सचमुच पापी जीवन है तो तुम स्वयं इसे क्यों नहीं छोड़ देते···

'बकवास मत करो—तुम अब वहां कभी नहीं जाओगी ।'

'बुरी बात है, कम से कम एक बूढ़े को अपनी जवान पत्नी पर इस प्रकार की पाबन्दी नहीं लगाना चाहिए...'

शकीला व्यगांत्मक नजरों से उसे देखते हुए बोली ।

'क्या मतलब...?'

'खत्म करो आओ हम सन्धि करले कि आज से हम दोनों दोस्तों की तरह रहेंगे न तुम मुझ पर पाबन्दियां लगाओगे न मैं तुमसे कुछ कहूंगी'

'क्या—तुम्हारा दिमाग खराब है ।'

'दिमाग तुम्हारा खराब है जो इतनी मामूली बात भी नहीं समझ सकते—'

'शट अप—मैं अपने परिवार का इस तरह अपमान नहीं होने दूंगा । मैं यह सब नहीं देख सकूंगा ।'

'तुम्हें देखना पड़ेगा इरफानी इस संसार में इस हाथ की यूंही उस हाथ हो जाती है यूं भी मेरी और तुम्हारी आयु में बहुत अधिक अन्तर है तुम्हारी सब से छोटी बेटी मुझसे केवल एक वर्ष छोटी है ।'

'क्या मतलब ?'

'सीधी सी बात है हम दोनों दोस्त तो बन सकते है अच्छे पति पत्नी नहीं इसलिए समझदारी इसी में है कि आज से हम दोनों अपनी अपनी राहे अलग अलग करले—'

'नहीं यह असम्भव है जबतक तुम मेरी पत्नी हो तब तक असम्भव है ।

'तुम्हारी इच्छा यदि तुम वैज्ञानिक ढंग से मुझसे अलग होना चाहते हो तो यही सही परन्तु और फिर वह वाक्य अधूरा छोड़ कर मुस्कराने लगी ।

परन्तु क्या —?'

'तुम्हारे परिवार की प्रतिष्ठा मुझसे अलग होने पर भी कायम नहीं रह सकती—।

शकीला ने उत्तर दिया ।

'मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा ।'

'अपनी सबसे छोटी लड़की को किसी लेडी डाक्टर के पास ले जाओ ।

'क्या मतलब ?'

इरफानी चौंक पड़ा ।

'मतलब लैडी डाक्टर से ही पूछ लेना—'

'बको मत—!'

इरफानी को क्रोध आ गया ।

फिर रिवाल्वर की नाल का रूख वह शकीला की ओर करते हुए गुर्राया ।

'मेरी बात का उत्तर दो वरना सारी गालियां तुम्हारी खोपड़ी में उतार दूंगा—!

उसका स्वर बड़ा ही भयानक था ।

उसके चेहरे से ऐसा ही प्रतीत हो रहा था मानो सचमुच ही शकीला का खून कर देगा ।

शकीला की आंखों में घबराहट और बोखलाहट की परछाईयां लहराने लगीं । उसे अनुभव हुआ कि उसे वह बात इरफानी के सामने नहीं कहनी चाहिए थी परन्तु अब तो यह मूर्खता हो ही चुकी थी ।

उत्तर दो—'

इरफानी उसकी आंखों में देखता हुआ गुर्राया ।

'यदि तुम इसी तरह खामोश खड़ी रही तो में तुम्हें खत्म कर दूगा ।

'इन्सान बनों मुझे यह जगंलीपन पसद नहीं हैं—'

'शट अप । मुझे बताओ कि तुमने किस लिए मुझे नजमा को लेडी डाक्टर के पास ले जाने लिए कहा है ।'

'वह—'

शकीला के होंठो पर दोबारा वही विषेली कटु और व्यगांत्मक मुस्कान उभर आई !

फिर जरा रूक कर वह बोली—

'यदि मेरा विचार गलत नहीं है तो कुछ दिनों बाद वह शायद मां बनने वाली है ।'

'शट अप—'

इरफानी जोर से चीखा ।

'चीखो मत डार्लिगं—'

शकीला के होठों पर बराबर विषेली मुस्कान थी ।

'यह हकीकत है—और तुम्हारी सूचना के लिए यह भी बतादूं—कि वह आकाश के बेटे का धर्म अपना चुकी है'

'नहीं—यह बकवास है !'

इरफानी चिल्लाया ।

'मैं यह सब मानने को तैयार नहीं हूं'

'यह हकीकत है—चाहो तो स्वयं नजमा से मालूम करलो !'

शकीला ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा फिर वह हंसने लगी—कुछ क्षणों बाद वह बोली—

कितने आश्चर्य की बात है कि वह अपने बच्चे को बाप का नाम भी नहीं बता सकती । पता नहीं कौन था जो अन्धकार में...'

शकीला का वाक्य अधूरा रह गया ।

'शट—अप—मैं उसे कत्ल कर दूंगा—तुम दोनों को जीवन से हाथ धोने पड़ेंगे—'

इरफानी इतने जोर से चीखा कि उसे खांसी आगई !

'चीखों मत—नजमा मूर्ख नहीं है—वह बहुत जल्दी इस आने वाले खतरे को खत्म कराने वाली है—'

शकीला ने अर्थ पूर्ण स्वर में कहा—

फिर वह विषैली हंसी हसंती हुई बोली।

विज्ञान ने अब बहुत उन्नति करली है डार्लिगं—इसलिए नजमा की ओर से तुम्हें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं हैं'

फिर ऐसा ही लगा था मानों इरफानी का दिमाग उलट गया हो—उसने अपने रिवाल्वर सारी गोलिया शकीला की छाती और सर में उतार दीं—और अब वह दोबारा रिवाल्वर का चैम्बर भर रहा था !

दरवाजा खोलकर वह तेजी से कमरे से बाहर निकल गया। लान में सारे नौकर और घरके दूसरे जन की भीड़ उसका चेहरा देखकर उससे दूर ही रूक गए थे !

इरफानी ने एक बार बिफरे शेर की तरह उन्हें घूरा—फिर उसकी खूनी नजरें नजमा पर जाकर रूकीं—जो किसी खतरे की चिन्ता किये बिना बाप की ओर चली आ रही थी !

इमारत एक बार फिर धमाकों से काँप उठी। छ; की छः गोलियां नजमा के शरीर में उतारने के बाद वह पागलों की तरह अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

फिर इससे पहले कि कोई आगे बढ़कर उसे पकड़ने की कोशिश करता—वह तेजी से कमरे में प्रविष्ट हो गया।

दूसरे ही क्षण दरवाजा बन्द हो चुका था।

वे सब मिलकर उसे झड़झड़ाने लगे।

इरफानी के बड़े बेटे और बेटी ने उसे आवाजें भी दीं—परन्तु दूसरी ओर खामोशी ही रही !

सहसा ही अन्दर से एक धमाके की आवाज सुनाई दी—फिर ऐसा लगा मानों कोई भारी वस्तु फर्श पर गिरी हो—उनके चेहरे उतर गए।

फिर सबसे पहले नजमा की बड़ी बहन सलमा की चीख सुनाई दी थी !

'डैडी—!'

वह पागलों के अन्दाज में चीखी थी।

फिर लहराती हुई फर्श पर ढेर हो गईं थीं।

वे सब उसके ऊपर झुक पड़े।

★ ★ ★

अपनी पत्नी शकीला और अपनी बेटी नज़्मा को कत्ल करने के बाद मैं अपने लिए आत्म हत्या को मुक्ति का रास्ता समझ रहा हूं।

अपनी पत्नी के कहने के अनुसार तो मुझे उसी समय आत्महत्या कर लेनी चाहिए थी जब मेरे मन में गलत रास्तों पर चलने के विचार ने सर उभारा था—परन्तु खैर—'

उसके बाद आत्महत्या के कारणों पर प्रकाश डाला गया था—और सब से अंत में उस इमारत का पता लिखा था जहां 'आकाश का बेटा' रहता था !

फैयाज ने एक बार नहीं—कई बार इस लेख को पढ़ा—जो इरफानी ने आत्म हत्या करने से पहले घसीटा था—फिर वह पत्र उसने अपनी जेब में रख लिया।

वैसे यह पढ़कर उसे आश्चर्य अवश्य हुआ था—कि इस शहर में एक ऐसा शैतानी टोली भी मौजूद है—और उसे अबतक उसकी हवा नहीं लग सकी। और अब उसने निर्णय कर लिया के उस शैतान साधू और उसके चेलों को जेल में पहुंचाए बिना नहीं छोड़ेगा !

इरफानी की लाश उठजाने के बाद उसने मोटर साईकल संभाली—और उसे स्टार्ट करके कोठी के बड़े फाटक की ओर लेता चला गया।

फिर ठीक बीस मिन्ट बाद वह उस इमारत में प्रविष्ट हो रहा था जिस का पता इरफानी ने अपने अंतिम पत्र में लिखा था !

सबसे पहले उसका टकराव एक सुन्दर और जवान लड़की से हुआ था—और फिर कुछ ही क्षणों के बाद उसे आकाश के बेटे के पास पहुंचा दिया गया !

'कहिए आफीसर !'

साधू ने उसके बैठने के बाद बड़े शिष्ट स्वर में पूछा—

'कैसे कष्ट किया ?'

उसका चेहरा और आंखें इस समय बिल्कुल शान्त थी !

और उसकी तेज नजरें फैयाज के चेहरे पर लगी हुई थीं !

'मैं कुछ प्रश्न करने आया हूं—'

फैयाज ने निगाहें झुकाते हुए बताया ।

उसकी आंखों में देखते हुए उसे ऐसा ही अनुभव हुआ मानों उस भयानक और शैतानी आंखों से कोई शैतानी शक्ति निकल कर उसके मस्तिष्क पर छाती जा रही हो !

'अवश्य—मैं हाजिर हूं—परन्तु मुझे आश्चर्य है—कि मुझ जैसे साधू मनुष्य से खुफिया पुलिस के एक उच्च अधिकारी को कौन से प्रश्न करने की आवश्यकता पेश आ गई ।'

'क्या यह हकीकत है—कि तुम राजधानी में एक नये और शैतानी धर्म को फैला रहे हो और स्वयं को आकाश का पवित्र बेटा कहते हो ?'

फैयाज ने पहला प्रश्न करते हुए, उसकी आँखों से निगाहें हटाकर उसके चेहरे को घूरा ।

और साधू चौंक सा गया !

उसके चेहरे पर एक रंग सा आकर गुजर गया !

फिर उसने अपनी बड़ी बड़ी घनी मूछों की ओट में मुस्कराते हुए पूछा—

'आपको यह सूचनाएं कहां से मिलीं ?'

'तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं होना चाहिए'…

फैयाज ने लापरवाही से सर हिलाकर कहा—

'केवल मेरे प्रश्नों का उत्तर दो !'

'ठीक है —!'

'मैं इससे इन्कार करता हूं !'

'तुम इन्कार कर सकते हो—परन्तु इस समय उचित यही होगा कि जो कुछ मैं पूंछू उसका जवाब दो—और जो कुछ कहो खूब सोच समझ कर कहो—इस समय तुम एक जिम्मेदार आफीसर से बात कर रहे हो !'

'मैं जानता हूं—'

साधू ने इन्कार करते हुए कहा—

'किन्तु यह गलत है कि मैं किसी धर्म को फैला रहा हूं'

'तब फिर—'

फैयाज ने कहा…

'तुम्हे इससे भी इन्कार होगा कि हर सप्ताह इस इमारत में शहर के अनेक कामी लोग एकत्र होकर धर्म की आड़ लेकर दिल भर कर शैतानी खेल खेलते हैं—'

'इस प्रकार का प्रश्न ही नहीं उठता—'साधू ने इन्कार करते हुए कहा—

'हुम !' फैयाज ने हुकारा भरा।

'फिर आकाश के महान बेटे ने पूछा—

'क्या आपको इस इमारत में किसी प्रकार खुफिया सभाओं की सूचना मिली हैं'

'नहीं—किन्तु मेरे पास इस बात का सबूत मौजूद है—कि तुम झूठ बोल रहे हो—'

फिर उसने इरफानी का पत्र निकाल कर उसके हाथ में थमा दिया।

'इसे ध्यान से पढ़ो—और बताओ···कि क्या अब भी तुम इन्कार करते रहोगे···'

कुछ सैकिन्ड के लिए कमरे में खामोशी छा गई। साधू की नजरें पत्र पर दौड़ती रहीं—फिर जब पत्र समाप्त हुआ···तो फैयाज ने देखा कि उसकी आंखों में उलझनें तैर रही थीं।

'इस पत्र की मौजूदगी में मैं तुम्हें गिरफ्तार भी कर सकता हूं—' फैयाज ने धमकी दी।

आकाश का बेटा खामोश रहा।

फिर कुछ क्षणोपरांत उसने कहा—

'ठीक है—मैं मानता हूं कि मैं अपने धर्म को फैला रहा हूं—परन्तु क्या यह कोई अपराध है ?'

धर्म की आड़ लेकर शैतानी खेल खेलना अवश्य अपराध है···'

फैयाज बोला···

'यह गलत है···मेरा धर्म संसार को···मानवता, और शान्ति की शिक्षा देता है···'

'और शायद इसी लिए तुम धर्म के पर्दे में बदकारी और शैतानी कार्यों का अड्डा चला रहे हो —'

फैयाज का स्वर व्यंग से भरा हुआ था !

'बकवास···यह आरोप है मुझपर और मेरे धर्म पर···'

आकाश का बेटा चीखा।

'अच्छा !' फैयाज मुस्कराया।

'मैं अपने धर्म को फैला अवश्य रहा हूं'

आकाश के बेटे ने कहा।

'परन्तु यह धर्म वही है जिसे ईश्वर सबसे अधिक पसंद करता है'

'कौनसा धर्म है यह—जिसे तुम संसार में फैलाकर उसका प्रचार करना चाहते हो'

'वही जो संसार में होना चाहिए—जो इन्सान को इन्सानियत, मुहब्बत और शान्ति की शिक्षा देता है'''

साधु ने उत्तर दिया !

'मेरा विचार है तुम एक बार इस पत्र को पढ़लो'''फैयाज ने कहा ।

'बेकार है'''इसमें एक दम बकवास है'

'चलो यही सही'''परन्तु क्या तुम मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलने को तैयार हो '''?'

फैयाज ने व्यगांत्मक स्वर में पूछा'''

'अपना स्वर ठीक करो आफीसर'''

आकाश के बेटे ने कहा'''

'पुलिस आफीसर होने का यह मतलब नहीं कि तुम किसी का अपमान भी करने लगे ।'

पुलिस स्टेशन चलो—जो कुछ कहना चाहो वहीं पर कहना !' फैयाज बोला'''

'तुम्हारे पास मेरी गिरफ्तारी का वारन्ट है' आकाश के बेटे ने कहा

'तुम इसकी चिन्ता मत करो'''

'क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा सबूत है'''जिसके अन्तर्गत मुझे अपराधी सिद्ध कर सको—क्या केवल इस पत्र को पढ़कर संसार की कोई अदालत मुझे सजा सुना सकेगी'

फैयाज उलझन में पड़ गया !

वास्तव में उसके पास कोई ठोस सबूत नहीं था !

रही इरफानी की आत्म हत्या या वह पत्र तो वे भी ऐसे नहीं थे कि फैयाज उसपर हाथ ही डाल देता'''

अब उसके लिए खामोश हो जाना ही उचित था !

और अब पहली बार फैयाज को अनुभव हुआ कि वहां आकर उसने किसी प्रकार का चतुर होने का प्रमाण नहीं दिया है···।

आकाश का बेटा उसके चेहरे के भावों को बड़े ध्यान से पढ़ रहा था —

उसे उलझन में देखकर वह बोला—

'पहले मेरे खिलाफ सबूत प्राप्त करो आफीसर···उसके बाद गिरफ्तारी का वारन्ट···और जब वह दोनों काम हो जाएं तो किसी भी साधारण सिपाही को यहां भेज देना···मैं अपने हाथ हथकड़ियों के लिए पेश कर दूंगा !'

'अच्छी बात है···मैं देखूगां कि तुम कब तक स्वयं को कानून से बचा सकते हो'

फैयाज भिन्नाकर बोला।

फिर वह उठते हुए बोला।

'मैं जा रहा हूं···किन्तु तुम मेरी आज्ञा के बिना राजधानी नहीं छोड़ोगे'

'प्रश्न ही नहीं उठता !'

उसने मुस्कराते हुए कहा।

'मैं अपराधी नहीं हूं जो फरार होने की कोशिश करूंगा !'

और फिर फैयाज क्रोध से फर्श पर पांव पटखता हुआ कमरे से बाहर निकलता चला गया।

फिर बरान्डे से गुजरकर उसने अपनी मोटर साईकल उठाई थी और उसे स्टार्ट करके इमारत के बड़े फाटक से बाहर निकलता चला गया।

★ ★ ★

दूसरे दिन फैयाज दफ्तर पहुँचा ही था कि रहमान साहब का बुलावा आ गया।

फिर जाहिर है कि फैयाज को उनके दफ्तर पहुंचना ही पड़ा। फैयाज रहमान साहब के कमरे में प्रविष्ट हो गया!

'बैठो!'

रहमान साहब ने उसके सलाम का उत्तर देते हुए कुर्सी की ओर संकेत किया।

फैयाज बैठ गया।

'यह मनोहर दास का क्या मामला है'

रहमान साहब ने प्रश्न किया।

'मनोहर दास!'

फैयाज चौंका।

'ओह'''आपका इशारा शायद उस व्यक्ति की ओर है जो स्वयं को आकाश का बेटा कहता है'

हाँ'''

रहमान साहब बोले।

'कल तुमने उसे गिरफ्तारी की धमकी भी दी थी!

'जी हाँ'''

फैयाज ने बताना शुरू किया।

'वह'''बात दर असल यह है कि वह पक्का फ्रांड है'''मेरा मतलब है—स्वयं को आकाश का बेटा बताता है—किसी नये धर्म का

प्रचार कर रहा है—हर सप्ताह उस इमारत में खुफिया सभाएं होती हैं...जहां धर्म की आड़ लेकर आजादी के साथ रंग रलियां मचाई जाती हैं—और...'

फैयाज खामोश हो गया। शायद वह और उचित शब्द तलाश कर रहा था। रहमान साहब भी उसकी बातों पर काफी चकित दिखाई पड़ रहे थे।

उन्होंने खामोश देखकर उन्होंने पूछा।

'तुम्हें यह जानकारियां किस तरह प्राप्त हुईं ?'

उत्तर में फैयाज ने वही पत्र निकालकर उसके सामने रख दिया... जो उसे इरफानी के कमरे में उसकी मेज पर रखा मिला था।

पत्र पढ़कर रहमान साहब किसी गहरी सोच में डूब गए—कुछ क्षणों के बाद वह बोले।

'आश्चर्य है—मुझे तो कुछ और ही मालूम हुआ है !'

आपको मालूम हुआ होगा... कि मनोहर दास अपने धर्म का सच्चा पुजारी है...'

फैयाज मुस्कराया !

'और इस शहर में अपने धर्म का प्रचार कर रहा है'

'हां...जहां तक मुझे जानकारी प्राप्त हुई है... वह अपने धर्म का प्रचार कर रहा है...यहां उसने बहुत से लोगों को प्रभावित किया है... उसकी बातें सुनकर शहर के बहुत से लोग... उसका धर्म अपना भी चुके हैं...और जाहिर है कि यह कोई अपराध नहीं है !'

'वह बहरूपिया है सर...'

फैयाज बोला।

'उसका उद्देश्य कुछ और है...और शायद उसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने इस शैतानी धर्म का प्रचार शुरू किया है !'

'यदि इरफानी ने मरते समय पुलिस को गलत रास्ते पर डालने

की कोशिश नहीं की है…तो इसके अतिरिक्त सोचा भी क्या सकता है…'

'वह भेड की खाल में भेडिया है सर…'

'फैयाज फिर बोला।

'आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा…कि इस पत्र को पढ़ने से पहले उसने हर बात मानने से इन्कार कर दिया था—और यह कि वह किसी धर्म का प्रचार कर रहा है!

'ओह—'

'यह बात भी काफी रोचक है कि हर सप्ताह इस इमारत में धार्मिक सभाएं होती है…परन्तु पुलिस को आज तक पता नहीं चल सका'

'क्या मतलब…?'

स्पष्ट है कि वह उन्हें खुफिया रखना चाहता है—अब प्रश्न यह है—कि यदि वह सभाओं में अपने धर्म का प्रचार करता है—तो उन सभाओं को छिपाने की क्या आवश्यकता है—क्यों पुलिस आज तक उनके विषय में नहीं जान सकी—और उसने मुझसे झूट क्यों बोला—'

'हुम—!'

रहमान साहब चिंचित स्वर में बोले—

'मैं तुम्हारा मतलब समझ रहा हूं!'

फिर जरा रूक कर उन्होंने कहा।

'आश्चर्य है कि अनेक जिम्मेदार आफीसर नहीं चाहते कि खुफिया विभाग इस गिरोह तक पहुंचे!'

'मैं समझा नहीं सर—'

गृह मन्त्री की आज्ञा है कि मनोहर दास को परेशान न किया जाए—वह एक प्रतिष्ठित नागरिक है—और अपने धर्म के प्रचार में व्यस्त है।

'ओह!'

'फैयाज के होंठ सुकड़ गए।

'मेरा विचार है—इस किस्से को खत्म ही कर दो'

रहमान साहब ने कटु स्वर में कहा।

'मनोहर दास ने डाइरेक्ट ही गृह मन्त्री से तुम्हारी रिपोर्ट की है··· और विदेश मन्त्री का यह आदेश है कि उसे अपने कार्य में व्यस्त रहने दिया जाए···'

'ठीक है सर···मैं व्यक्तिगत रूप से ही उस बहुरूपिये में दिलचस्पी लूगां !'

'नहीं !'

रहमान साहब उसे घूरते हुऐ बोले।

फिर फैयाज को खामोश रहने में ही अपनी भलाई नजर आई थी !

कुछ क्षणों के बाद रहमान साहब ने पूछा।

'विदेश मन्त्री पर गोली चलाने व कत्ल करने वालों का कुछ पता चला !'

'अभी तो नही सर···वैसे मैं अपनी पूरी पूरी कोशिश कर रहा हूं।

'इस मामले को अब जल्दी ही खत्म हो जाना चाहिए !'

उन्होने शुष्क स्वर में कहा।

'मेरे विभाग की बड़ी सख्त बदनामी हो रही है'

'मैं समझता हूं सर···

फैयाज ने सर झुका लिया।'

फिर रहमान साहब का इशारा पाकर वह उन्हें प्रणाम करते हुए कमरे से बाहर निकलता चला गया।

अपने दफ्तर में पहुंचकर उसने एक सिग्रेट सुलगाया।

और फिर कुर्सी की पुश्त से टिककर विदेश मन्त्री के कत्ल के विषय में सोचने लगा।

विदेश मन्त्री की कोठी के अतिरिक्त दो और इमारतें भी मलबे के

ढेरों में परिवर्तित हो गई थीं।

टाईम बम बहुत ही शक्तिशाली था।

पुलिस के देवताओं को भी इस बात का सन्देह नही था—कि हमला इस अन्दाज में किया जाएगा।

उसका सारा ध्यान विदेश मन्त्री की कोठी पर लगा रहा था और चालाक अपराधी अपना काम कर गुजरा था और उसके बाद बराबर खामोशी थी। अन्धकार था और इसी अन्धकार में फैयाज अन्धों की तरह हाथ पाव मार रहा था अन्धकार में उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

इमरान का विचार भी उसके मस्तिष्क में आया था—।

परन्तु इस समय वह उसकी सहायता लेने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था—।

जब तक नौकरी को खतरा ही न आजाए वह इमरान से दूर ही रहना चाहता था !

वह सोचता रहा—।

और फिर अचानक उसके विचारों का धाराएं मनोहर दास से जाकर टकराई मनोहर दास जो स्वंय को सबके सामने अपने धर्म का पालक और प्रचारक प्रकट करता था—।

किन्तु वास्तव में जो एक शैतानी धर्म का प्रचार कर रहा था।

अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने खुल्लम खुल्ला लैंगिक सम्बंध का ढंग अपनाया था, कामी और बिगड़े हुए धनी धड़ा धड़ उसके भक्त बनते जा रहे थे।

और मनोहर दास बड़े सन्तोषपूर्वक अपना उद्देश्य पूरा कर रहा था।

परन्तु वह उद्देश्य क्या था···वह क्यों ऐसा कर रहा था ? वह क्या करने वाला है ? क्या चाहता है ? उसके इस शैतानी प्रचार का अर्थ क्या है ? यह फैयाज की बुद्धि से बहुत दूर था।

और फैयाज बहुत देर तक इसी प्रश्न पर सोचता रहा।

सलवाना जेम्स की ओर देखकर मुस्कराई।

फिर सिग्रेट का धुआ होठों से उगल कर उस ने कहा।

'सचमुच बौस ग्रेट है। विदेश मन्त्री को कत्ल करके उसने बड़ी योग्यता का सबूत दिया हैं।'

'हां जबतक हम देश के क्रान्ति लाने में सफल नहीं हो जाते—'

जेम्स ने कहा—

'तो यह बहुत आवश्यक है कि सरकार का ध्यान विदेशी मामलो की ओर उलझा रहे इस प्रकार हम आसानी से अपने ध्येय तक पहुंच जायेगे।'

'बिल्कुल ठीक—'

सलवाना बोली।

'विदेश मन्त्री के कत्ल के बाद बाहरी सम्बन्ध ठीक होने का प्रश्न ही नहीं उठता नए विदेश मन्त्री के चुनाव के बाद यदि सन्धि की कोशिश की भी गई तो कुछ न कुछ समय तो अवश्य लगेगा उस समय तक सरकार बराबर हमले से बचने और विदेशी आक्रमण के मुकाबले की तैयारी करती रहेगी और हम अपनी तैयारी करते रहेंगे।

'ईश्वर करे ऐसा ही हो।

जेम्स बोला—

'ऐसा ही होगा—'

सलवाना ने कहा।

'शासक पार्टी के कुछ जनो के अतिरिक्त पुलिस और सेना के कुछ आफीसर भी हमारे संघ के सदस्य भी बन चुके हैं आवश्यकता केवल इस

बात की है कि कुछ महत्वपूर्ण या उंच्च अधिकारी लोग और हम से आ मिले जिस दिन यह काम हो जाएगा बस इन्कलाब ही आजएगा। संसार की कोई शक्ति इस मार्ग में रोड़ा नहीं अटका सकेगी—'

'हुम !'

जेम्स ने हूंकारा भरा और फिर कुछ सोचने लगा। फिर इसी तरह कुछ देर सोचता रहा।

फिर अचानक उसने पूछा।

'पाऊल (Paul) के बारे में तुमने क्या सोचा उसके विषय में बौस को बताया जाए या नहीं—?'

'पाऊल के विषय में—'

सलवाना ने उत्तर दिया।

'मैं सोच रही हूं कि उसके बारे में मुझे बौस को सूचित कर देना चाहिए—'

हां वह अब दिन प्रति दिन कायर होता जा रहा है—'

जेम्स ने चिंतित स्वर में कहा।

'उसकी कायरता बहुत खतरनाक सिद्ध हो सकती है उसकी कायरता संघ के लिए हानिकारक भी सिध्द हो सकती है।'

'मै बौस से बात करुंगी…'

वह बोली—

'हर बात मेरे सामने…मैं मूर्ख नहीं हूं…'

'यह मैं जानता हूं—'

जेम्स मुस्कराया।

'कि तुम बहुत चालाक हो शायद शैतान भी तुम्हारा चालाकियों से पनाह मांग जाए। उचित यही होगा कि तुम बौस को सारी बातों से सूचित कर दो।'

जेम्स ने मानों परामर्श दिया। फिर वह बड़ी ही विचित्र निगाहों से

उसे देखने लगा।

अचानक सलवाना ने उसे घूरते हुए कहा।

'क्या तुम व्यर्थ में ही स्वयं को कठिनाईयों में उलझाना चाहते हो।

'नन'''नहीं तो मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा साफ साफ कहो !'

'अपनी निगाहों को संभालो मैं गुस्ताख निगाहे पसंद नहीं करती।'

सलवाना ने कहा।

'ओह !'

जेम्स झेंप गया।

फिर कुछ देर रुक कर उसने कहा।

'आश्चर्य है कि तुम एक सभ्य और उन्नति शील देश की होती हुई ऐसी छोटी छोटी बातो को महत्व देती हो।'

आवश्यक नहीं कि हर एक मामले में मैं अपनी जाति के पद चिन्हों पर ही चलूं।'

सलवाना ने शुष्क स्वर में उत्तर दिया।

फिर इस से पहले कि जेम्स कुछ और कहता सलवाना का नौकर काफी की ट्राली ढकेलता हुआ अन्दर आ गया।

उसे देखकर वह खामोश ही रहा।

नौकर ने वहां से जाने से पहले हाथ के इशारे से और कढ़ से विचित्र विचित्र सी आवाजे निकाल कर पूछा—कोई और काम मेरे लिए हो तो बताएं।

और फिर सलवाना से आज्ञा लेकर वह बाहर चला गया।

उसके जाने के बाद जेम्स ने कहा।

'मुझे तुम्हारा यह गूंगा नौकर बिल्कुल पसंद नही है।'

'कारण ?'

'इसके शरीर में किसी शैतान की आत्मा मालूम होती है।'

जेम्स ने कहा।

सलवाना हंसने लगी।

'तुम्हारा विचार हैं।'

उसने कुछ रूक कर कहा।

अन्यथा गोम्स तो बेचारा बड़ा सीधा सादा और वफादार नौकर हैं।

मेरा दावा है कि वह बहुत खतरनाक आदमी हैं बहुत ही खतरनाक

जेम्स ने कहा।

'तुमने शायद कभी उसकी आंखों मे ध्यान से नहीं देखा जिनसे हर समय शैतानी चमक लहराया करती हैं।'

होगी।'

सलवाना उकताए हुए स्वर में बोली।

'कम से कम मैं उससे कोई खतरनाक बात या कोई गहरा खतरा अनुभव नहीं करती।'

'तुम उसे छुट्टी क्यों नहीं नहीं दे देती।'

जेम्स ने कहा।

'कहा ना कि मैं उससे अपने लिये कोई खतरा अनुभव नहीं करती!

उसने उत्तर दिया।

फिर वह कौफी तैयार करने लगी।

जेम्स उसकी सुन्दर उंगलियों को देखता रहा। और मुस्कराता रहा।

फिर उन दोनों ने कौफी खामोशी के साथ ही पी थी काफी खत्म करने के बाद वह सिग्रेट पीने लगा।

अचानक गूंगा गोम्स एक बार फिर कमरे के अन्दर आ गया—इस बार उसके हाथ में किसी का विजिटिंग कार्ड भी था।

फिर उसने कार्ड सलवाना के हाथ में थमा दिया और खामोश खड़ा हो गया।

'पाञ्झल है।'

सलवाना जेम्स की ओर देखकर अर्थ पूर्ण अन्दाज से मुस्कराई!

'कायर आदमी।'

जेम्स घृणित स्वर में बोला।

'यह अवश्य संघ का कबाड़ा करेगा।

फिर अचानक उसे गोम्स का ध्यान आ गया।

और वह उसे घूरने लगा।

'चिन्ता मत करो।'

सलवाना मुस्कराती हुई बोली

'यह बेचारा गूंगा होने के साथ साथ बहरा भी है फिर गोम्स को इशारों में समझाते हुए उसने कहा।

'उसे यहीं भेज दो।' गोम्स ने सर को झुका कर हां की।

फिर वह कौफी के खाली बर्तन ट्राली में रखकर उसे ढकेलता हुआ कमरे से बाहर चला गया...।

'पूरा शैतान है।'

उसके जाने के बाद जेम्स बड़बड़ाया।

और सलवाना के होठों पर फैली हुई मुस्कान कुछ और गेहरी हो गई।

फिर कुछ क्षणोंपरांत ही पाऊल आ गया।

यह वही व्यक्ति था जो एक बार जेम्स से अपने सन्देह का प्रदर्शन कर चुका था।

उनके मध्य इधर उधर की बाते शुरू हो गई।

काफी देर तक इधर उधर की बाते होती रही।

फिर वार्तालाप का विषय संघ की ओर बदल गया।

सलवाना ने पाऊल से असली उददेश्य की ओर आते हुए कहा।

'मैंने सुना है तुम्हारे विचार संघ की ओर से अच्छे नहीं है क्या यह सच हैं।

'गलत सुना हैं तुमने—'

पाऊल बोला।

मेरे विचार संघ के विषय में ऐसे नहीं है हां मैंने खतरों के बारे में अवश्य सोचा है जो हममें से किसी को भी किसी समय पेश आ सकते हैं। यह खतरे हर समय हमारे सर पर मडंलाते रहते है।'

मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी तुम्हारा इशारा किन खतरो की ओर है

आरथर्ड की तरह हममें से कोई भी अपनी भूल का शिकार हो सकता है फिर क्या तुम समझती हो कि हमारा परिणाम उससे भिन्न होगा।'

मनुष्य यदि सावधान और चौकन्ना रहने का अभ्यस्त है तो इस प्रकार की सम्भावना पैदा ही नहीं होती।'

सलवाना ने उत्तर दिया।

क्या तुम यह समझती हो कि आरथर्ड सावधान और चौकन्ना नहीं था।

बिल्कुल—अन्यथा पुलिस उसके पीछे क्यों लगती सलवाना ने कहा।

'इन्सान गलतियों का पुतला कहलाता हैं पाऊल का स्वर कटु और व्यगांत्मक था।

'वह देवता नहीं है जो गलती कर ही न सके।'

'गलतियां विभिन प्रकार की होती हैं।

सलवाना ने भी कटु स्वर में कहा।

'उससे कोई साधारण गलती नहीं हुई थी अपनी किसी मूर्खता के कारण वह पूरे संघ के लिये खतरा बन बैठा था।'

'इस तरह तो हम भी खतरा बन सकते हैं।

पाऊल बोला।

'फिर यह होगा कि बौस के पिस्तोल की गोलियां हमारी खोपड़ी पर भी एयर कन्डीशन बना सकती है।'

'हुम।'

सलवाना चिढ़ सी गई।

'आखिर तुम चित्र का अन्धेरा भाग ही क्यों देख रहे हो।'

'इसलिए कि हमारे सामने वही भाग है।

पाऊल ने कहा ।

'हो सकता है कि किसी समय संघ अपने उद्देश्य में सफल हो जाए- परन्तु उस समय तक हमारे जीवन तलवार की तेज धार पर से गुजरते रहेंगे क्या मेरा विचार गलत है क्या यह नहीं हो सकता कि हमारे कारनामे सरकार की नजरों में आ जाए और संघ के साथ ही हम भी खत्म हो जाए–या यह असम्भव है कि हम में से किसी से कोई गलती हो न हो फिर ऐसी सूरत में बौस हमें जीवित छोड़ेगा ।'

'मैं तुम्हारा मतलब समझ रही हूँ !'

सलवाना ने गम्भीरता से सर हिलाया ।

जेम्स के होठों पर बड़ी ही विचित्र से मुस्कान फैली हुई थी !

पाऊल को सम्बोधित करके उसने पूछा—

'तुम संघ से अलग क्यों नहीं हो जाते ?'

'ओह—क्या हम में से कोई इसका साहस कर सकता है !'

'क्या मतलब ?'

'क्या तुम यह समझते हो कि बौस इस बात को सहन कर लेगा—'

पाऊल ने कहा ।

'क्या उसके पिस्तोल की गोलियां हमारी खोपड़ी को तोड़ कर न रख देंगी !'

'आवश्यक नहीं कि वह तुम्हें इतना ही महत्वपूर्ण समझता हो—

जेम्स ने पाऊल से कहा—

'बुद्धि प्रयोग करो दोस्त—!'

पाऊल ने कहा—

'आरथर्ड के बाद केवल हम तीन ही व्यक्ति ऐसे हैं—जो उसके राज और इरादों से परिचित हैं—फिर क्या वह ऐसे राजदारों को जीवित छोड़ेगा—जो उससे अलग होकर उसके लिए खतरा बन गया हो !'

'तुम्हारा विचार बिल्कुल ठीक है—!'

सलवाना एक लम्बी सांस लेकर बोली—

'हम में से कोई भी संघ से अलग होकर जीवित नहीं रह सकता !'

फिर सिग्रेट होंठो से लगाकर उसने उसे लाईटर का शोला दिखा दिया—।

और होंठों से नीला नीला धुआं उगल कर कुर्सी की पुश्त से पीठ टिका ली !

●●●

जूलिया की निगाहें हीटर पर उबलते हुए काफी के पानी पर थीं !

और उसका मस्तिष्क मौजूदा केस की गुत्थियां सुलझाने में व्यस्त था !

सबसे पहले विदेश मन्त्री पर असफल कातिलाना हमला हुआ था—इसके बाद यह हुआ कि उनको दूसरी कोठियों के साथ शक्तिशाली टाईम बम की सहायता से उड़ा दिया गया ! फिर एक्स्टू ने आदेश दिया था कि शहर के प्रसिद्ध धनी और व्यापारी सर आरथर्ड पर गहरी नजर रखी जाए !

और उसने तनवीर को उसकी निगरानी पर नियुक्त कर दिया था—।

और तनवीर बराबर निगरानी कर रहा था !

तनवीर से मिलने वाली सूचनाओं को वह बड़ी पाबन्दी से एक्स्टू तक पहुंचाती रही थी।

उन लोगों के नाम व पते भी उसने अपने चीफ तक पहुंचा दिए थे

—परन्तु फिर दूसरे दिन इन सूचना का सिलसिला खत्म हो गया था।

तनवीर पुलिस को सड़क के पास गढ़े में अचेत और घावों से चूर पड़ा मिला था।

और सर आरथर्ड की लाश एक उजाड़ स्थान पर उसकी कार के डिके में पाई गई थी।

दोनों समाचार जूलिया को स्वयं एक्स्टू ने पहुंचाए थे! यह समाचार एक्स्टू ने फोन के द्वारा दी थीं।

और इसके बाद खामोशी छा गई थीं।

जूलिया मन ही मन सोच रही थी—पता नहीं एक्स्टू क्या करता फिर रहा है!'

इमरान के विषय में भी उसे कुछ मालूम नहीं था कि वह किस काम पर नियुक्त है!'

एक बार सफदर से बस इतना समाचार मिला था—कि इमरान उससे विदेश मन्त्री की कोठी के निकट टकराया था।

उस समय वह मेक अप में था।

और सफदर को वापिस भेज कर उस व्यक्ति के पीछे लग गया था —जो बहुत देर से विदेश मन्त्री की कोठी में दिलचस्पी ले रहा था!

उसके बाद इमरान के विषय में भी कुछ मालूम नहीं हो सका था—और अब जूलिया सोच रही थी कि अजीब केस है—जिसका न कोई सर है—ना पाँव है।

अपने लिए कौफी का प्याला तैयार करके वह कमरे में आ गई।

उसने मन ही मन में सोचा।

शायद एक्स्टू भी इस बार हाथ पर हाथ रख कर बैठ गया है— अन्यथा वह और उसके साथी व्यर्थ में बैठे मक्खियां नहीं मार रहे होते!

अचानक उसके विचारों का तारतम्य टूट गया।

टेलीफोन की घन्टी बस अचानक ही बजने लगी थी—जूलिया ने

हाथ जल्दी जल्दी कौफी पीने में व्यस्त हो गए !

जूलिया ने कौफी का अंतिम घूंट गले से उतारा और खाली प्याला छोटी मेज पर रखदी ।

फिर तेज तेज कदमों से चलती हुई वह टेलीफोन के पास पहुँच गई—।

टेलीफोन की घन्टी बराबर बज रही थी ।

फिर रिसीवर उठाकर उसने माऊथ पीस में कहा ।

'इट—इज जूलिया स्पीकिंग !'

'एक्सटू—'

दूसरी ओर से उसके चीफ की आवाज सुनाई दी ।

'ओह'''गुड इवनिंग सर—'

जूलिया ने जल्दी से कहा ।

'फरमाईए !'

'पता नोट करो—'

रिसीवर पर एक्सटू की आवाज उभरी ।

'नम्बर थरटीन'''बेकर स्ट्रीट'

और जूलिया ने जल्दी से मेज पर पड़े राईटिंग पैड को अपने निकट करते हुए एक्सटू का बताया हुआ पता नोट कर लिया ! पता नोट करने के बाद उसने माऊथ पीस में कहा ।

'यस !'

'इस इमारत में सलवाना नामक एक स्त्री रहती है'

एक्सटू की आवाज उभरी'''।

'जी !'

सलवाना ने नाम नोट करते हुए बस इतना ही कहा और फिर ध्यान से एक्सटू का सन्देश सुनने लगी ।

'उस पर कड़ी नजर रखने की आवश्यकता है । वैसे मैं उसके दोस्तो

की निगरानी की आवश्यकता भी अनुभव कर रहा हूं…!'

'ठीक है सर…'

जूलिया ने कहा।

'दूसरी बात !'

एक्स्टू ने कहा।

'सातवें मार्ग की ग्यारहवीं इमारत में…'

दूसरी ओर से एक्स्टू की आवाज आती रही।

और जूलिया बड़े ध्यान से उसके आदेश सुनती और लिखती रही।

फिर अपने आफीसर के खामोश हो जाने के बाद उसने केवल इतना कहा।

'मैं समझ गई सर…सफदर आदि तक आपके सन्देश अभी पहुंचाए देती हूं…'

'ठीक है—उन्हें चौकन्ना रहने की आवश्यकता है—खेल बिगड़ जाने की सूरत में मैं किसी को क्षमा नहीं करूंगा !'

एक्स्टू ने कटु स्वर में कहा।

राईट सर—जूलिया ने कहा।

'रिपोर्ट देने के लिए टेलीफोन का प्रयोग मत करना—'

दूसरी ओर से एक्स्टू का स्वर सुनाई दिया—

अब मैं ट्रांसमीटर पर ही मिल सकूंगा,

'राईट सर !'

जूलिया ने सर हिलाते हुए कहा—

'और कोई आज्ञा !'

'हर निगरानी करने वाले को सावधान रहना बहुत आवश्यक है—'

एक्स्टू ने दोबारा कहा—

'हर प्रकार के खतरों से चौकन्ना रहना होगा। खेल न बिगड़ने पाए। चौकन्ना रहना जरूरी है।'

'ठीक है—और कोई आज्ञा !'

'बस—!'

दूसरी ओर से कहा गया।

फिर पूर्व इसके कि जूलिया कुछ कहती फोन का सम्बन्ध विच्छेद हो चुका था।

और फिर उसने एक लम्बा सांस लेकर रिसीवर क्रेडल पर रख दिया

अब वह सफदर के नम्बर डायल कर रही थी।

और फिर उसे एक्स्टू के आदेशों से सूचित करने के बाद जूलिया ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया—फिर सिद्दीकी के नम्बर डायल करने लगी।

उसके बाद उसे शेष साथियों तक भी एक्स्टू के सन्देश पहुंचाने थे !

★ ★ ★

सलवाना ने मुस्कराते हुए कहा।

'आपके लिए एक शुभ समाचार है बौस !'

बौस उसकी ओर प्रश्नात्मक निगाहों से देखने लगा !

वह बोली।

'परसों रात मैं ब्रगेडियर सिद्दीकी को उस इमारत के निचले भाग में लेकर जा रहीं हूं !'

'ओह !'

बौस कुछ व्याकुल सा नजर आने लगा।

'क्या यह खतरनाक नहीं होगा !'

'आप सन्तुष्ट रहिए—'

सलवाना मुस्कराई

उसके देवता भी संघ का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे'

'क्यों··· ?'

बोस ने सलवाना की आंखों में देखते हुए कहा।

'क्या उसके जरा से इशारे पर पुलिस और सेना हैडक्वार्टर पर नहीं बढ़ दौड़ेगी'

'मुझपर भरोसा कीजिए !'

सलवाना ने बड़े सन्तोष के साथ कहा।

'वह इसका साहस नहीं कर सकेगा'

'मुझे तुम पर भरोसा है—'

बोस ने कहा।

'किन्तु मैं इस विश्वास का कारण अवश्य जानना चाहूंगा

पिछले आठ दिनों में वह दो बार मेरे घर आ चुका है'

सलवाना फिर मुस्कराई।

'और दोनों बार जिस तरह मैंने उसकी सेवाएं की हैं यह मैं ही जानती हूं !'

और फिर वह बोली।

और उन सेवाओं को मेरे आटोमेटिक केमरे ने सदा के लिए सुरक्षित कर लिया है !'

'ओह !'

बोस की आंखे चमकने लगीं।

कुछ क्षणोपरांत वह बोला।

'तुम वास्तव में प्रशंसा की पात्र हो सलवाना—संघ के लिए तुमने यह बहुत बड़ा बलिदान किया है !'

'किसी महान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बलिदान तो देना ही पड़ता है बोस !'

सलवाना ने कहा।

'और मैंने केवल अपने कर्तव्य का पालन किया है—और बस !'

संघ तुम्हारे इस बलिदान और सेवाओं को सदा याद रखेगा—'

बौस ने कहा ।

'सफल होने के बाद तुम्हें बहुत बड़ा सम्मान दिया जाएगा !'

'धन्यवाद बौस—'

सलवाना ने गर्वित स्वर में कहा—

'मुझे किसी सम्मान की आवश्यकता नहीं—मैं तो बस मौजूदा सरकार का तख्ता उलटते देखना चाहती हूं'

'सन्तुष्ट रहो—हम सफल होंगे—'

बोस ने बड़े विश्वास के साथ कहा ।

'और अवश्य होंगे—संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति भी हमें रोकने में सफल नहीं हो सकती'

फिर कुछ क्षणों के बाद वह बोला ।

'तुम्हें विश्वास है कि सिद्दीकी हमारे इस संघ के लिए लाभ दायक सिद्ध होगा'

'अवश्य बौस—'

सलवाना ने विस्तार से बताते हुए कहा ।

'वह स्वयं भी मौजूदा सरकार की कुछ नीतियों से सहमत नहीं है । वैसे यदि वह खुशी से तैयार नहीं हुआ तो फिर भी उसे हमारा साथ देना पड़ेगा—जाहिर है यह तो वह कभी पसंद नहीं करेगा—कि वह फोटो उसके कमान्डर इन्चीफ के सामने पेश कर दी जाए''' और उसका कोर्ट मार्शल हो जाए'''

'मैं समझ रहा हूं !'

बौस ने हुँकारा भरा ।

फिर सलवाना बोली ।

'इसकी आवश्यकता भी नहीं थी कि उसे यहां लाया जाता

'''परन्तु मैं चाहती हूं—कि पापों में बोझ तले दबकर उसकी आत्मा इतनी निर्बल हो जाए'''कि उसमें बिल्कुल भी शक्ति न रहे—और बस फिर —सफलता सफलता है !'

'यही उचित रहेगा'

फिर उसने कहा।

'सिद्दीकी हम से आ मिला'''तो इसका स्पष्ट अर्थ यह होगा कि पूरा ब्रिगेडियर हम से आ मिला है !'

'अवश्य बौस'''

सलवाना जल्दी से बोली।

'कई बड़े आफीसर पहले ही संघ के दोस्त बन चुके हैं'''सिद्दीकी के फंस जाने के बाद हम बड़ी आसानी से मौजूदा सरकार का तख्ता उलट देने में सफल हो जाऐगें'''

गुड'''तुम बहुत चालाक और तेज हो सलवाना'''साथ ही बुद्धिमान भी !

'बौस ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा।

'यह संघ का सौभाग्य है कि उसे तुम जैसी लड़की का सहयोग प्राप्त है'

आप तो मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं बौस'

'नहीं'''

बौस ने कहा।

'मैं तुम्हारी बुद्धि का समर्थन कर रहा हूं। और तुम्हारी इसी योग्यता के कारण मैंने सदा ही तुम्हें सराहा है'

'धन्यवाद बौस'''

सलावाना ने मुस्कराते हुए हलके से सर को झुकाया।

फिर उनके मध्य संघ के विषय में ही अन्य वार्तालाप होने लगी।

काफी देर तक उनमें विभिन्न प्रकार की बातें होती रहीं—

सहसा ही सलवाना कुछ सोचते हुए बोली।

'मै आपका ध्यान एक दूसरे खतरे की ओर दिखाना चाहती हूं बौस—'

'मै समझा नहीं—'

बौस ने कुछ न समझते हुए कहा।

'पाऊल है ना—?,

सलवाना ने कहा।

'हां—हां—कहो—'

बौस जल्दी से पूछा।

'क्या हुआ पाऊल को—उसको क्या खतरा आ गया!'

'पाऊल खतरनाक है—'

'साफ साफ कहो कि तुम क्या कहना चाहती हो!'

बौस ने कटु स्वर में कहा—

'पाऊल किसी समय भी संघ के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

सलवाना ने बताया।

'आरथर्ड के कत्ल के बाद से उसके विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया है!'

और बौस उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखने लगा!

सलवाना उसे पाऊल के विषय में बताने लगी।

फिर अंत में उसने कहा।

'वह संघ से काफी घृणा करने लगा है बौस। वैसे वह आपसे बहुत भयभीत है--अन्यथा वह कब का संघ से अलग हो चुका होता—और उस का सबसे बड़ा कारण आरथर्ड है—उसके कत्ल ने उस पर बहुत बुरा प्रभाव डाला है'

आरथर्ड का कत्ल हर हालत में आवश्यक था। उसका जीवन संघ की

मृत्यु भी बन सकती थी।'

बौस का स्वर चिंतित था।

'और मैंने जो कुछ किया ठीक ही किया। परन्तु पाऊल के विषय में तुमने बुरी खबर सुनाई है'

'मैं स्वयं उसकी ओर से परेशान हूं—'

सलवाना बोली।

'कठिनाई यह है कि अभी संघ को उसकी आवश्यकता है—अन्यथा उसे भी अ रथर्ड के पास पहुंचाया जा सकता था'।

'हां—मैं तुमसे सहमत हूं—

बौस ने कहा।

मुझे सन्देह है कि किसी समय वह कोई गलत कदम न उठा बैठे—'

सलवाना बोली।

'और वह कदम हमारे लिए खतरनाक हो जाए।

'मुझे इसकी चिन्ता नहीं—'

बौस बोला।

'पुलिस के दूत भी मेरे विरुद्ध कुछ सिद्ध नहीं कर सकते—'

वह खामोश होकर कुछ सोचने लगा!

कुछ देर बाद उसने कहा।

'अभी चलने ही दो—सघ को उसकी आवश्यकता है—वैसे जब भी उसने कोई गलत कदम उठाने की कोशिश की तो देख और समझ लिया जाएगा!'

'ठीक है बौस!'

सलवाना ने कहा।

'मेरा अपना भी यही विचार है'

फिर वह दूसरी समस्याओं पर बातें करने लगे थे—और उसकी बातों का सिलसिला एक घन्टे तक समाप्त नहीं हो सका था—।

फिर सलमाना बौस से बिदा हो गई।

★ ★ ★

आकाश पर यद्यपि बादल नहीं थे।

किन्तु चन्द्रमा की क्योंकि अंतिम तिथियाँ थीं। इसलिए वह इलाके जहाँ बिजली का कोई प्रबन्ध नहीं था अन्धकार में डूबे हुए थे।

सातवे मार्ग पर हर कुछ कदम की दूरी पर इलैक्ट्रिक पोल थे—परन्तु पता नहीं लाईन में क्या खराबी हो गई थी कि पिछले दो घन्टे से पूरा इलाका अन्धकार पड़ा था!

स्ट्रीट लाईट के अतिरिक्त इमारतों में भी बिजली की रोशनी की कोई किरन नहीं थी।

सहसा ही अन्धकार में डूबी हुई सड़क रोशन हो गई। यह किसी कार की हैड लाइटस् थीं—जिसने दूर दूर तक अन्धकार को तोड़ कर रख दिया था।

फिर कार निकट आ गई!

एक विशेष स्थान पर पहुंचकर उसे खड़ा कर दिया गया—और फिर उसकी रोशनियां खत्म हो गई!

दो आदमी नीचे उतरे—यह दोनों काले वस्त्र पहने हुए थे—फैल्ट हैट भी काले रंग की थीं जिन्होंने उनके ललाट पूरी तरह छिपा रखे थे। काले अलास्टरों के कालर ऊपर उठे हुए थे जिनके कारण उनके चेहरों के बहुत कम भाग नजर आ रहे थे!

थोड़ी दूर तक चलते रहने के बाद वह एक इमारत में पहुंचकर रुक गए।

'वही है ?!

उनमें से एक ने आहिस्ता से पूछा।

'हां—'

दूसरे ने शुष्क स्वर में कहा।

'क्या तुम यह नम्बर लिखे नहीं देख रहे हो'

'पहला केवल अपने कन्धे उचका कर रह गया था।

कुछ क्षणों के बाद उसने पूछा।

'यदि अन्दर भयानक और खतरनाक कुत्तों का सामना हो गया तो—'

'मैं दिन में देख चुका हूं—'

दूसरे ने बताया।

और अच्छी तरह देख चुका हूं कि इस इमारत में कुत्ते नहीं हैं'

फिर चारों ओर निगाहें डालकर उसने पंजो के बल उचक कर दोनों हाथ बाऊन्डरी वाल पर जमाए।

हथेलियों पर शरीर का बोझ डालकर स्वयं को ऊपर उठाया—और दीवार पर पहुंच गया!

'तुम भी आजाओ!'

उसने अपने साथी को सम्बोधित करके कहा।

फिर वह दूसरी ओर कूद गया।

कुछ क्षणों के बाद उसका दूसरा साथी भी उससे आ मिला—अब वे दोनों इकट्ठे थे!

वह सावधानी के साथ इमारत की ओर बढ़ने लगे।

सहसा ही दूसरे आदमी ने पूछा।

'पिस्तोल लाए हो ?'

हां—'

उसने बताया!

'और साईलैंसर भी फिट कर लिया है'

'गुड—'

वह बोला।

'होशियार रहना—सम्भव है इसकी आवश्यकता ही पड़ जाए'

'चिन्ता मत करो—'

पहले ने उत्तर दिया

'ऐसे अवसर पर तुम मुझे चौकन्ना ही पाओगे'

असली इमारत छोटी सी ही थी।

कौरिडोर में केवल तीन कमरों के ही दरवाजे ही नजर आ रहे थे!

एक दरवाजे के सामने पहुंचकर वह रूक गए।

दरवाजा भिड़ा हुआ अवश्य था।

परन्तु ढकेलने से मालूम हुआ कि अन्दर से बन्द नहीं है।

वे अन्दर प्रविष्ट हो गए।

बिस्तर पर एक व्यक्ति गहरी निन्द्रा में सो रहा था—अचानक उसने सोते में करवट बदली!

और ठीक उसी समय उनमें से एक ने क्लोरो फार्म में बसा हुआ रूमाल उसकी नाक पर रख दिया! दूसरा पिस्तोल पकड़े द्वार के निकट खड़ा रहा था!

कुछ ही देर बाद सोने वाला अचेत हो गया! उसे अचेत करने वाले ने रूमाल जेब में रखा—और अचेत आदमी उठाकर पीठ पर लाद लिया

अब निकल चलो।

उसने अपने साथी से कहा।

वह कमरे से निकल कर कौरिडोर में आगए—।

दूसरा व्यक्ति अभी तक पिस्तोल को थामे हुए था!

कम्पाऊन्ड वाल के निकट पहुंचकर उसने पूछा।

'अब इसे दूसरी ओर किस तरह पहुंचाओगे। मेरा विचार है काफी वजनदार आदमी है'

हां तुम दीवार पर चढ़ जाओ'

'ओह—किन्तु उसे खींचते हुए यदि मैं स्वयं ही लुढ़क गया—!'

'तो टूट फूट की सारी जिम्मेदारी एक्स्टू पर होगी—चलो जल्दी करो'

'लानत है ऐसी नौकरी पर—'

पिस्तौल वाला बुरा सा मुंह बनाकर बड़बड़ाया।

किन्तु दीवार पर भी उसे चढ़ना ही पड़ा था।

किसी न किसी तरह उन दोनों ने मिलकर अचेत व्यक्ति को सड़क पर पहुंचा दिया—।

फिर सड़क पर आकर वह उस ओर चलने लगे''जहां वे लोग अपनी कार खड़ी कर गए थे।

अचेत व्यक्ति अब भी पहले की ही पीठ पर था।

और तेज तेज कदम उठाते हुए वह लोग कार तक पहुंच गए।

अचेत व्यक्ति को कार की पिछली सीट पर डालकर उसने कहा।

'अब निकल चलो'''हमें जल्दी से जल्दी हैडक्वाटर पहुंचना है'

उसके साथी ने ड्राईविंग सीट पर बैठकर इन्जिन स्टार्ट कर दिया''' कार का इन्जिन एक गरजदार आवाज के साथ जाग उठा।

फिर कार की हैड लाईटस् रोशन की और गियर बदल कर एक्सीलैटर पर पांव का दबाव डाल दिया।

सुनसान और उजाड़ सड़क पर कार तेजी से फर्राटे भरने लगी।

कुछ देर बाद ड्राईवर ने कहा।

'यार सफदर'''तुम इस जीवन से कभी उकताहट अनुभव नहीं करते ?'

'नहीं—सच पूछो तो मैं इस जीवन से सन्तुष्ट हूं—जिस जीवन में हलचल न हो—हंगामे न हों, खतरे न हों—वह जीवन मेरी नजरों में

कोई महत्व नहीं रखता यूं समय भी ठाठ से गुजरता है दूसरे विभागों में किसी बड़े बड़े ग्राफीसर को भी इतना बड़ा वेतन नहीं मिलता होगा'

'सो तो ठीक है—'

ड्राईवर ने कहा।

'परन्तु यह एक्स्टू—उसके कारण कभी २ ग्रात्म हत्या कर लेने को मन चाहता है'

'इसके विपरीत मुझे उससे कभी मामूली सी शिकायत भी नहीं हुई'

वह बोला ग्रौर फिर उसने कहा।

यार सिद्दीकी—तुम्हारी खोपड़ी में कभी कभी तनवीर का दिमाग क्यों समा जाता है'

'यह बात नहीं—'

ड्राईवर ने कहा।

'ग्रब तनवीर का उदाहरण ही लेलो—क्या उसके मर जाने में कोई कमी रह गई थी'

समय से पहले कोई नहीं मरता दोस्त—'

सफदर ने मुस्कराते हुए कहा।

'यदि इस हकीकत को पहचान जाग्रो तो सदा के लिए निश्चिंत हो जाग्रोगे'

सिद्दीकी खामोश रहा।

कार तेजी से दानिश मंजिल की ग्रोर दौड़ती रही।

फिर वे हैडक्वार्टर पहुंच गए।

ग्रचेत व्यक्ति को एक कमरे में पहुंचाकर सिद्दीकी ने पूछा।

'क्या तुम इस कमीने के ग्रपहरण का कारण बता सकते हो। इसका क्यों ग्रौर किस लिए ग्रपहरण किया गया है'

'वही विदेश मन्त्री के कत्ल वाला मामला होगा'''

सफदर ने कुछ सोचते हुए कहा।

'एक्स्टू आजकल उसी के चक्कर में उलझा हुआ है'

'पता नहीं'

सिद्दीकी बड़बड़ाया।

'यह एक्स्टू आजतक मेरी समझ में नही आसका'

हमें आवश्यकता भी नहीं है कि उसे समझते फिरे।'

सफदर ने बात खत्म करने वाले स्वर में कहा।

'हमें इस बात से कोई मतलब भी नहीं है'

और सिद्दीकी बुरा सा मुंह बनाकर रह गया!

फिर वे फोन वाले कमरे में पहुंच गए!

सफदर ने सिग्रेट सुलगाकर फोन का रिसीवर उठाया और जूलिया के नम्बर डायल करने लगा!

फिर सम्बन्ध स्थापित होने पर उसने कहा—

'मैं सफदर बोल रहा हूं—'

वह फोन पर बोला—

'मुझे दुख है कि तुम्हें सोते हुए से जगाया परन्तु यह सूचना देनी भी बहुत आवश्यक थी – कि मैं और सिद्दीकी उसका अपहरण करके दानिश मन्जिल ले आए हैं—और अब हमें क्या करना है'

'ठीक है'

जूलिया की आवाज आई।

'मैं इसकी सूचना एक्स्टू को दे देती हूं'

'अवश्य दो'

सफदर ने कहा और फिर पूछा।

'परन्तु क्या हम लोगों को यहीं ठहरना पड़ेगा'

'मेरा विचार है'''यह आवश्यक नहीं है'

जूलिया ने कहा।

'परन्तु ठहरो'''एक्स्टू से मालूम करके मैं तुम्हें कोई उत्तर दे

सकूंगी'

'ओ० के०'

सफदर बोला

'मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं'

और फिर उसने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया !

फिर कुछ ही देर बाद फोन की घन्टी बज उठी'''।

सफदर बड़ी फुर्ती से फोन की ओर लपका !

दूसरी ओर जूलिया ही थी। वह कह रही थी।

तुम और सिद्दीकी अब जा सकते हो। एक्स्टू ने यही कहा है'

'धन्यवाद !

सफदर ने कहा

और फिर सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

फिर वह दोनों ही कमरे से बाहर निकलते चले गए।

★ ★ ★

इमरान ने पब्लिक टेलीफोन बूथ में घुसकर हुक से लटका हुआ रिसीवर उतारा और मशीन में सिक्के डालकर ब्लैक जीरो के नम्बर डायल करने लगा।

सम्बन्ध स्थापित होने पर उसने माऊथ पीस में कहा।

'इमरान'''! क्या समाचार है'

सलवाना पिछली रात फिर उसी इमारत में गई थी'''सर दो घन्टे तक वह वहाँ रही'''उससे पहले ब्रिगेडियर सिद्दीकि ने उससे मुलाकात की थी।'

'उसकी मुलाकात का मुझे पता है'

इमरान ने कहा।

'सफदर आदि का क्या रहा ?'

'वह सफल रहे सर—'

ब्लैक जीरो ने उत्तर दिया।

'दानिश मंजिल में आप कैदी से मिल सकते हैं'

'गुड !'

इमरान बोला।

'यह बहुत अच्छा हुआ ?'

और उसकी आंखें चमकने लगी।

अब मेरे लिए क्या आज्ञा है सर ?'

ब्लैक जीरो ने पूछा।

'आधीनों को हैन्डिल करते रहो।'

इमरान ने उत्तर दिया।

फिर उसने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

रिसीवर हुक से लटकाकर वह बूथ से बाहर निकल गया।'

जबड़े अब फिर च्युगम कुचलने में लगे हुए थे।

फिर कुछ मिनट बाद उसे खाली टैक्सी मिल गई।

पिछली सीट पर बैठकर उसने ड्राईवर को पता बताया और सीटपर पीठ टिकाली।

और फिर ठीक दस मिन्ट बाद वह दानिश मंजिल में मौजूद था।

कैदी उसे देखकर खड़ा हो गया।

उसके चेहरे पर घबराहट के गहरे चिन्ह थे। और उसकी आंखों से भय झांक रहा था।

इमरान को देखकर उसने पूछा।

'यह कौनसी जगह है तुम मुझे यहां क्यों उठा लाए हो ?'

'यहां तुम्हारी नसबन्दी की जाएगी प्यारे हमारा देश भूका नहीं है परन्तु आदान प्रदान अधिकाधिक करने के लिए वह शक्कर से लेकर चावल और गेहूं तक बाहरी मंडियों में भेज देता है परिणामस्वरुप आर्थिक स्थिति बड़ी गम्भीर है जनता भूखी मर रही है जो इस समय है उन्ही के पेट नहीं भरे जा सकते अतः बाद में आने वालों को रोटी कहां से मिलेगी।

इमरान ने पूरा भाषण सा दे दिया।

'पता नहीं तुम क्या कह रहे हो ?'

'समझने की कोशिश करो प्यारे।'

इमरान फिर शुरु हो गया।

'आर्थिक और सामाजिक उन्नति हमने की हो या न की हो परन्तु वैज्ञानिक दौड़ में हम अवश्य कुछ न कुछ आगे बढ़ चुके है और इसका सबूत यह है कि मैडिकल साईन्स ने वह उपाय खोज निकाला है जिससे जनसंख्या के बढ़ने को बड़ी सरलता से रोका जा सकता है जब कोई सर कार पेट भरने के लिए दो रोटियां नहीं दे सकती तो वही सब कुछ करती हैं—समझे आप या नहीं—।'

इमरान उसे आंख मार कर मुस्कराने लगा।

और कैदी वह आंखे फाड़े बस इमरान को ही देखे जा रहा था।

जाहिर है उसके देवताओ ने भी कभी इस टाईप का आदमी कहीं नहीं देखा होगा।

वह भर्राई हुई आवाज में बोला।

'मैं तुम्हारे भाषण का एक शब्द भी नहीं समझ सका कहीं तुम पागल तो नहीं हो।'

'हात तेरे की कन्फयूशन ने शायद ठीक ही कहा है कि हर पागल दूसरे आदमी को भी पागल समझता है इसके अतिरिक्त कुछ और भी कहा था

ठहरो मुझे याद करने दो ।'

इमरान खामोश होकर अपना ललाट रगड़ने लगा ।

अन्दाज ऐसा ही था मानों कोई खास बात याद करने की कोशिश कर रहा हो ।

अचानक उसकी आँखें चमकने लगीं ।

फिर वह प्रसन्न होता हुआ बोला ।

'आ गया याद कन्फ्यूशन ने कहा था कि आदमी को सूली पर चढ़कर भी सच ही बोलना चाहिए इसलिए मुझे बताओ तुम सच बोलने को तैयार हो या मैं सचमुच तुम्हारी नसबन्दी की तैयारी शुरु कर दूं ।'

कैदी केवल थूक निगलकर रह गया ।

अब वह इतना मूर्ख भी नहीं था कि इमरान के शब्दों का मतलब न समझ पाता कुछ क्षणों के बाद वह बोला ।

'तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो ।'

'मैं तुमसे नसबन्दी के लाभ और हानि नहीं पूछूंगा तुम तो बस इतना बतादो कि तुम्हें सत्य बोलने पर मजबूर करने के लिए कितनी ठोकरों और घूंसों की आवश्यकता होगी ।'

इमरान पांव से ठोकर और हाथ से घूंसे का इशारा करता हुआ बोला ।

उसका स्वर बड़ा ही भयानक हो गया था ।

और उसके चेहरे पर गम्भीरता ने अपना डेरा डाल लिया था । उसके होंठों पर बड़ी ही भयानक मुस्कान फैली हुई थी ।

कैदी प्रभावित हुए बिना न रह सका ।

उसके चेहरे पर घबराहट के चिन्ह स्पष्ट रूप से नजर आ रहे थे ।

फिर वह संभलते हुए बोला ।

'तत तुम्हारा सम्बन्ध पुलिस से है ?'

'यहीं समझलो—'

इमरान आंख दबाकर मुस्कराया।

'वैसे मेरा सम्बन्ध यदि शुबरातन की अम्मा से भी हो तो भी तुम्हें झूट बोलने की कोशिश नहीं करना चाहिये—'

कैदी उसे बस घूरने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर रहा था।

'हां भई मेरी बात का उत्तर दो इमरान ने कहा।

'मै अधिक देर खामोशी देखने का अभ्यस्त नहीं हूं।'

कैदी अब भी खामोश था।

कुछ देर खामोशी रही।

फिर इमरान ने उठते हुए एक घूंसा जड़ दिया। घूंसे के साथ जबड़े पर ठोकर भी काम कर गई थी—।

फिर निरन्तर घूंसो और ठोकरों की वर्षा शुरु हो गई।

फिर कैदी की जुबान खुलवाने में उसे कठिनाईयां तो अवश्य हुई थी किन्तु ऐसा भी नहीं था कि इमरान उकता गया हो या उसे बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ा हो।

एक दर्जन शक्तिशाली ठोकरों और डेढ़ दर्जन घूंसो से ही काम चल गया था।

कैदी के होठों से बहने वाला खून पोछता हुआ वह कमरे से बाहर निकल गया।

फिर कुछ ही देर बाद वह फोन पर सफदर के नम्बर डायल कर रहा था।

दूसरी ओर से काल रिसीव होने पर उसने कहा।

'एक्स्टू तुम इसी समय दानिश मंजिल की ओर रवाना हो जाओ वहां इमरान तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।'

'राईट सर—'

रिसीवर से सफदर की आवाज उभरी—'यह कहने की तो कम से कम आवश्यकता ही नहीं कि वहां पहुंचकर उसी के कहने पर काम करोगे

इमरान ने माउथ पीस में कहा।

'मैं जानता हूं सर।'

दूसरी ओर से सफदर की आवाज आई। फिर इमरान ने पूछा।

'तनवीर का अब क्या हाल है।'

'जूलिया की दी सूचना के अनुसार अब पहले से ठीक है—'

दूसरी ओर से बताया गया।

'बांए टांग पर प्लास्टर चढ़ा हुआ है।'

फिर इमरान ने कुछ कहे बिना ही सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

रिसीवर क्रेडल पर रखकर उसने मुंह में च्युंगम का पीस डाला—और उसे कुचलते हुये सफदर की प्रतीक्षा करने लगा।

फिर उसे अधिक देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। सफदर जल्दी ही पहुंच गया था।

● ● ●

ब्रिगेडियर सिद्दीकी सलवाना को विस्मित निगाहों से देख रहा था।

कुछ क्षणोपरांत उसने कहा।

'मुझे आश्चर्य हैं कि कहीं तुममें शैतानी आत्मा तो प्रविष्ट नहीं हो गई है।'

'इस विचार का कारण।

सलवाना मुस्कराई।

'कारण···?'

सिद्दीकी बोला।

'क्या कोई दूसरी स्त्री इतनी चालाकी और सफलता के साथ इतनी खतरनाक संघ चला सकती है।'

'गलत समझे'

सलवाना मुस्कराई।

'संघ को मैं अकेले नही चला रही बल्कि उसने बड़े गर्व से कहा।

'मैं तो उसकी एक छोटी सी सदस्य हूं अन्यथा असली चलाने वाले तो दूसरे व सैंकड़ों है।'

'हुम।'

ब्रिगेडियर सिद्दीकी ने हुंकारा भरा।

'तो इसका मतलब है कि तुम उनकी लीडर हो।'

यह भी गलत है।'

सलवाना फिर मुस्कराई।

लीडर कोई और है।

और फिर उसने कहा।

हां आप मुझे उसका दाहिना हाथ समझ सकते है।'

इतने खतरनाक अपराधी का दाहिना हाथ बनना भी हर एक के बसका रोग नहीं है।'

ब्रिगेडियर सिददीकी ने कहा।

फिर जरा रुक कर उसने पूछा।

'क्या तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे संघ की सर्गमियों की सूचना यदि सरकार को मिल गई तो तुम्हारा और तुम्हारे संघ का क्या परिणाम होगा।'

'संघ हर हालत में अपने उद्देश्य प्राप्त करके रहेगी डियर—'

सलवाना ने कहा।

'यदि आज मैं या कुछ दूसरे जिम्मेदार व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए तो उन्हें खत्म किया जा सकता हैं—'

और फिर उसने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

'हाँ ठीक है उन्हें खत्म किया जा सकता है परन्तु संघ उनकी मौतके बाद भी जीवित रहेगा मौजूदा सरकार का तख्ता अब न सही कुछ दिनों बाद अवश्य उलट कर रहेगा।'

'तुम्हें मौजूद सरकार से क्या दुश्मनी है ?'

ब्रिगेडियर सिद्दकी ने कहा।

'मुझे हर उस सरकार से दुश्मनी है जो अत्याचार के बल पर फलती फूलती है—'

सलवाना ने बड़े घृणित स्वर में कहा।

'जालिम और अत्याचारी से ससांर में कोई प्रेम नहीं कर सकता।

और फिर उसने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

'और मौजुद सरकार जालिम भी है और अत्याचार करने वाली भी

'और मैं तुमसे बहस नहीं करूगा।'

सिददीकी ने कहा।

कर ही नहीं सकते—।'

सलवाना बोली।

'बहस सदा विभिन्न समस्याओं और विचारो पर होती है—और मैं जानती हूँ कि मौजूदा सरकार से तुम भी सन्तुष्ट नहीं हो—'

और फिर वह बोली।

कोई भी सन्तुष्ट नहीं है—सिवाए उन स्वार्थी और आत्मा बेचने वालों के जिन्हें सरकार से विशेष सुविधाएं प्राप्त हैं।'

'खत्म करो—'

ब्रिगेडियर सिद्दीकी ने उकताए स्वर में कहा—

'मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता !'

'इसलिए कि इस दौर में सच बोलने से बड़ा अपराध है—'

सलवाना के होंठो पर कटु मुस्कान नृत्य करने लगी—वह बोली—

'लोग अपने घरों में बैठकर श्रोल फोल बक सकते हैं—परन्तु बाहर निकलकर आवाज उठाने का साहस किसी में नहीं है—'

और फिर वह सिद्दीकी की ओर ध्यान से देखते हुए बोली—

'और तुम भी इसी लिए डरते हो—जानते हो यदि तुम्हारे विचारों की हवा जरा भी सरकार को लग गई—तो गद्दारी के जुर्म में खुले मैदान में गोली मार दी जाएगी !'

'ओह फोह—!'

सिद्दीकी अब बुरी तरह झल्ला गया था ।

'क्या तुम कोई और बातें नहीं कर सकती'

'कर सकती हूं—!'

वह बोली ।

'बताओ—क्या तुम संघ का साथ देने को तैयार हो ?'

हर प्रश्न सलवाना ने उसकी आंखों में देखते हुए किये था !

'यदि मैं इन्कार कर दूं तो ?'

सिददीकी ने कहा ।

'तो—तो—'

सलवाना ने एक व्यगांत्मक मुस्कान के साथ कहा ।

'तो ससार की कोई शक्ति तुम्हें कोर्ट मार्शल से नहीं बचा सकती !'

और फिर वह बोली—

'इसके बाद क्या होगा—यह तुम स्वयं सोच सकते हो !'

'मैं समझा नहीं !'

पिछली रात तुम मेरे साथ कहां गए थे—?'

'परन्तु—?'

'इससे पहले दो बार और भी तुम मेरे साथ—वहां जा चुके हो—'

और फिर वह मुस्कराते हुए बोली—

'और आज भी शायद इसी इरादे से यहाँ आने का कष्ट किया है–'

उसकी मुस्कान एक गहरा व्यंग लिए हुए थी।

खैर—'

सिद्दीकी ने कन्धे उचकाए।

'कुछ भी हो परन्तु मैं तुम्हारे लिए इतना बड़ा मूल्य नहीं चुका सकूगां!'

'मूल्य तो तुम्हारे देवताओं को भी चुकाना पड़ेगा डियर—'

उसने बड़े ही कटु स्वर में कहा—

'सलवाना किसी भिकारन का नाम नहीं है। सलवाना भूखी नंगी भी नहीं है—जिसे दो रोटियां खिलाकर तुम अपनी मन मानी करने में सफल हो जाओ—'

और फिर वह बोली—

'सुनो सिद्दीकी—हर चीज की अपनी अलग कीमत होती है!'

तुम्हारी कीमत इस तरह अदा नहीं की जा सकती—'

सिद्दीकी ने कहा—

और फिर उसे धमकी देते हुए बोला—

'हां यह हो सकता है कि पुलिस पहले तुम्हारे हाथों में लोहे के कंगन डाले—और फिर इस इमारत पर छापा मारदे—!'

'निरे मूर्ख हो!'

सलवाना बड़े ही घृणित स्वर में कहा—

'शायद तुम यह समझते हो कि इस तरह मुझे प्रभावित करने में सफल हो जाओगे !'

'क्या मतलब ?'

सिद्दीकी ने कहा ।

'तुम इसे मजाक समझ रही हो ?'

'नहीं—!'

सलवाना मुस्कराई ।

'मैं जानती हूं कि तुम ऐसा कर सकते हो, परन्तु मुझे विश्वास है कि तुम इतनी बड़ी मूर्खता का सबूत देकर स्वयं को बेकार में फंसवाना पसंद नहीं करोगे—समझे—'

'मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा ?'

सिद्दीकी ने उलझे हुए स्वर में कहा—

'मतलब···?'

वह मुस्कराई—।

उस ओर देखो—उधर—उस टाईम पीस की ओर—जो मेंटिल पीस पर रखा है—क्या तुम उसकी हकीकत से परिचित हो—'

वह मुस्कराई—

'यह टाईम पीस—क्या हकीकत रखता है, मेरा विचार है तुम इस को नहीं समझ सके—!'

सलवाना ने सामने रखे टाईम पीस की ओर इशारा करते हुए सिद्दीकी को बताया ।

'क्या मतलब ?'

सिद्दीकी की भुएं सुकड गई !

चेहरे पर आश्चर्य के चिन्ह साफ नजर आ रहे थे !

सलवाना उसके आश्चर्य पर हसने लगी।

फिर कुछ देर बाद उसने कहा।

'क्या तुमने कभी सोचा है कि वह ठीक टाईम देने वाली एक अच्छी घड़ी के अलावा एक सुन्दर आटोमेटिक केमरा भी हो सकता है—'

और फिर वह मुस्कराते हुए बोली—

'यह तुम्हारी हर हरकत नोट कर रहा है!'

'नहीं—'

सिद्दीकी एक दम उछल पड़ा।

'ऐसा नहीं हो सकता!'

सलवाना मुस्कराई।

और फिर मेज की दराज खोलकर एक बड़े साईज का लिफाफा निकाल कर उसके सामने डाल दिया—।

फिर एक कटु और व्यगांत्मक मुस्कान के साथ बोली!

'इसमें तुम्हारे वह कारनामे तस्वीरों के रूप में सुरक्षित हैं—जिन्हें तुम युद्ध के मैदान में कर चुके हो—'

और फिर वह मुस्कराते हुए बोली—

'तुम्हारे आफीसर इन्हें देखकर अवश्य प्रसन्न होंगे—!'

और फिर सिद्दीकी को लिफाफा खोलते देखकर जल्दी से बोली—

'नहीं—मैं तुम्हें इस जगह उलटने की आज्ञा नहीं—दूंगी यहां से जाने के बाद देखना—!'

और सिद्दीकी सन्नाटे में आ गया था।

कुछ देर वह यूंही खामोश खामोश सा रहा।

फिर उसकी आंखों में क्रोध और घृणा की मिली जुली परछाईयां लहराने लगीं—।

वह कभी लिफाफे को देख रहा था और कभी सलवाना को—।

फिर सलवाना को घूरते हुए उसने कहा।

'अब कितना अच्छा हो—यदि मैं अपने पिस्तोल का चैम्बर तुम्हारी छाती पर खाली कर दूं—'

'तुम ऐसा कर सकते हो !'

सलवाना ने कहा।

'परन्तु सलवाना के मरजाने से संघ तो खतम नहीं हो जाएगा—'

और फिर वह व्यगांत्मक स्वर में बोली—

'ब्रिगेडियर ! यदि सम्मान के साथ जीवित रहना चाहते हो तो तुम्हारे देवताओं को भी इसके लिए काम करना पड़ेगा !'

'तुम्हारा संघ !'

सिद्दीकी ने दांत पीसते हुए कहा—

'क्या इन तस्वीरों की मौजूदगी में भी मेरे दिल में उसके लिए कोई मूल्य रह गया है—'

और फिर वह बड़े घृणित स्वर बोला—

'क्या संसार का कोई भी शरीफ और सज्जन पुरुष किसी शैतानी संघ का सहायक बन सकता है'

'हूं—'

सलवाना ने एक हल्की सी हंसी के साथ व्यगांत्मक स्वर में कहा।

'इस शहर के सैकड़ो शरीफ और सज्जन पुरुष संघ से सम्बन्धित हैं—क्या तुम विश्वास करोगे कि सेना और पुलिस के एक दर्जन जिम्मेदार व्यक्तियों के अतिरिक्त सरकार अनेक बलिष्ठ अधिकारी संघ में सम्मिलित हो चुके हैं'

सलवाना बराबर मुस्करा रही थी।

और ब्रिगेडियर सिद्दीकी के लिए यह बात भी काफी चौंका देने वाली थी !

फिर सलवाना बोली।

'चाहो—तो मैं तुम्हें उन लोगों से मिलवा भी सकती हूं !'

'तुमने उन सबको इसी तरह अपने शतानी जाल में फांसा होगा !'

सिददीकी ने कहा।

'इसे छोड़ो !'

सलवाना ने बताया।

'अब तो सब संघ के दोस्त और वफादार हैं'

'हुम ?'

सिददीकी ने हुकांरा भरा।

'मेरा परामर्श मानों सिददीकी'

सलवाना ने सिददोकी को समझाते हुए कहा।

'तुम सिपाही हो—तुम्हारे अधिकार भी असीमित हैं—अपने अन्दर एक जरा सा साहस पैदा करो—और इस सरकार का तख्ता उलट डालो—यह उस सरकार का—जिसके अन्तर्गत जनता उनके अत्याचारों की चक्की में पिसी जा रही है मानव और मानवजाति पर यह तुम्हारा बहुत बड़ा उपकार होगा और वह तुम्हें सदा याद रखेगी और इतिहास में तुम्हारा नाम सदा जगमगाता रहेगा !'

'तुम मुझे मूर्ख बना रही हो !'

सिददीकी मुस्कराया।

'मैं तुम्हें मर्द बना रही हूं…'

सलवाना ने कहा।

'बहादुर बनो—और बहादुरों की तरह अत्याचार करने वाली इस दीवार से टकरा जाओ—जिसके निर्माण में भूखी नंगी जनता का खून है—और जिस की बुनियाद इन्सानी हड्डियों पर रखी गई है !'

और फिर वह उत्साहित स्वर में बोली।

'बहादुर मौत से नहीं डरते—हर इन्सान का यह कर्तव्य है कि

अत्याचारों का डट कर मुकाबला करे—'

और फिर वह बोली।

'और फिर तुम तो जिम्मेदार आफीसर भी हो और शक्ति शाली भी !'

सलवाना के स्वर में भावनाएं जाग पड़ी थीं।

आवेश के कारण उसका चेहरा तमतमा रहा था।

और आंखों में विचित्र सी चमक थी।

और सिद्दीकी के चेहरे पर उलझन के चिन्ह फैल गए थे !

सलवाना ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसकी आंखों में देखते हुए कहा।

'ईमानदारी से बताओ—'

वह बोली।

'बिल्कुल सच सच—क्या तुम मौजूदा सरकार की नीतियों से सहमत हो ?'

'इसे छोड़ो। मैं राजनैतिज्ञ हूँ—सिपाही नहीं—'

सिद्दीकी ने कहा।

'जिसकी नजर में केवल देश की रक्षा होती है—और कुछ नहीं।'

'गलत तुम केवल स्वार्थी हो—'

सलवाना बोली—

'सिपाही इसलिए नहीं हो सकते कि सिपाही सदा ही अत्याचारों के विरुद्द लड़ता है—।'

और फिर वह बड़े ही व्यग्तात्मक स्वर में बोली।

'तुम युद्ध के नाम पर इन्सानी खून से होली तो खेल सकते हो परन्तु इन्सानियत और उसकी भलाई के लिए कुछ नहीं कर सकते—।'

'परन्तु—मेरा कर्तव्य।'

'तुम्हारा कर्त्तव्य यही नहीं है कि देश के बाह्य शत्रुओं से युद्ध करते रहो—'

सलवाना उसे घूरते हुए बोली ।

'एक बहादुर सिपाही के नाते तुम्हारा यह भी कर्तव्य है कि अपनी पवित्र धरती पर उन नृशसो के कदम न जमने दो—जो जनता के सबसे बड़े शत्रु हैं ।'

फिर जरा रुक कर उसने कहा ।

'जनता-सरकार से घृणा करती है परन्तु वह उससे भयभीत भी है उनमें इतना साहस नहीं है कि वह उसके विरुद्ध आवाज उठा सके—'

और फिर वह अपनी बात पर जोर देते हुए बोली ।

'आवाज उठाना तो बड़ी बात है—वह एक शब्द मुंह से नहीं निकाल सकते ऐसे समय में पूरे देश की निगाहें अपनी सेना की ओर लगी हुई हैं'

और फिर वह बोली ।

'क्या इस बात पर तुम्हारी आत्मा तुम्हें बुरा नहीं कहेगी—कहेगी—यदि तुम इसी तरह उनकी आशाओ का खून करते रहे ।'

'मगर—'

सिद्दीकी ने कहा—

'मैं अकेला क्या कर सकूंगा ।'

'तुम अकेले नही हो ।'

सलवाना ने बड़े विश्वास के साथ कहा—

'पूरा ब्रिगेडियर तुम्हारे साथ है पूरा देश पूरी जनता तुम्हारा साथ देगी—और करोड़ो दुखी दिलों की शुभ कामनाए तुम्हारे साथ रहेगी—'

और फिर उसने सिद्दीकी की आँखों में झांकते हुए कहा ।

'सभी तुम्हारी सहायता के लिए प्रयत्न शील है—फिर तुम्हारे बहुत से प्राचीन संघ के दोस्त है—'

और फिर उसने उसे समझाते हुए कहा—

'और इसके अतिरिक्त पुलिस और गृह विभाग के अनेक आफीसर भी हमारा साथ देंगे—इस के अलावा जल व थल सेना के कुछ आफीसर भी हमारे साथ है एक इशारा होगा और इन्कलाब का झंडा सरकारी भवन पर लहरा दिया जाएगा।'

'फिर तुम्हें प्रतीक्षा किसकी है।'

सिद्दीकी ने पूछा।

'प्रतीक्षा मुझे नहीं—'

सलवाना ने उत्तर दिया।

'संघ के नेता को है—वह प्रतीक्षा कर रहा है उस समय की जब सेना का एक बड़ा भाग युद्ध क्षेत्र में दुश्मनों के मुकाबले में खड़ा होगा—और उसी समय हम अपने साथियों की सहायता से इन्कलाब ले आऐंगे।'

'ओह—।'

सिद्दीकी के होंठ घृणा के कारण सिकुड़ते चले गए—

'बहुत चालाक हो तुम लोग।'

'हर संघ की सलामती और भलाई का आधार उसके दिमागों पर होता है—'

सलवाना ने गर्वित स्वर में कहा।

'और हमारे पास अच्छे दिमागों की कमी नहीं है।'

'हुम।'

सिद्दीकी बोला—

'तुमने तस्वीर के दूसरे रुख पर भी ध्यान दिया।'

'मैं समझी नहीं।'

'उस समय जब सेना का एक बड़ा भाग देश के शत्रुओं के मुकाबले में खड़ा होगा—'

सिद्दीकी ने कहा।

'तो इस इन्कलाब से युद्ध की स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा—ऐसे गम्भीर अवसर पर इन्कलाब का समाचार सुनकर हमारे सिपाहियों का घबराना स्वभाविक ही होगा—और…और…फिर दुश्मन बड़ी आसानी से हमें पराजित नहीं कर देगा।'

'ऐसा शायद कभी नहीं होगा—'

सलवाना ने बड़े विश्वास के साथ कहा।

'किन्तु…?'

ब्रिगेडियर सिद्दीकी ने कहना चाहा।

'संघ मूर्खों की किसी भीड़ का नाम नहीं होता—'

सलवाना ने उसकी बात काटी।

'हम समस्त बातों का परीक्षण कर चुके हैं—यह ठीक है कि इन्कलाब उस समय से पहले या उसके बाद भी लाया जा सकता है किन्तु इस तरह दोनो पार्टियों में बहुत बड़ी मुठ भेड़ की सम्भावना है—'

वह कहती रही।

'मुफ्त में अंगणित मानव हत्याऐ हो जाएगी और हम अपने उद्‌देश्य की प्राप्ति के लिये इन्सानी खून की एक बूंद भी धरती पर गिराना नहीं चाहते—'

सलवाना ने बात खत्म करते हुए एक लम्बी सांस ली—

उसके खामोश होते ही सिद्दीकी बोला।

'परन्तु वह समय भी तो उचित नहीं है।'

'वही समय सबसे अधिक उचित है—'

सलवाना ने हाथ उठाकर कहा।

'ठहरो मैं समझाती हूं—'

और फिर वह बोली।

'इन्कलाब आएगा—और अवश्य आएगा—परन्तु बड़ी ही खामोशी से

साथ जनता के अतिरिक्त सेना को भी इसकी हवा नहीं लग सकेगी। युद्ध क्षेत्र में राजधानी से हैडक्वार्टर बराबर आदेश जारी करता रहेगा—'

सलवाना कहती रही।

'और हमारे बहादुर जवान बराबर दुश्मनों पर मौत बनकर झपटते रहेंगे—'

'ओह—'

सिद्दीकी ने कहा।

'किन्तु इतनी राजदारी कैसे सम्भव है।'

'असम्भव भी नहीं है—'

सलवाना ने कहा—

'बस जरा सावधानी से काम लेना पड़ेगा वैसे तुम्हारी सूचना के लिये बता दूं कि जी० एच० कीव० के अनेक जिम्मेदार आफीसर हमारे साथ है।'

और फिर वह बोली—

'और जो नहीं है—वह या तो साथ हो जाऐंगे—या उन्हें बेबस कर दिया जाएगा—'

'माई गुडनेस—'

सिद्दीकी ने कहा—

'तुम औरत हो या कोई एटम बम—'

'औरत ही हूं—'

सलवाना मुस्कराई।

फिर कुछ क्षणोपरांत उसने मुस्कराते हुए कहा।

'मैं अभी तुम्हें मजबूर करना नहीं चाहती अच्छी तरह सोचलो उसके बाद मुझे सूचित कर देना—'

और फिर उसने कहा।

'और अब इस फैसले में अधिक देर नहीं होनी चाहिये।'

'और यदि वह फैसला तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध हुआ—'

सिद्दीकी ने एक विषैली मुस्कान के साथ कहा।

'तो क्या होगा—?'

'तो तुम स्वयं सोच सकते हो—।'

सलवाना बोली—

'कि उसका क्या परिणाम होगा।'

और फिर उसने धमकी देने वाले अन्दाज में कहा—

'बौस ने यदि बात आगे न बढ़ाना चाही तो भी तुम्हें जीवित नहीं छोड़ा जाएगा—तुम्हारी मौत तो अवश्य है।'

'धमकी दे रही हो।'

सिद्दीकी ने कहा।

'नहीं—'

वह बोली—

'समझा रही हूं तुम्हें—और एक बात और सुनलो कान—खोलकर सुनलो

वह सिद्दीकी की ओर देखते हुए बोली—

'कि संघ तुम्हारी आशा से कहीं अधिक मजबूत और शक्ति शाली है—उसके सैकड़ो हाथ है तुम्हें पता भी नहीं चलेगा और—और—'

वह व्यगांतमक स्वर में बोली—

'और कोई मजबूत हाथ किसी अंधेरे में से निकल कर तुम्हारी गर्दन दबोच लेगा—'

और फिर वह समझाने वाले स्वर में बोली।

'वैसे मुझे आशा नहीं है कि ऐसा हो भी सकता है'

'इस आशा का कारण—!'

सिददीकी ने पूछा।

'मैं आदमी को पढ़ना—और समझना जानती हूं'

सलवाना ने अपने विचारों का प्रदर्शन किया।

'ओह!'

अनायास ही सिद्दीकी के मुंह से निकला !

फिर वह अपनी जगह से उठ गया।

और जाने के लिये सलवाना से आज्ञा चाही।

और फिर आज्ञा पाकर वह वहाँ से निकल गया।

उसे वहाँ से गए हुए अभी कुछ ही देर हुई थी कि गूंगे और बहरे गोम्स ने जेम्स का विजीटिंग कार्ड सलवाना के सामने पेश कर दिया।

'उसे यहीं भेज दो।'

उसने गोम्स को इशारों में समझाया।

'और हाँ कौफी भी तैयार करके ले आना गोम्स सर हिलाकर चला गया।

और सलवाना सिग्रेट सुलगा कर कुर्सी की पुश्त से टिक गई।

फिर कुछ ही देर बाद उसे जेम्स की सूरत नजर आई पाऊल उसके साथ था।

अन्दर आकर वह सलवाना के इशारे पर कुर्सियों पर बैठ गए।

जेम्स ने मुस्कराते हुए कहा—

'आज शायद ब्रिगेडियर सिद्दीकी तुम से मुलाकात करने के लिए आने वाला था।'

'अभी कुछ देर पहले वह यहीं था—'

सलवाना ने कहा।

'मुश्किल से कुछ ही मिन्ट हुए है उसे गए हुए—।'

'ओह—'

वह बोला—

'क्या रहा ?'

'तुम्हारा क्या विचार है ?'

सलवाना ने मुस्कराते हुए कहा—

'मेरा विचार…!'

जेम्स ने एक लम्बी सांस ली।

'तुम किसी चालाक मकड़ी की तरह सुन्दर परन्तु खतरनाक जाला बुनने में निपुण हो'''इसलिये इस बात की आशा कम ही की जा सकती है—'

वह हंसते हुऐ बोला—

'कि शिकार फंसने के बाद जान बचाकर निकल जाने में सफल हो सका होगा !'

'हूं—'

सलवाना ने हुंकारा भरा।

'तुम्हारा विचार गलत नहीं है जेम्स !'

'गुड'''

वह हंसता हुआ बोला।

'तो इसका मतलब है कि होगया शिकार बेचारा—ब्रिगेडियर सिद्दीकी''''

'यूं कहो'''कि संघ और भी शक्तिशाली हो गया।'

'मैं समझता हूँ—'

वह बोला।

वास्तव में यह तुमने एक बड़ा कार्य किया है ?'

'धन्यवाद।'

सलवाना हल्का सा मुस्कराई।

'मैं केवल अपना कर्तव्य पूरा कर रही हूं'''यह काम तो मेरा कर्तव्य था।

फिर वह पाऊल को सम्बोधित करके बोली।

'तुम्हारी ओर से क्या खबर है—मेरा विचार है कि अबतक तो काफी आगे बढ़ चुके होगे और सफलता भी पाली होगी'''बताओ कहां तक पहुंचे हो।'

'नहीं—मुझे दुख है !'

उसने उत्तर दिया।

'मेरा मस्तिष्क निरन्तर उलझनों का शिकार है !'

'तुम मूर्ख हो।'

उसने कहा।

'बेकार के सन्देह में पड़कर समय नष्ट कर रहे हो।'

'मैं क्या करूं।'

उसने कहा।

आरथर्ड की मौत ने मुझे बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया है।'

'भूल जाओ उसे ?'

सलवाना ने समझाने वाले अन्दाज में कहा।

'स्वयं को बेकार में परेशान करने से क्या फायदा ?'

'वह संघ का वफादार साथी और मेरा दोस्त था ?'

'ठीक है···संघ को उसकी मौत से एक बहुत बड़ी हानि हुई है··· संघ को उसकी मौत का दुख है···!'

सलवाना ने उसे फिर समझाया।

'परन्तु शरीर का कोई अंग जब जीवन के लिए खतरा बन जाए तो उसे शरीर से अलग कर देना ही ठीक है···और वह भी संघ के शरीर पर एक ऐसा ही खतरनाक अंग बनकर रह गया था।'

पाऊल खामोश रहा।

परन्तु उसकी आंखें बता रही थी कि वह उस की बातों से सन्तुष्ट नही हो सका है।

फिर गोम्स काफी लेकर आ गया।

जेम्स की आंखों में उसे देखकर उकताहट की परछाईयां लहराने लगीं···।

पता नहीं क्यों उसे वह गूंगा और बहरा नौकर पसंद नहीं था।

सलवाना मुस्कराते हुऐ काफी बनाने लगी।

दो प्यालियां बनाकर उसने जेम्स और पाऊल के सामने रखदीं... और अब तीसरी प्याली वह अपने लिए बना रही थी।

फिर वह सभी ही कौफी की हल्की हल्की चुस्कियां लेने लगे !

★ ★ ★

फैयाज पर इन दिनो रहमान साहब की ओर से बराबर झाड़ पड़ रही थी।

परेशान हो कर उसकी समझ में यह ही आया था कि इमरान से सहायता की प्रार्थना की जाए—परन्तु—अब इसको क्या कहा जा सकता था कि जब भी वह इमरान के फ्लैट पर पहुचां था तो बस उसके नौकर सुलेमान से ही मुलाकात हो सकी थी।

इमरान पता नहीं कहां गायब था।

सुलेमान भी कुछ पता नहीं बता सका था।

फैयाज के बार बार पूछने पर उसने बस इतना ही कहा था—

'साहब कई दिनो से लापता हैं—खुदा जाने किस चक्कर में उलझे हुए है—या परिवार नियोजन वालों के हत्थे चढ़ गये है—कुछ नहीं कहा जा सकता।'

यह उत्तर सुनकर भी फैयाज ने इमरान के फ्लैट के चक्कर लगाए थे—।

और परिणाम — वह हर बार शून्य से आगे नहीं बढ़ सका था।

इस बार भी वह एक बार फिर वहां जाने का प्रोग्राम बना रहा था

—परन्तु फिर उसने कुछ सोचकर फोन करना ही अधिक उचित समझा !

सिग्रेट एशट्रे में मसलकर उसने फोन का रिसीवर उठाया—और इमरान के नम्बर डायल करने लगा !

दिमाग में खटका इसी बात का था कि पता नहीं मुलाकात हो या न हो— ।

दूसरी ओर देर तक घन्टी बजती रही—फिर फैयाज ने रिसीवर उठाने की आवाज सुनी ।

और फिर उसकी आंखें खुशी से चमकने लगीं ।

दूसरी ओर से इमरान ही बोल रहा था ।

' मैं फैयाज हूं'

वह जल्दी से बोला

'कहाँ गायब थे इतने दिनों से !'

'परिवार नियोजन वालों के भय से मैं पुलिस से छिपा बैठा था... तुम भी किसी जगह छिप जाओ तो अच्छा है...सुना है यार लोग क्वांरों को भी नहीं छोड रहे है... तुम तो विवाहित भी हो... हत्थे चढ़ गए... तो नसबन्दी किये बिना नहीं छोड़ेंगे'

'मजाक खत्म करो ...'

फैयाज ने कहा

'मुझे तुम से बहुत जरुरी काम है'

' बख्शो बाबा...'

इमरान बोला

' तुम वैसे ही सरकारी बिच्छु हो... धोखा देकर ले गए तो बाप बनने की इच्छा मरते दम तक भी पूरी नहीं होगी'

और फिर वह जल्दी से बोला ।

'हो सकता है कि पति बनना भी भाग्य से मिट जाए'

' बेकार की बाते नहीं... तुम घर पर ही ठहरना। मैं पन्द्रह मिनट में पहुंच रहा हूं'

फिर दूसरी ओर से भयभीत स्वर में' अरे बाप रे' का नारा लगाया ही था कि फयाज ने रिसीवर क्रेडल पर रखकर सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

इमरान ने भी रिसीवर रख दिया।

और सोफे पर गिर गया।

फिर वह किसी गहरी सोच में डूब गया '

थोड़ी सी देर बाद फैयाज की मोटर साईकिल सड़क पर फर्राटे भर रही थी...।

वह बहुत जल्दी में था--मानो वह सोच रहा था कि इमरान घर पर नही ठहरेगा— बल्कि फरार होने में सफल हों जायगा।

फिर इमरान उसे अपने कमरे में ही मिला था।

उसे देखकर वह बोला।

'अब में तुमसे भयभीत नहीं हूं—'

क्या मतलब ?'

फैयाज चौंका।

'पतलून के नीचे तीन तीन अन्डर बीयर पहन रखे हैं—हां...'

उसने लजाते हुए बताया !

'ला हौल...'

फैयाज झेंप गया—।

फिर जरा रुक कर दोबारा बोला।

'तुम कभी कोई ढंग की बात क्यों नहीं करते ?'

'हांए !'

इमरान ने आश्चर्य से पल्के झपकाईं।

'ऐ फैयाज''' यह ढंग की बात नहीं है तो फिर कौन सी ढंग की बात होगी—

'खत्म करो।'

फैयाज ने हाथ उठाकर कहा।

'इस समय मैं एक बहुत आवश्यक काम से आया हूं।'

'आये हो तो मेरे सर आंखों पर बैठो।'

इमरान ने बड़े ही भोलेपन से कहा।

'खुदा ने जो कुछ रूखी सूखी दे रखी है पहले तुम और सुलेमान खा लेना।'

और फिर वह बोला।

'और इसके बाद बच रही तो मैं भी खा लूंगा?'

'गम्भीर हो जाओ।,

फैयाज ने मुंह बनाते हुए कहा।

'मैं इस समय तुम्हारी कोई भी बकवास सुनने के मूंड में नहीं हूं।'

इमरान उसको केवल घूर रहा था।

फिर उसी समय किसी काम से सुलेमान अन्दर आ गया!

परन्तु उसके कूल्हों का फैलाव''

फैयाज के होठों पर अनायास ही एक मुस्कान उभर आयी थी।

वह इमरान को सम्बोधित करते हुए बोला।

'क्या तुमने इसे भी अन्डर वियर पहना रखे हैं—बिल्कुल जैसे तुमने पहन रखे हैं—!'

'मजबूरी है यार''''

इमरान ने भोली सूरत बनाकर कहा।

'जवान पट्ठा है बेचारा छोटी मोटी आवश्कताओं के लिए दिन में दस चक्कर बाहर के लगाने पड़ते हैं किसी ने पकड़ लिया तो कुछ देर

तो कम से कम अपना बचाव कर ही सकेगा।'

तुम दोनों ही एक नम्बर सनकी हो।'

फैयाज झल्ला सा गया !

'यह बुद्धि तीव्र होने की निशानी है प्यारे।'

इमरान ने आंखे निकाली ?

फिर जरा रूक कर उसने चिंतित स्वर में इमरान ने दोबारा कहा।

'मैं तो जोजफ के लिए भी सख्त परेशान हूँ वह सच मुच गबरू जवान है।'

और फिर वह बड़ी ही अपनाईयत से बोला।

'खुदा बुरी नजर से बचाए पूरे शहर में शायद कोई निकले उस जैसे डील डौल का मालिक ?'

और फैयाज उसे घूरने लगा।

हां सुलेमान बड़े जोर से खिलखिलाकर हंस पड़ा था !

फैयाज ने उसकी ओर मुड़कर बड़ी ही क्रोधित नजरों से घूरा।

और वह मुंह दबाकर हंसता हुआ कमरे से निकल गया !

इमरान के चेहरे पर चिन्ता के फैले हुए लक्षण साफ नजर आ रहे थे।

वह कुछ सोच रहा था।

फैयाज ने कहा।

'अब उचित यही होगा कि तुम गम्भीर हो जाओ—मेरे पास बेकार बातों में पड़ने का समय नहीं है'

'आँ।'

इमरान मानों चौंक पड़ा हो।

'क्या कहा तुमने ?'

'बड़ी सख्त परेशानी में फंस गया हूं यार।

फैयाज बोला ।

'कुछ करो ।'

और फिर गिड़गिड़ाने वाले स्वर में बोला ।

'ऐसे अवसरों पर तुम पहले भी मेरी सहायता करते रहे हो !'

खुदा को याद करो ।'

इमरान चहका ।

'फिर भी परेशानी दूर न हो तो मेरा जिम्मा'

'इमरान—प्लीज ।'

फैयाज फिर बोला ।

ईश्वर के लिए गम्भीर हो जाओ'''यार मुझे एक बहुत जरूरी बात करनी है'

'हाय ।'

इमरान ने आंखे निकाली ।

'खुदा को याद करना तुम गम्भीरता नहीं समझते—अमे तुम भंग तो नहीं पी गए कहीं ।'

'मेरा मतलब यह नहीं था ।

फैयाज ने जल्दी से कहा ।

'फिर क्या मतलब था तुम्हारा ?'

इमरान ने पलके झपकाई !

'कुछ करो—कुछ करो मेरे दोस्त—'

फैयाज घिघयाया !

'विदेश मन्त्री का कातिल यदि कुछ दिन और कानून की पकड़ में ना आ सका तो रहमान साहब मुझे इस संसार में जीने नहीं देंगे'

'यह और अच्छी बात होगी'''

इमरान अब पूरी तरह मूड में आता जा रहा था'''।

'बहुत अच्छी बात होगी—छुटकारा मिल जाएगा । तुम्हें तो खुश

होना चाहिए'''जितनी जल्दी मरोगे'''उतनी जल्दी पापों का बोझ उठा कर कब्र में जाओगे'''सच पूछो''तो जीवन एक मुसीबत ही है'''संसार में तो पेट के कारण''' मरने के बाद पापों के कारण—हाय—कभी कभी तो मन चाहता है कि वही गीत गाने लगूं—वही जो जलपरी में अशोक कुमार ने गाया था—'

और फिर ऐसा ही लगा मानों इमरान अब गीत का स्टार्ट लेने ही वाला हो—।

अचानक फैयाज ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया।

'प्लीज—!'

वह बोला।

'मैं यहां फिल्मी गीत सुनने नहीं आया !'

'ओह—मैं भूल गया था !'

इमरान को मानों कुछ याद आ गया हो।

'इस समय तो तुम किसी परेशानी में हो और मुझसे सहायता मांग न यहां आये हो—'

और फिर वह कुछ सोचते हुए बोला।

'मगर – मगर क्या हमारे फिल्मी कवियों ने ऐसे समय के लिए कोई गीत नहीं लिखा है'

'पता नहीं—'

फैयाज अपनी झल्लाहट को दबाते हुए बोला।

'मुझे फिल्मी कवियों—या गीतों से कोई दिलचस्पी नहीं है—'

'तब फिर—बड़े अभागे व्यक्ति हो तुम'

इमरान ने कहा।

'यह तुम्हारी सूरत पर मेरी बातें सुनकर बारह क्यों बज रहे हैं'

'दिमाग खराब है तुम्हारा—'

फैयाज अब अपनी झल्लाहट को रोक नहीं सका था।

'चलो यही सही—'

इमरान को शायद फैयाज पर दया आ गई थी।

'फिर भी क्या तुम यहां तक दौड़े आने का कारण बता सकते हो!'

फैयाज के चेहरे पर झल्लाहट के चिन्ह उभर आए थे—'

परन्तु फिर वह जल्दी अपनी झल्लाहट को छिपाकर मुस्कराने लगा फिर बोला।

'मुझे विदेश मन्त्री के कातिल की तलाश है'

'तो मैं इस सम्बन्ध में क्या कर सकता हूं'

इमरान का स्वर रूखा सा था!

'मेरी सहायता करो...'

फैयाज ने कहा।

वैसे तुम्हारी दिलचस्पी के लिए मेरे पास एक दिलचस्प केस और भी है—उससे भी निपटना चाहो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी!'

'मैंने आजकल यह धन्धा छोड़ रखा है। सोच रहा हूं किसी फुट पाथ पर आलू छोलों की दुकान लगालूं—'

वह एक ठंडी सांस लेकर बोला।

'इस तरह कम से कम खर्च तो चलता ही रहेगा'

और फिर वह बड़े ही दुख भरे स्वर में बोला।

'हाय—काश इन्सान के साथ संसार में पेट न आया होता—'

'पक्के शैतान हो!'

फैयाज मुस्कराया।

'खैर—बताओ—कितने में काम चल जाएगा!'

'जितने जेब में हो ऋण समझ कर दे जाओ—'

इमरान ने कहा।

'दर असल आजकल कुछ चक्कर ही पड़ा हुआ है—खैर कभी तो

भाग्य पलटेगा'''उस समय तुम्हारा एक एक पैसा चुका दूंगा !'

फैयाज कुछ नहीं बोला—।

जेब में हाथ डालकर पर्स निकाला ।

और सौ सौ के तीन नोट निकाल कर इमरान के सामने डालदिए !

'गुड—!'

इमरान चहका ।

'तुम वास्तव में बड़े अच्छे दोस्त हो—खैर अब बताओ—तुम्हारी क्या सेवा करूं !'

'विदेश मन्त्री के कत्ल के अन्वेषण में मेरा हाथ बटाओ—'

'बटाऊंगा !'

इमरान ने बड़े प्रेम से कहा ।

'मेरा वायदा है कि अपराधी बहुत जल्द ही कानून के हवाले कर दिए जाएंगे'

'ओह—'

फैयाज चौंका ।

'क्या तुम पहले से ही इस चक्कर में उलझे हुए हो !'

'परिवार नियोजन वालों से छिपता फिर रहा था—मगर'''

इमरान उसकी आंखों में देखता हुआ बोला ।

'तुम किसी दूसरे केस की बात भी तो कर रहे थे !'

'हां—!'

फैयाज मुस्कराया ।

'धरती पर कुछ दिनों से आकाश का बेटा उतर आया है— !'

उसने अर्थ पूर्ण मुस्कान के साथ बताया !

'ओह !'

इमरान ने एक लम्बी सांस ली !

फिर मुंह बनाकर बोला ।

'मैं तो समझा था तुम कोई सनसनी पूर्ण खबर सुनाओगे मगर...'

और फिर वह हाथ हिलाता हुआ बोला ।

'अमे...इससे कहीं अच्छा होता कि तुम मुर्गी के अन्डे से हाथी के निकलने की खबर सुनाते कम से कम तालियां तो बजा ही देता ?'

'गम्भीरता से सुनो प्यारे ।'

फ़ैयाज़ ने कहा ।

'आकाश का बेटा ?'

'टालो यार ।'

इमरान ने हाथ उठाते हुए कहा ।

'मैं उसे किसी बहरूपिये से अधिक महत्व देने को तैयार नहीं हूं उसका धर्म भी बकवास है—लोग जानते भी हैं कि वह उन्हें मूर्ख बना रहा है परन्तु खुश भी हैं कि इस बहाने से उन्हें रंग रलियां मनाने का शानदार अवसर मिल जाता है ।'

'तुम जानते हो ?'

फ़ैयाज के मुंह से विस्मित स्वर में निकला ।

'अच्छी तरह जानता हूं...'

इमरान बोला ।

'यह भी मालूम है कि उस इमारत के नीचे तहखानों का जाल बिछा हुआ है—हर आदमी वहां तक नहीं पहुंच सकता—केवल वही लोग उन धार्मिक सभा में सम्मिलित हो सकते हैं...जिनपर मनोहर दास और उसके साथियों को भरोसा हो ।'

'ओह तुम तो बहुत कुछ जानते हो ?'

'आकाश के बेटे का धर्म बिल्कुल बकवास है लोगों को मूर्ख बनाने के लिए ढोंग रचाया जा रहा है।'

इमरान कहता रहा।

'यूं समझो कि मनोहर दास और उसके भक्त दोनों एक दूसरे को मूर्ख बना रहे हैं भक्त इस लिए मग्न है कि इस धर्म में उसे हर तरह की आजादी है और आकाश का बेटा इस लिए यह ढोंग रचाए हुए है कि इस तरह उसका काम चल रहा है।'

'मैं समझा नहीं।'

'समझ जाओगे।'

इमरान ने कहा।

'कन्फ्यूशस ने कहा है कि हर बात अपने समय पर ही समझ में आती है—'

इमरान ने फैयाज को मानों समझाया हो।

'इस लिए माई डियर फैयाज'''प्रतीक्षा करो और देखो मदारी के थैले से क्या बाहर आता है ?'

'परन्तु।'

फैयाज ने कुछ कहना चाहा।

'बस आज शनिवार है।'

इमरान हाथ उठाकर बोला।

'रात तक प्रतीक्षा करलो सभा तो होगी ही आज तुम भी अपनी पूरी फोर्स लेकर पहुंच जाना।'

और फिर वह खुश होते हुए बोला।

'आकाश के बेटे के साथ ही आकाश के बेटे के भक्तों के भी हथकड़ियां न लगें—तो फिर आनन्द ही क्या आएगा।'

'तुम्हारी इच्छा।'

फैयाज उठते हुए बोला।

'मैं प्रतीक्षा करूंगा'''किन्तु इससे अधिक महत्वपूर्ण केस विदेश मन्त्री के कातिल की गिरफ्तारी का है।'

'वह भी निपट जाएगा।'

इमरान ने लापरवाही से कहा।

और मुंह में च्युगंम का पीस डालकर जुगाली करने वाले अन्दाज में जबड़े चलाने लगा।

●●●

आकाश के बेटे के भक्तों की सभा चल रही थी! उनका वह पवित्र और धार्मिक गान समाप्त हो चुका था!

और अब गहन अन्धकार में धार्मिक तकाजे पूरे किये जा रहे थे!

अन्धकार में सिसकियों की आवाजें उभर उभर कर डूब रही थीं!

फिर हाल की रोशनियां वापिस आगई।'

सभी लोग एक दम चौंक कर खड़े हो गए।'

और फिर आकाश के पवित्र बेटे के हाथों को चुम्बन लेने के लिए जाने लगे!

और फिर'''

हाल का वह दरवाजा खुल गया जो उसे क्लाक रूम से मिलाता था।

सभी लोग उसी की ओर आकर्षित हो गए।

लाल और काली नकाबे उस दरवाजे की ओर बढ़ने लगी थीं।

ताकि शरीर पर लदे हुए उन सफेद वस्त्रों को उतार कर सभ्य

मनुष्यों के से वस्त्र पहन लें ।

किन्तु इससे पहले कि कोई हाल से बाहर निकलता—अचानक अनेक व्यक्ति अन्दर आ घुसे ।

और फिर उन लोगों को संभलने का समय भी नहीं मिल सका था !

अन्दर घुसने वालों के हाथों में टामी गनें थीं—और उनकी नालों के रुख हाल में मौजूद लोगों की ही ओर थे ।

वह सीधे उन्हीं की ओर आकर रुक गए ।

यह सब सन्नाटे में आ गए !

अनेक स्त्रियां तो घबराहट से कपकपाते हुए फर्श पर भी लुढ़क गई थीं ।

मानों उनकी आंखों में कोई बहुत बड़ा और बहुत अधिक डरावना दृश्य देख लिया हो''''

सहसा सी गहरी खामोशी में कैप्टिन फैयाज की भारी आवाज गूंजी

'खबरदार'''यदि किसी ने फरार होने की कोशिश की'''तो भून कर रख दिया जाएगा'

'इसके बाद इमरान ने भी बहुत गूंजदार आवाज में उन्हें वहीं रुकने की वार्निग दी थी ।

और फिर अचानक ही उसने चौंक कर कहा था ।

'आह'''यहां तो सभी एक ही यूनिफार्म में नजर आ रहे हैं'''वाह '''वाह'

इमरान मानों उनके वस्त्र देखकर बहुत प्रसन्न था—मालूम होता था मानों वह अभी बस तालियां बजाना शुरू कर देगा ।

सभी लोग इमरान का मुहं देख रहे थे । जिस पर मूर्खताएं की रेखाएं इस समय कुछ अधिक ही हो गई थीं ।

सब लोग अपने अपने हाथ उठा लें'

फैयाज की कड़कदार आवाज सुनाई दी।

'इस इमारत में चारों ओर सशस्त्र पुलिस फैल चुकी है'''किसी ने कोई मूर्खता की तो वह स्वयं जिम्मेदार होगा।

लोगों ने हाथ ऊंचे कर दिए।

इमरान ने कहकहा लगाया।

'वैरी गुड!'

इमरान ने प्रसन्नता का प्रदर्शन करते हुए कहा।

'यार फैयाज'''कितना आनन्द आए यदि नन्गों की यह पलटन इसी तरह मार्च करती हुई इमारत से बाहर निकले!'

'नन'''नन—इइ'''ईश्वर के लिए ऐसा न किया जाए—!'

नकाबपोशों में से अचानक कई आवाजें सुनाई दीं।

फैयाज के होठों पर बड़ी विचित्र सी मुस्कान फैली हुई थी।

सहसा ही उसने आकाश के बेटे को सम्बोधित करते हुए कहा।

'मुझे तुम्हारी इस इमारत में कहीं भी कोई ऐसी बात नजर नहीं आ रही जिससे पता चले कि यह धार्मिक स्थान है!'

'तुम बहुत बड़े मूर्ख भी हो आफीसर—'

उसने बड़े ही शान्त स्वर में कहा।

'और तुमने मूर्खता भी बहुत बड़ी की है'''

और फिर उसने व्यंगात्मक स्वर में कहा।

'मेरा मजाक उड़ाने का अधिकार तुम्हें इस लिए नहीं कि तुम मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकते'

'अच्छा!'

फैयाज ने कहा।

'मेरा ख्याल है कि अब तुम अपने मन से सब कुछ निकाल दो मनो हर दास!'

'उचित होगा कि अब तुम इस रेवड़ को यहां से हांक कर ले जाओ' मनोहर दास ने कहा।

'मैं तुम्हारे बस का रोग नहीं हूं'

'ठीक ही कहते हैं आप...'

इमरान ने जरा झुककर बड़े ही श्रद्धा भाव से कहा

फिर फैयाज से बोला।

'मेरा परामर्श मानों तो नंगो की इस सेना को काफी समझो...आगे बढ़ने की कोशिश की तो जलकर भस्म हो जाओगे'

'चिन्ता मत करो'

फैयाज बोला—।

'तुम उस राख को...'

उसका वाक्य अधूरा ही रह गया।

बस अचानक ही चबूतरे में एक चौकोर स्थान पैदा हो गया था।

फिर इससे पहले कि फैयाज मनोहर दास को टामी गन का निशाना बनाता—वह खाली स्थान में गायब हो चुका था।

साथ ही इमरान ने भी चबूतरे की ओर छलांग लगादी !

किन्तु वह खाली स्थान तो कभी का बंद हो चुका था।

फैयाज केवल नाच कर रह गया था !

काफी देर की कोशिश के बाद भी वह उस स्थान को नहीं पा सके थे।

फैयाज ने मनोहर दास की पीठ पर खड़ी रहने वाली लड़कियों को भी डराया धमकाया था।

परन्तु उनके देवता भी नहीं जानते थे कि आकाश का बेटा किस ओर गायब हो गया था !

'चलो बेटे ?'

इमरान ने मुंह में च्युगंम का पीस डालकर कहा।

'आकाश के बेटे को धरती खा गई। अब तो इस नंगो की सेना को ही ले चलो'

'किन्तु यार—'

फैयाज हकला कर रह गया।

'अब चलो भी...'

इमरान उसकी बात काटते हुए बोला।

'मैं कोशिश करूंगा—कि वह नन्गों का सरदार भी धरती के पेट से बाहर निकल आए—'

'अच्छा चलो...!'

फैयाज ने एक लम्बी सांस ली।

फिर कुछ ही देर बाद वह हाल में गिरफ्तार होने वालों को पुलिस के ट्रकों में सवार करा रहा था!

इस काम से निवृत होकर जब उसने इमरान की तलाश में निगाहें दौड़ाई—तो उसका दूर दूर तक पता नहीं था—।

फिर कुछ देर बाद मालूम हुआ कि मोटर साईकल भी गायब है!

और वह झुंझला कर रह गया।

★ ★ ★

कमरे में बौस और सलवाना के अतिरिक्त जेम्स और पाऊल भी थे।

उन सब की निगाहें पाऊल पर लगी हुई थीं।

और वह सर झुकाए किसी गहरी सोच में लीन खामोश खामोश

सा था।

कुछ देर तक कमरे में खामोशी रही।

फिर बौस ने ही शांति को भंग किया था।

'तुम्हारे विचार तो ऐसे हैं कि तुम्हे इसी समय गोली मार देनी चाहिए—'

बौस गुर्राया

'परन्तु मैं ऐसा नहीं करूगां—परन्तु तुम्हें भी हमारी एक शर्त माननी पड़ेगी'

बौस ने कहा

,और वह यह कि तुम्हारे मन में संघ से गद्दारी तक का विचार भी न आने पाए'

,मैं संघ का दुश्मन बिलकुल नही हूं बौस—'

पाऊल बोला—

'मैं कायर भी नही हूं– जो बेकार में भयभीत हो जाऊं'''परन्तु'''
—गलती इन्सान से होती है—और यदि गलती इन्सान से हो जाए तो उसकी गलती माफ भी की जा सकती है'

पाऊल ने कहा'''

'मैं आप से सहमत हूं'

'बौस बोला'''

'ठीक है'''अब मैं कभी न सुनूं कि तुम बिना वजह के झगड़ों में पड़ कर अपना समय नष्ट कर रहे हो'''

उसने कडे स्वर में कहा'''

'ठीक है'''अब हम अपने अपने कारनामे अन्जाम देंगे'''

पाऊल ने विश्वास दिलाया।

'और आपको किसी प्रकार की शिकायत का अवसर नहीं देंगे'

फिर बौस ने तेजी से जेम्स और सलवाना की ओर मुड़ कर कहा

'तुम लोगों के लिए मेरे पास एक शुभ समाचार है—और तुम लोग उसे सुनकर अवश्य खुश होगे '

'और···'

सलवाना ने आश्चर्य से कहा —

'वह क्या बौस '

'विदेश मन्त्री के स्थान पर दूसरे मन्त्री के लिए सरकार ने एक ऐसे व्यक्ति को चुना है जो संघ के वफादारों में से है—'

और फिर उसने बड़े ही प्रसन्न स्वर में बताया ।

'मेरा विचार है कि एक दो दिन में ही सरकारी तौर पर घोषणा भी कर दी जाएगी'

'ओह—'

सलवाना मुस्कराती हुई बोली

'यह एक अच्छा समाचार है'

जेम्स भी खुश नजर आने लगा था ।

और पाऊल के चेहरे पर भी सन्तोष के साय लहराने लगे थे ।

'यह वास्तव में शुभ समाचार है बौस···'

उसने कहा···

'अब पड़ोसी देशों से सम्बन्ध अच्छे नही हो सकेंगे ... दोनों सेनाओं को मैदान में उतरना पड़ेगा । और हम जल्दी ही सफल हो जायेंगे'

'हां—यह बात अच्छी है—'

सलवाना ने सन्तोष का प्रदर्शन किया ।

'और फिर राष्ट्रपति भी युद्ध चाहते हैं—'

और फिर बहुत देर तक इसी विषय पर बातें होती रहीं— ।

अचानक दरवाजे के दूसरी ओर से तेज कदमों की आवाजें सुनकर

वह चौंक पडे !

फिर कुछ ही क्षणों बाद दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनाई दी !

'कौन है— ?'

बौस ने कठोर स्वर में पूछा।

'मनोहर···बौस दरवाजा खोलिए'

बाहर से उत्तर दिया गया।

स्वर में घबराहट थी—।

वह सभी उस आवाज को सुनकर उछल पड़े।

फिर बौस के इशारे पर जेम्स ने अपनी जगह से उठकर दरवाजा खोल दिया।

मनोहर अन्दर आ गया !

उसके चेहरे पर घबराहट फैली हुई थी।

और आंखों से भय झलक रहा था !

'क्या बात है—'

बौस ने पूछा।

'तुम इतनी जल्दी यहां कैसे नजर आ रहे हो—इतना बोखलाए हुए क्यों हो ?'

'बहुत बुरी खबर है बौस !'

मनोहर ने घबराए हुए स्वर में कहा।

'कैप्टिन फैयाज अपने साथियों के साथ छापा मारने में सफल हो गया है'

'कैप्टिन फैयाज ने छापा मार दिया है ?'

'हां बौस !'

'नहीं वह झूट है !'

बौस से चीखते हुए कहा।

'कैप्टिन फैयाज वह हरकत कभी नहीं कर सकता !'

'यह हकीकत है बौस—'

मनोहर दास बोला।

'मैं चोर रास्ते के द्वारा से अपने प्राण बचाकर भागने में सफल हो सका हूं'

और फिर उसने कहा।

'हाल में मौजूद सभी लोग अब तक गिरफ्तार हो चुके होंगे'

'ओह—यह बुरा हुआ—बहुत बुरा—'

जेम्स बड़बड़ाया।

'सारा संघ नष्ट हो रहा है'

'परन्तु प्रश्न यह है—'

सलवाना ने मनोहर दास से कहा—

'कि फैयाज तहखानों के खुफिया रास्तों से किस तरह परिचित हुआ

'मैं क्या कह सकता हूं—'

उसने कुछ सोचते हुए कहा।

'सम्भव है कि उस सभा में सम्मिलित होने वालो में से किसी ने गद्दारी की हो।'

'खैर—।'

बौस ने एक खाली कुर्सी की ओर इशारा किया।

'तुम बैठो !'

मनोहर दास बैठ गया।

चेहरे पर परेशानी और घबराहट अभी भी थी कुछ क्षणोंपरांत उस ने कहा।

'कैप्टिन फैयाज की इस हरकत से संघ को यद्यपि कोई भारी हानि

नहीं पहुंच सकेगी किन्तु अपने इस कार्य के लिए वह बुरी तरह पछताएगा

'छोड़िए बौस—'

सलवाना ने कहा—

'संघ अब इतना शक्तिशाली हो गया है कि अब हम इन बेकार के चक्करों में उलझे हुए भी आगे बढ़ सकते हैं।'

'हुम !'

बौस हुंकारा भरकर कुछ सोचने लगा।

कमरे में गहरी खामोशी छा गई।

फिर खामोशी को दरवाजे पर होने वाली खटखट ने ही भंग किया !

'कौन है?'

बौस ने चौंक कर पूछा।

उत्तर में दरवाजे के दूसरी ओर से ऐसी ही आवाजे सुनाई दी मानो कोई गूंगा घबराए हुए अन्दाज में कुछ कहने की कोशिश कर रहा है।

'ओह—'

सलवाना चौक कर बोली—

'यह तो गोम्स की आवाज है।'

'क्या—?'

जेम्स उछल पड़ा।

'वह यहां तक कैसे आ पहुंचा ?'

'ठहरो मैं देखती हूं'

फिर बौस की आज्ञा की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने अपनी जगह से उठकर दरवाजे का बोल्ट गिरा दिया—।

बाहर खड़ा हुआ आदमी अन्दर आ गया।

किन्तु उसकी सूरत देखते ही वह लोग उछल पड़े।

सहसा ही बौस ने अपना पिस्तोल निकाल लिया।

जेम्स ने भी अपना पिस्तोल निकालने में देर नहीं की थी।

फिर कमरे में बोस की गुर्राहट सुनाई दी।

'कौन हो तुम — ?'

'मिर्जा जट—!'

इमरान ने दांत निकालते हुए उत्तर दिया।

'एक सड़ी सी पिक्चर भी इस नाम की बन चुकी है परन्तु तुम मेरा उससे कोई सम्बन्ध सिद्ध नहीं कर सकोगे।'

'क्या मतलब—?'

बोस कुछ न समझता हुआ बोला—

सलवाना और जेम्स भी मूर्खताओ के इस पिटारे को बड़ी विचित्र सी निगाहों से देख रहे थे।

सहसा ही मनोहर दास ने कहा।

'यह कैप्टिन फैयाज का साथी है बोस—उसके साथ ही यह भी वहां मौजूद था।'

'ओह—'

बोस के होंठ सिकुड़ गए।

फिर इमरान को फाड़खाने वाली निगाहों से घूरते हुए उसने कहा।

'तुम चालाक हो दोस्त—'

उसने ठंडे स्वर में कहा—

'किन्तु यह कमरा तुम्हारी कब्र भी बन सकती है।'

'अरे रहने दो!'

इमरान भय पूर्ण हंसी हंसता हुआ बोला—

'क्यों डराते हो!'

'हाथ ऊपर उठाओ।'

जेम्स ने आदेश दिया।

'जल्दी करो ।'

और इमरान ने डरते डरते कहा—

'उठाता हूं परन्तु तुम मुझे परिवार नियोजन वालों के पास नहीं ले जाओगे ।'

'क्या मतलब ।'

उनके मुंह आश्चर्य से खुल गए ।

'डरता हूं बड़े भाई !'

इमरान घिघियाया ।

'अभी शादी नहीं हुई हैं ।'

'ओह—'

बौस के अतिरिक्त सलवाना जेम्स और पाऊल के होंठो पर भी मुस्कान खेलने लगी ।

इमरान ने फिर कहा ।

'देख लेना इन सबको पछताना पड़ेगा सबको पछताना पड़ेगा हां ।

'नहीं चलेगी ।'

बौस मुस्कराया ।

'मेरा दावा हैं कि तुम संसार के सब से अधिक खतरनाक आदमियों में से एक हो ।'

और फिर बौस ने जेम्स को सम्बोंधित करके कहा ।

'दरवाजा बंद कर दो मैं इसकी खबर लूंगा ।'

और जेम्स दरवाजे की ओर बढ़ गया ।

फिर वह इमरान के पास से गुजरा ही था कि उसकी टांग चल गई ।

और फिर जाहिर है कि जेम्स को फर्श देखना पड़ा होगा

और फिर अचानक ही दो फायर हुए थे ।

एक गोली बोखलाहट में जेम्स से चल गई थी ।

और दूसरा बौस ने किया था ।

मगर इमरान का भाग्य ही कुछ अच्छा था कि बच गया—।

फिर एक विचित्र बात हुई !

बौस ने दूसरे फायर के लिए पिस्तोल का ट्रेगर दबाया ही था कि पिस्तोल उसके हाथ से निकल गया ।

यह पाऊल था ।

पिस्तोल पर कब्जा करते ही उसने उसकी नाल का रूख बौस की खोपड़ी की ओर कर दिया ।

ओह—तुम गद्दार—'

बौस का चेहरा क्रोध से लाल हो गया ।

और आंखों से घृणा झाँकने लगी ।

दूसरी ओर इमरान जेम्स को लिटाकर उसकी खोपड़ी पर ठोकरे बरसा रहा था ।

फिर सलवाना का हाथ ब्लाउज की ओर बढ़ा ही था कि पाऊल ने उसे रोक दिया ।

'नही—तुम कोई मूर्खता नहीं करोगी'

उसने ठंडे स्वर में कहा

सलवाना उछल पड़ी ।

बौस भी चोंके बिना नहीं रहा था !

पहले तो वह यही समझा था कि पाऊल कायरता और गददारी दिखा रहा है—परन्तु उस ी बदली हुई आवाज—

कुछ क्षणों के लिए वह सन्नाटे में आ गया ।

फिर उसने किसी भेड़िए की तरह ही गुर्राते हुए पूछा था ।

'कौन हो तुम—?'

'हाथ ऊपर करो—'

पाऊल का स्वर बड़ा ही भयानक था।

'अन्यथा मैं गोली मार दूंगा।

और बौस ने हाथ ऊपर उठा दिए।

वैसे उसकी निगाहें अब भी पाऊल पर जमी हुई थी—और आखों से मानों आग निकल रही थी।

'तुम भी हाथ ऊपर उठाओ लड़की।'

वह सलवाना को घूरता हुआ बोला।

'मैं सुन्दर स्त्रियों पर दया करने का अभ्यस्त नहीं हूं'

'तुम कौन हो?'

सलवाना ने उसे घूरते हुए पूछा।

'अरे यह पाऊल नहीं है डार्लिंग—'

इमरान ने दोनों हाथ झाड़ते हुए बताया।

'यह तुम सबको पाऊल बनकर आऊल (owl) बना रहा है—आऊल हमारे यहाँ उल्लू को कहते हैं—बड़ा गरीब और समझदार जानवर होता है'

जेम्स उसके निकट ही पड़ा लम्बी लम्बी सांसे ले रहा था।

● ● ●

दूसरे दिन फैयाज दफ्तर जाने से पहले ही इमरान के फ्लैट पर जा धमका।

'अब मुझे बताओ—'

उसने इमरान से पूछा।

'कि यह सब क्या चक्कर है'

मगर इमरान ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह तो बस किसी बूढ़े उल्लू की तरह आंखें बन्द किये देर से ऊंघ रहा था।

फिर कुछ देर बाद उसने आंखें खोल दीं।

और भर्राई हुई आवाज में बोला।

'तुमने मुझसे कुछ कहा ?'

'हां—।'

फैयाज बोला।

'यह चक्कर मैं अभी तक पूरी तरह नहीं समझ सका हूं....'

'आच—छा—'

इमरान सम्हल कर बैठ गया।

फिर च्युगम का पीस मुंह में डालकर उसने कहा।

'मैं शुरू से समझाता हूं !

उसने बताना शुरू किया।

'यह सब दरअसल मौजूदा सरकार का तख्ता उलट कर देश पर स्वयं अधिकार करना चाहती थी। डाक्टर स्टोवार्ड संघ का नेता था—और जेम्स, पाऊल—आरथर और सलवाना के अतिरिक्त मनोहर दास उसके खास सहायक थे।

इसी इमारत के एक भाग में उसने आकाश के बेटे वाला धर्म का ढोंग रचा रखा था। स्वयं को आकाश का बेटा— और नए धर्म का निर्माता कहता था ''लोग जानते थे कि वह बकवास कर रहा है—परन्तु अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए वह उस पर पूरी तरह इमान ले आये थे।

इस तरह जहां उन्हें आजादी के साथ—रंग रलियां मनाने का समय और अवसर मिलता था—

वहां संघ को भी लाभ पहुंच रहा था।

आकाश का बेटा अपने भक्तों से लम्बी लम्बी रकमें ऐंठ रहा था। और वह रकमें या धन संघ की आर्थिक स्थिति को मजबूत बना रही थी

एक और लाभ इसके अतिरिक्त और भी था—और वह यह कि··· साधारण जनता के अतिरिक्त सरकार के अगणित अधिकारी भी उसका धर्म अपना चुके थे और उन्हे रूपये के साथ ही खुफिया सरकारी जानकारियां भी संघ को पहुंचानी पडती थी।

'ओह—:'

फैयाज ने कहा—

'शायद इसी लिए विदेश मन्त्री ने मुझे मनोहर दास से न उलझने का आदेश दिया था।

'यही बात होगी'

कुछ देर रूक कर इमरान ने फिर कहना शुरू किया !

'विदेश मन्त्री की प्राईवेट सैक्रेट्री इस संघ की सदस्य थी—उसने विदेश मन्त्री को मजबूर किया होगा—और वह तुम पर चढ़ दौड़े होंगे-'

फिर वह बोला।

'हां—तो बात संघ की हो रही थी—बड़े बड़े अधिकारियों के सहयोग ने उसे काफी शक्ति शाली बना दिया था—तुम सुनकर शायद आश्चर्य में पड़ जाओ—कि पुलिस और सेना के बहुत से अधिकारियों के अतिरिक्त बिग्रेडियर सिद्दीकी भी उन लोगों से जा मिला था।

दर असल सलवाना की बातों में बड़ा ही जादू है—वह बड़े ही भावुक स्वर में लोगों के सामने मौजूदा सरकार के अन्याय और अन्य कमजोरियों का जिक्र करती थी—वह उन्हें बताती कि मौजूदा सरकार संसार की सबसे जालिम सरकार है—जिसने जनता से जीवित रहने का अधिकार भी छीन लिया है।

लोग उसके भाषणों को सुनते—और उससे प्रभावित होकर संघ में सम्मिलित हो जाते—।

सिद्दीकी के साथ यही हुआ।

संयोग वश वह स्वयं भी मौजूदा सरकार को पसंद नहीं करता था—अतः बड़ी आसानी से सलवाना अपने ध्यय में सफल हो गई'

और फिर इमरान विदेश मन्त्री के कत्ल पर रोशनी डालने लगा।

फैयाज एक एक शब्द बड़े ध्यान से सुन रहा था—।

फिर इमरान के खामोश होने पर वह बोला।

'एक बात और रह गई—।'

उसने कहा।

'यह बताओ—कि तुम्हें संत्र के विषय में इतनी सारी जानकारियां किस तरह प्राप्त हुई—और किस तरह इतनी सरलता से तुम डाक्टर स्टीवार्ट तक जा पहुंचे'

'होटल में—विदेश मन्त्री पर जो असफल हमला हुआ था—उसके बाद ही मैं उनमें दिलचस्पी लेने लगा था'

इमरान ने बताया!

'कत्ल की रात को एक व्यक्ति नजर पड़ा और उसके कारण आरथर्ड नजरों में आ गया—फिर मैंने आरथर्ड पर नजर रखी—परन्तु डाक्टर स्टीवार्ट इस निगरानी से परिचित हो गया—और आरथर्ड कत्ल हो गया।

उसके कत्ल के बाद मैं फिर अन्धकार में हाथ पांव चलाने लगा!

परन्तु सलवाना उससे पहले ही मेरी नजरों में आ गई थी। अतः उचित यही मालूम हुआ कि आरथर्ड के बाद अब उसी पर नजर रखी जाए—और फैसले पर पहुंचकर—मैंने यह किया कि उसके गूंगे और बहरे नौकर को हटाकर स्वयं उस की जगह लेली!

और इस तरह सलवाना के निकट रहने का अवसर मिल गया।

एक एक करके उसके साथी भी सामने आते चले गए—और मैं बड़े आराम से उनकी बातें रिकार्ड करता रहा।

इस तरह मुझे संघ और उसके साथियों को समझने का अवसर मिला !

उधर मुझे मालूम हुआ कि पाऊल इन दिनों संघ से घृणा करने लगा है—और पुलिस से भी भयभीत है—अतः काम का आदमी वही मालूम हुआ !

'क्या मतलब ?'

फैयाज ने पूछा।

'उसे उसके शयनः गृह से उठवाकर मैंने अपने एक दोस्त को संघ में सम्मिलित करा दिया---और फिर आकाश के बेटे और उनके संघ के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ मालूम हो गया। तहखाने—और संघ के नेता के बारे में उसी ने मुझे सूचित किया था—'

'कौन था वह दोस्त ···?

फैयाज ने पूछा।

'यह बिजिनिस सीक्रेट है —'

इमरान बाईं आंख दबाकर बोला।

जाहिर है वह उसे सफदर के विषय में कैसे बता सकता था !

'ओह—'

फैयाज मुस्कराया।

'अब मुझसे भी राजदारी चलेगी'

'प्लीज सुनते रहो—'

इमरान बोला।

केवल एक बात और रह गई है—और वह यह कि विदेश मन्त्री को स्वयं आरथर्ड ने कत्ल किया था।

जिस आदमी का पीछा करते हुए मैं उस तक पहुंचा वह एक स्थानीय गुन्डा है चाहो तो उसका पता मुझसे लेकर उसे गिरफ्तार कर सकते हो !'

'अवश्य करूंगा ?'

फैयाज बोला।

'परन्तु एक बात बताओ—जब तुम उनके हैडक्वार्टर से परिचित हो गए थे तो अब तक कोई कदम क्यों नहीं उठाया था !'

'मुझे शनिवार की रात की प्रतीक्षा थी प्यारे—'

इमरान ने बताया।

'तुम स्वयं सोचो...यदि इससे पहले कोई कदम उठा बैठता तो वे नंगों की सेना किस तरह मार्च पास करती !'

'ओह...'

फैयाज के होंठ सिकुड़ गए।

फिर इमरान ने कहा।

अब तुम चलते फिरते नजर आओ सारी रात जागा हूं—अब मैं सोऊंगा—बड़े जोर की नींद आ रही है।'

फिर मुंह फाड़कर उसने एक जोर की जम्हाई ली—और सोफे पर पीठ टिका कर आंखें बन्द करली।

। समाप्त ।

भयानक दुनिया के आगामी अंक की रूप रेखा

लाल बक्स

- होटल पूषा के सामने पाई जाने वाली लाश धीरे २ गल रही थी ।
- अचानक एक लड़की की चीख दूर तक गूंजती चली गई और जब हमीद वहां पहुंचा तो डेजी की लाश उसकी प्रतीक्षक थी ।
- आत्म हत्या की घटनाओं में बढ़ोत्री हो रही थी आत्म हत्या करने वाली ज्यादा तर धनी और खूबसूरत स्त्रियां हुआ करती थी ।
- ग्रीन बर्ट—खुफिया विभाग जिसकी उंगलियों पर नाच रहा था ।
- समूचा खुफिया विभाग विनोद का दुश्मन हो गया था—क्या विनोद बेबस हो चुका था ।

जमील अन्जुम द्वारा लिखा ऐसा उपन्यास जो हर समय आप के मस्तिष्क में छाया रहेगा ।

मूल्य डेढ़……रुपया ।

प्रकाशक :

भयानक दुनिया, अशोक पब्लिकेशन

शोराब गेट, मेरठ ।